नई दिल्ली
शनिवार
23 मार्च, 2024
वर्षः 10, अंकः 200
पृष्ठः 08, मूल्य 2 रु0
E-mail
story@sadbhawna.today
sadbhavnatoday@gmail.com
web: www.sadbhawna.today

हिन्दी दैनिक समाचार पत्र

सद्भावना टुडे

आवाज़ अधिकार की

ममता बनर्जी ने केजरीवाल की गिरफ्तारी... पेज-08

DELHIN/2014/58158

दिल्ली और पंजाब के मुकाबले में नजरें पंत पर पेज-07

हिन्दी में प्रकाशित होने वाला सबसे लोकप्रिय दैनिक समाचार पत्र
'सद्भावना टुडे'
में विज्ञापन के लिए सम्पर्क करें :-
011-43678240
E-mail
story@sadbhawna.today
sadbhavnatoday@gmail.com
web: www.sadbhawna.today

अगले पांच साल भारत-भूटान संबंधों में नई ऊर्जा लेकर आएंगे: प्रधानमंत्री

मोदी ने भूटान के टेंड्रेलथांग फेस्टिवल ग्राउंड में सभा को संबोधित करते हुए कहा

थिम्पू,एजेंसी। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने शुक्रवार को कहा कि आने वाले पांच साल भारत-भूटान संबंधों में नई ऊर्जा लाएंगे। श्री मोदी ने भूटान के टेंड्रेलथांग फेस्टिवल ग्राउंड में सभा को संबोधित करते हुए कहा, आपके लक्ष्यों को पूरा करने के लिए भारत बीबी-ब्रांड भूटान और भूटान बिलीव के लिए आपके साथ खड़ा है। गौरतलब है कि प्रधानमंत्री मोदी भूटान की दो दिवसीय राजकीय यात्रा पर हैं। उन्होंने कहा, मैं आपको विश्वास दिलाता हूं कि आने वाले पांच साल हमारे संबंधों को नई ऊर्जा देंगे। हम कनेक्टिविटी, बुनियादी ढांचे, व्यापार और ऊर्जा क्षेत्रों में रास्ते बनाने के लिए काम करेंगे। प्रधानमंत्री ने कहा कि भारत-भूटान साझेदारी को जमीन और पानी तक सीमित नहीं हैं।

उन्होंने कहा, भूटान अब अपने अंतरिक्ष अभियानों में भारत का भागीदार है। भूटान के वैज्ञानिकों ने इसरो के सहयोग से उपग्रह लॉन्च किए हैं। उन्होंने कहा कि हम दूसरे की उपलब्धियाँ का जश्न मनाते हैं। श्री मोदी ने कहा, आज भारत दुनिया की पांचवीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था है, सबसे तेज गति से आगे बढ़ रहा है। आज की उपलब्धियों को आगे बढ़ाने के लिए हमने 25 साल के अमृतकाल का संकल्प लिया है।% उन्होंने कहा, %जल्द ही हम दुनिया की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनने जा रहे हैं। भूटान हमारी इस यात्रा में एक मजबूत भागीदार होगा। उन्होंने कहा कि भारत और भूटान के युवाओं की आकांक्षाएं और लक्ष्य एक समान हैं। उन्होंने कहा, भारत ने 2047 तक एक विकसित देश बनने का लक्ष्य रखा है, जबकि भूटान ने 2034 तक उच्च आय वाला देश बनने का लक्ष्य रखा है। श्री मोदी को भूटान के सर्वोच्च नागरिक पुरस्कार, ऑर्डर ऑफ द ड्रुक ग्यालपो से भी सम्मानित किया गया, जिससे वह यह प्रतिष्ठित मान्यता प्राप्त करने वाले पहले विदेशी नेता बन गए। यह पुरस्कार भारत-भूटान संबंधों के विकास में उनके उत्कृष्ट योगदान और भूटानी राष्ट्र और लोगों के लिए उनकी विशिष्ट सेवा की स्वीकृति में दिया गया है। पुरस्कार के लिए भूटान के प्रधानमंत्री का आभार व्यक्त करते हुए श्री मोदी ने कहा, आज एक भारतीय के रूप में मेरे जीवन का बहुत बड़ा दिन है। यह सम्मान मेरी उपलब्धि नहीं है, यह भारत और 140 करोड़ भारतीयों का सम्मान है।

मोदी भूटान के सर्वोच्च नागरिक सम्मान से सम्मानित

थिम्पू,एजेंसी। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को शुक्रवार को यहां भूटान के सर्वोच्च नागरिक सम्मान, दि ऑर्डर ऑफ दि द्रुक ग्यालपो से सम्मानित किया गया। भूटान की राजधानी थिम्पू के तेंद्रेलथांग में आयोजित एक सार्वजनिक समारोह में भूटान नरेश जिग्मे खेसर नामग्याल वांगचुक ने श्री मोदी को अपने देश के इस सर्वोच्च अलंकरण से सुशोभित किया जो जीवनकाल की उपलब्धियों के आधार पर प्रदान किया जाता है। श्री मोदी पहले विदेशी नेता हैं जिन्हें यह प्रतिष्ठित पुरस्कार दिया गया है। अलंकरण के उद्धरण में कहा गया है कि यह पुरस्कार श्री मोदी की व्यक्तिगत उपलब्धियों, नेतृत्व और भारत और भूटान के बीच मित्रता के बंधन को मजबूत करने में उनके योगदान को मान्यता देता है। यह उनके नेतृत्व में भारत के वैश्विक शक्ति के रूप में उदय का भी सम्मान करता है, और भारत के साथ भूटान के विशेष बंधन का उत्सव मनाता है। उद्धरण में आगे कहा गया है कि श्री मोदी के नेतृत्व ने भारत को परिवर्तन के पथ पर अग्रसर किया है, और भारत की नैतिक शक्ति और वैश्विक प्रभाव बढ़ा है। इस अवसर पर प्रधानमंत्री ने रेखांकित किया कि यह अलंकरण भारत के 1.4 अरब लोगों को दिया गया सम्मान है और दोनों देशों के बीच विशेष एवं अद्वितीय संबंधों का प्रमाण है। भूटान नरेश ने दिसंबर 2021 में थिम्पू के ताशीछोडज़ोंग में आयोजित भूटान के 114वें राष्ट्रीय दिवस समारोह के दौरान श्री मोदी को यह पुरस्कार प्रदान करने की घोषणा की थी। यह पुरस्कार भारत-भूटान मित्रता और उनके जन केंद्रित नेतृत्व को मजबूत करने में श्री मोदी के योगदान को मान्यता देता है।

हिरासत में पूछताछ पर ईडी, केजरीवाल ने विशेष अदालत में कई दलीलें पेश कीं

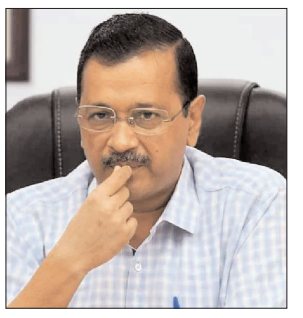

नई दिल्ली। मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल को दिल्ली की शराब नीति में कथित घोटाले से संबंधित धनशोधन एक मामले में शुक्रवार को केंद्रीय जांच एजेंसी प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) की छह दिनों की हिरासत में भेज दिया गया। राऊज एवेन्यू स्थित कावेरी बावेजा की विशेष अदालत ने श्री केजरीवाल को गिरफ्तार करने वाली ईडी की 10 दिनों की हिरासत की मांग वाली याचिका पर संबंधित पक्षों की दलीलें सुनने के बाद 28 मार्च तक पूछपूछताछ के लिए हिरासत में भेजने का आदेश पारित किया।

श्री केजरीवाल की ओर अदालत के समक्ष एक आवेदन दाखिल कर ईडी की हिरासत की मांग ठुकराने की गुहार लगाई गई। इससे पहले ईडी ने कड़ी सुरक्षा के बीच अधिवक्ताओं एवं अन्य लोगों से खचाखच भरी अदालत में श्री केजरीवाल को पेश किया। अदालत के समक्ष श्री केजरीवाल का पक्ष वरिष्ठ अधिवक्ता अभिषेक मनु सिंघवी, विक्रम चौधरी और रमेश गुप्ता पेश किया। वहीं, ईडी का पक्ष अतिरिक्त सॉलिसिटर जनरल एस वी राजू ने रखा। अदालत के समक्ष ईडी मुख्यमंत्री केजरीवाल की 10 दिनों की हिरासत की गुहार लगाते हुए उन्हें शराब नीति घोटाले का मुख्य साजिशकर्ता और सरगना बताया। विशेष अदालत में सुनवाई शुरू होने से पहले ईडी की चंगुल में फंसे दिल्ली के मुख्यमंत्री केजरीवाल ने अपनी गिरफ्तारी के खिलाफ उच्चतम न्यायालय के समक्ष गुरुवार को दायर अपनी रिट याचिका शुक्रवार को सुनवाई से पहले ही वापस ले ली थी। सुनवाई के दौरान ईडी ने इस मामले को गंभीर अपराध और श्री केजरीवाल को इसका सरगना बताया। ईडी की ओर से एएसजी राजू ने कहा कि श्री केजरीवाल ने साउथ ग्रुप (दक्षिण भारत मैं इस मामले से जुड़े लोग) से रिश्वत की मांग की थी। जांच एजेंसी ने यह भी आरोप लगाया कि आम आदमी पार्टी से जुड़े विभिन्न लोगों को भारी नकद राशि सौंपी गई। इसका इस्तेमाल गोवा विधानसभा चुनाव में किया गया। ईडी की ओर से दलील देते हुए आरोप लगाया गया कि दिल्ली की उत्पाद शुल्क घोटाला नीति इस तरह से बनाई गई थी कि यह रिश्वत लेने और रिश्वत देने वाले लोगों से वसूली करने में सक्षम होगी। ईडी की ओर से एएसजी राजू ने कहा, मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल इस मामले के मुख्य साजिशकर्ता हैं। वह सीधे तौर पर नीति निर्माण में शामिल हैं।

एक नजर

ओडिशा में भाजपा अकेले लड़ेगी लोस, विस चुनावः सामल

भुवनेश्वर,एजेंसी। भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) ओडिशा के प्रदेश अध्यक्ष मनमोहन सामल ने शुक्रवार को कहा कि उनकी पार्टी लोकसभा और विधानसभा चुनाव किसी के साथ न मिलकर अकेले लड़ेगी। श्री सामल ने आज राज्य में भाजपा और बीजू जनता दल (बीजद) के बीच चुनावी गठबंधन की अटकलों पर विराम लगा दिया। गौरतलब है कि करीब एक पखवाड़े से दोनों दलों के बीच लोकसभा और विधानसभा चुनाव में गठबंधन की अटकलें लग रही थीं। कई दिनों से भाजपा के शीर्ष केंद्रीय नेताओं के साथ दिल्ली में चल रही गहन चर्चा के बाद श्री सामल के बयान ने राज्य के लोगों के मन में व्याप्त असमंजस की स्थिति को साफ कर दिया है। उन्होंने कहा कि भाजपा ओडिशा में अकेले चुनाव लड़ेगी और प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में ओडिशा के सर्वांगीण विकास के लिए डबल इंजन की सरकार बनाने के उद्देश्य से सभी 21 लोकसभा और 147 विधानसभा सीटों पर अपने उम्मीदवार उतारेगी। श्री सामल ने कहा कि अन्य राज्यों ने भाजपा सरकार की डबल इंजन सरकार के कारण विभिन्न क्षेत्रों में महत्वपूर्ण प्रगति की है। उन्होंने कहा, 卐ओडिशा भाजपा भी राज्य में तेजी से विकास के लिए इसी तरह की डबल इंजन सरकार चाहती है। उन्होंने एक्स पर पोस्ट में कहा,卐मोदी सरकार की कई कल्याणकारी योजनाएं ओडिशा में जमीन तक नहीं पहुंच पा रही हैं, जिसके कारण ओडिशा के गरीब बहनों और भाइयों को उनका लाभ नहीं मिल रहा है।

विधानसभा का सत्र रद्द, अगली बैठक 27 मार्च को होगी

नई दिल्ली। पानी और सीवरेज से जुड़े मुद्दों पर शुक्रवार को होने वाली दिल्ली विधानसभा की बैठक को रद्द कर दिया गया है। विधानसभा सचिवालय की ओर से जारी एक बुलेटिन में कहा गया कि सदन की अगली बैठक 27 मार्च को होगी। इसमें कहा गया माननीय सदस्यों को सूचित किया जाता है कि माननीय अध्यक्ष ने निर्देश दिया है कि आज यानी 22 मार्च 2024 को होने वाली सदन की बैठक रद्द की जाती है। बुलेटिन में आगे कहा गया, राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली की विधानसभा में प्रक्रिया और कार्य संचालन के नियमों के नियम -17 (सदन का स्थगन और पुनः बुलाने की प्रक्रिया) के उप-नियम (एक) के अनुसरण में, माननीय अध्यक्ष ने निर्णय लिया है कि सदन की अगली बैठक 27 मार्च को सुबह 11:00 बजे होगी।

जांच एजेंसियों के दुरुपयोग को लेकर चुनाव आयोग पहुंचे विपक्षी दल

नई दिल्ली। लोकसभा चुनाव के दौरान जांच एजेंसियों के दुरुपयोग को लेकर कांग्रेस समेत विपक्षी दलों के एक प्रतिनिधिमंडल ने शुक्रवार को चुनाव आयोग से मुलाकात की और कहा कि इस पर चुनाव आयोग के हस्तक्षेप की मांग की। विपक्षी दलों ने मुलाकात के बाद दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल की गिरफ्तारी समेत जांच एजेंसियों के दुरुपयोग से जुड़े मामले चुनाव आयोग के समक्ष उठाए । प्रतिनिधिमंडल ने जांच एजेंसियों के दुरुपयोग को लेकर चुनाव आयोग से हस्तक्षेप करने और जांच एजेंसियों पर नियंत्रण रखने की मांग की।

मुलाकात के बाद कांग्रेस प्रवक्ता अभिषेक मनु सिंघवी ने कहा कि प्रतिनिधिमंडल ने चुनाव आयोग के साथ दिल्ली के मुख्यमंत्री की गिरफ्तारी की विस्तृत चर्चा की । प्रतिनिधिमंडल ने चुनाव आयोग के सामने इस बात को रखा है कि यह किसी व्यक्ति या किसी पार्टी के बारे में नहीं है बल्कि यह संविधान की मूल भावना से संबंधित है। श्री सिंघवी ने कहा कि जब चुनाव के लिए सभी राजनीतिक दलों को समान अवसर की जरूरत है, ऐसे समय में एजेंसियों का दुरुपयोग किया जा रहा है, तो इसका असर स्वतंत्र और निष्पक्ष चुनाव और लोकतंत्र पर पड़ेगा। श्री सिंघवी ने कहा कि प्रतिनिधिमंडल ने चुनाव आयोग को उनके उत्तरदायित्व की याद दिलाई है। उन्होंने कहा कि हैरत की बात है कि इन एजेंसियों की कार्रवाई सत्ता पक्ष पर नहीं होती है। प्रतिनिधिमंडल ने यह भी मांग की है कि अगर चुनाव आयोग डीजीपी, सचिव को बदल सकता है तो वह जांच एजेंसियों पर भी नियंत्रण रखे।

इसरो ने चिनूक हेलिकॉप्टर की मदद से उतारा 'पुष्पक' यान को

नई दिल्ली। भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) ने वायु सेना के चिनूक हेलिकॉप्टर की मदद से शुक्रवार को रीयूजेबल लॉच व्हीकल 'पुष्पक' की सफल लैंडिंग करायी।

पुष्पक की सफल लैंडिंग के बाद वायु सेना ने सोशल मीडिया प्लेटफार्म एक्स पर एक पोस्ट में लिखा कि उसने इस अभियान के लिए चिनूक हेलिकॉप्टर की मदद ली। वायु सेना ने इस अभियान का वीडियो जारी करते हुए कहा कि पुष्पक को वायु सेना के चिनूक हेलिकॉप्टर में साढे चार किलोमीटर की निर्धारित ऊंचाई और निश्चित स्थान पर ले जाकर छोड़ा गया।

इसके बाद इसरो ने इस यान की सफल लैंडिंग करायी। वायु सेना ने इस उपलब्धि के लिए इसरो को बधाई दी है। वायु सेना ने कहा है कि उसके सैनिक भविष्य में भी इस तरह के अभियानों में महत्वपूर्ण योगदान देते रहेंगे।

ओबीसी महागठबंधन के 30 दलों का इंडिया समूह को समर्थन का एलान

नई दिल्ली। ओबीसी भारतीय महागठबंधन से जुड़े 30 राजनीतिक पार्टियों ने शुक्रवार को विपक्षी दलों के इंडिया समूह को समर्थन देने का एलान कर दिया। कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे और पूर्व अध्यक्ष राहुल गांधी की मौजूदगी में श्री खड़गे के आवास पर हुई बैठक के बाद ओबीसी भारतीय महागठबंधन के संयोजक राजकुमार सैनी ने यह एलान किया। कांग्रेस के हरियाणा एवं दिल्ली के प्रभारी महासचिव दीपक बाबरिया भी इस दौरान मौजूद थे। श्री खड़गे ने बैठक के बाद यहां आयोजित संयुक्त संवाददाता सम्मेलन में कहा कि श्री राहुल गांधी की 'भारत जोड़ो यात्रा' और 'भारत जोड़ो न्याय यात्रा' को देखकर और उनके विचारों से प्रेरित होकर श्री सैनी ने कांग्रेस का साथ देने का निर्णय लिया और बिना शर्त इंडिया समूह को समर्थन देने का ऐलान कर दिया।

श्री राहुल गांधी ने कहा, देश में भागीदारी आज सबसे बड़ा मुद्दा है। यात्रा में कांग्रेस ने सामाजिक न्याय की बात की और पार्टी का अगला क्रांतिकारी कदम जातिगत जनगणना तथा आर्थिक सर्वेक्षण है। इससे ये पता चल जाएगा कि 90 प्रतिशत आबादी की देश में क्या भागीदारी है। मुझे खुशी है कि हम सब एक साथ ये लड़ाई लड़ने जा रहे हैं। सैनी ने कहा, हम सभी राजनीतिक दल एक ही बात कह रहे थे कि हमें हमारी हिस्सेदारी मिलनी चाहिए। श्री गांधी ने जातिगत जनगणना और आर्थिक सर्वे के आधार पर लोगों को न्याय दिलाने की आवाज बुलंद की है और इसीलिए ओबीसी भारतीय महागठबंधन, इंडिया समूह को समर्थन दे रहा है। हम देश में सभी को बराबरी का हक देने को प्रतिबद्ध हैं।

आजम खां से मुलाकात के बाद बोले अखिलेश यादव, परेशान कर रही है सरकार

सीतापुर,एजेंसी। समाजवादी पार्टी (सपा) अध्यक्ष अखिलेश यादव ने शुक्रवार को सीतापुर जेल पहुंचकर पार्टी के राष्ट्रीय महासचिव एवं पूर्व मंत्री मोहम्मद आजम खान से मुलाकात की और उनका एवं परिवार का हाल चाल जाना।

मुलाकात के बाद श्री यादव ने पत्रकारों से कहा कि भाजपा सरकार ने आजम पर झूठे मुकदमे लगाए। सरकार मोहम्मद आजम खान और उनके परिवार को परेशान कर रही है। यह अमानवीय कृत्य है। आजम खां साहब के परिवार और अरविन्द केजरीवाल को भाजपा इसलिए परेशान कर रही क्योंकि उसे लगता है कि ये लोग ताकत बनकर उभरेंगे। भाजपा इन्हें दबाने के लिए झूठे मुकदमों में फंसा रही है। उम्मीद है कि आजम खां को न्याय मिलेगा। उन्होने कहा कि भाजपा सरकार झूठे मुकदमों के मामले में विश्व रिकॉर्ड से आगे जा चुकी है। भाजपा संवैधानिक संस्थाओं का दुरुपयोग कर रही है। लोकतंत्र को कमजोर कर रही है। विपक्ष की आवाज को दबा रही है। इलेक्टोरल बांड के मामले में भाजपा ने भारी घपला किया है। उसी के कारण दिल्ली में मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल की गिरफ्तारी हुई है। भाजपा सरकार के पास इलेक्टोरल बांड में घपलेबाजी और वसूली का कोई जवाब नहीं है। भाजपा सरकार पीडीए की एकता और इंडिया समूह से घबराई हुई है। श्री यादव ने कहा कि भाजपा सरकार की गलत नीतियों से महंगाई, बेरोजगारी चरम पर पहुंच गई है। किसान, नौजवान, गरीब, मध्यम वर्ग, महिलाएं सभी परेशान हैं। भाजपा सरकार चाहे जितना अन्याय कर ले, झूठे मुकदमे लगा दे लेकिन एक दिन सच्चाई की ही जीत होगी।

लोस चुनावः रशीद मसूद के इर्द-गिर्द घूमती थी सहारनपुर की सियासत

संजय सिंह, वरिष्ठ पत्रकार

मेरठ। एक समय था जब पूर्व केंद्रीय मंत्री रशीद मसूद के इर्द-गिर्द ही सहारनपुर जनपद की सियासत घूमती थी। रशीद मसूद के संरक्षण में राजनीति का ककहरा सीखने वाले कई नेता आज सहारनपुर की सियासत में छाए हुए हैं। उनके भतीजे इमरान मसूद कांग्रेस-सपा गठबंधन से सहारनपुर से टिकट के दावेदार हैं। सहारनपुर की राजनीति में रशीद मसूद का नाम नया नहीं है। वे सहारनपुर लोकसभा सीट से नौ बार चुनाव लड़कर पांच बार संसद में पहुंचे। इसके साथ ही तीन बार राज्यसभा के भी सदस्य बने। रशीद मसूद का जन्म 15 अगस्त 1947 में गंगोह में हुआ था। विरासत में राजनीति पाने वाले रशीद मसूद के पिता काजी मसूद भी विधायक रहे।

रशीद मसूद ने 1974 में नकुल विधानसभा सीट से पहला चुनाव लड़ा। 1977 में जनता के टिकट पर लोकसभा चुनाव जीतकर पहली बार वे संसद में पहुंचे। इसके बाद वे सहारनपुर लोकसभा सीट का पर्याय बन गए। एक के बाद एक नौ बार सहारनपुर से लोकसभा चुनाव लड़ा और पांच बार लोकसभा में पहुंचे। 1980 में लोकदल के टिकट पर, 1989 में जनता दल के टिकट पर, 1991 में जनता दल के टिकट पर और 2004 में सपा उम्मीदवार के रूप में लोकसभा चुनाव जीता। उन्होंने 1990 में वीपी सिंह के नेतृत्व में बनी जनता दल सरकार में वे स्वास्थ्य राज्य मंत्री बने। 1985, 2009 और 2012 में उन्हें राज्यसभा का सदस्य बनाया गया। 2007 में रशीद मसूद ने संयुक्त राष्ट्रीय प्रगतिशील गठबंधन से उप राष्ट्रपति का चुनाव लड़ा। रशीद मसूद के जीवित रहते ही उनका परिवार सियासत में आ गया। उनके भतीजे इमरान मसूद की गिनती चर्चित नेताओं में होती है। राजनीतिक विरासत को लेकर इमरान की अपने चाचा रशीद मसूद से ठन गई थी। 2014 में इमरान मसूद ने कांग्रेस उम्मीदवार तो रशीद मसूद के बेटे शाजान मसूद ने सपा उम्मीदवार के रूप में सहारनपुर से लोकसभा चुनाव लड़ा, लेकिन दोनों को हार का सामना करना पड़ा। इसके बाद दोनों परिवार मिल गए तो शाजाद मसूद ने राजनीति से दूरी बना ली। 2019 में इमरान कांग्रेस उम्मीदवार के रूप में चुनाव लड़े, लेकिन हार गए। अब फिर से इमरान मसूद सहारनपुर से कांग्रेस उम्मीदवार के रूप में चुनाव लड़ने की तैयारी कर रहे हैं तो शाजाद मसूद के बेटे नौमान मसूद इस समय गंगोह की राजनीति में संघर्ष कर रहे हैं। रशीद मसूद का 2020 में कोरोना से निधन हो गया था। रशीद मसूद का राजनीतिक संरक्षण सहारनपुर सदर सीट से कई बार विधायक रहे संजय गर्ग को मिला। रशीद मसूद के सहयोग से संजय गर्ग कई बार विधायक बने और प्रदेश सरकार में मंत्री भी रहे। संजय गर्ग इस समय भाजपा में शामिल हो गए हैं और सहारनपुर से लोकसभा टिकट के प्रबल दावेदार हैं।

यौन शोषण की शिकार व गरीब परिवारों की 135 बच्चियों को लगाए गए सर्वाइकल कैंसर के टीके

मो। हबीबुल्लाह उर्फ मुन्ना, सद्भावना टुडे संवाददाता

नई दिल्ली। यौन शोषण की शिकार बच्चियों के लिए देश में अपनी तरह की पहली अभिनव पहल में नई दिल्ली के ओखला में सर्वाइकल कैंसर से बचाव के लिए इन पीड़ित बच्चियों और बेहद गरीब परिवारों की बच्चियों के लिए निशुल्क एचपीवी टीकाकरण शिविर लगाया गया। इस दौरान नौ से 14 वर्ष के बीच की 135 बच्चियों का टीकाकरण किया गया।

शिविर का आयोजन बच्चों की सुरक्षा के लिए काम कर रहे संगठन इंडिया चाइल्ड प्रोटेक्शन फंड (आईसीपीएफ) ने अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान (एम्स) के डॉ. बी. आर. अंबेडकर इंस्टीट्यूट रोटरी कैंसर हॉस्पिटल (प्रिवेंटिव आनकोलॉजी) और रोटरी क्लब, दिल्ली के सहयोग से किया। तमाम शोध बताते हैं कि यौन शोषण की शिकार बच्चियों में सर्वाइकल कैंसर के खतरे की आशंका ज्यादा होती हैं लेकिन इसके बचाव के लिए लगाया जाने वाला एचपीवी का टीका काफी महंगा आता है, जो गरीब परिवारों की पहुंच से बाहर है। लिहाजा आईसीपीएफ ने इसके लिए पहल की और एम्स के कैंसर विभाग में सहायक प्राध्यापक डॉ. पल्लवी शुक्ला की देखरेख में उनकी टीम के सदस्यों डॉ. सुजाता पाठक और डॉ. प्रतीक ने टीके लगाने का जिम्मा उठाया। दुनियाभर में कैंसर की शिकार महिलाओं का एक चौथाई हिस्सा सर्वाइकल कैंसर से पीड़ित है जबकि 15 से 44 वर्ष के बीच कैंसर पीड़ित महिलाओं में सर्वाइकल कैंसर से पीड़ितों की संख्या दूसरे नंबर पर है। लगभग 90 प्रतिशत मामलों में सर्वाइकल कैंसर सेक्स के दौरान एचपीवी संक्रमण से होता है। इसीलिए यौन शोषण की शिकार बच्चियों में सर्वाइकल कैंसर का खतरा काफी ज्यादा होता है। ऐसे में बच्चों की ट्रैफिकिंग, बाल विवाह और बाल यौन शोषण के खिलाफ काम कर रहे संगठन इंडिया चाइल्ड प्रोटेक्शन फंड ने यौन शोषण की शिकार बच्चियों तथा यौन हिंसा के खतरे की आशंका वाले असुरक्षित हालात में रह रहीं गरीब बच्चियों को एचपीवी का टीका लगवाने के लिए पहल की। टीका लगवाने के लिए बच्चियां को उनके माता-पिता व अभिभावकों के साथ बुलाया गया। इस दौरान इन सभी को सर्वाइकल कैंसर की वजह और इससे बचने के उपायों के बारे में जागरूक किया गया। एचपीवी के छह महीने के अंतराल में दो टीके लगते हैं। लिहाजा आईसीपीएफ, रोटरी क्लब तथा एम्स ने बच्चियों के अभिभावकों से छह महीने बाद अगला टीका लगवाने की लिखित वचनबद्धता ली। साथ ही, उन्हें भरोसा दिया गया कि यदि उनके परिवार में नौ से 14 वर्ष के बीच कोई और बच्ची है तो उसका भी निशुल्क एचपीवी टीकाकरण किया जाएगा। शिविर के दौरान इन बच्चियों को लाने व घर पहुंचाने की व्यवस्था भी की गई थी।

आईसीपीएफ के कार्यकारी निदेशक डॉ. के. सी. जार्ज ने देश में पहली बार यौन शोषण से पीड़ित बच्चियों के एचपीवी टीकाकरण में सहयोग के लिए एम्स व रोटरी क्लब को धन्यवाद देते हुए कहा कि यह सर्वाइकल कैंसर के खतरे की आशंका वाली बच्चियों के जीवन को बचाने की दिशा में सराहनीय प्रयास है। उन्होंने कहा कि बच्चों की सुरक्षा के काम में लगे सभी गैरसरकारी संगठनों को इस तरह के कदम उठाने चाहिए ताकि यौन शोषण की शिकार व यौन शोषण के खतरे की आशंका वाली बच्चियों के जीवन को सुरक्षित बनाया जा सके।

केजरीवाल के पास जेड प्लस सुरक्षा है, अब उनकी सुरक्षा के लिए कौन जिम्मेदार है?- आप

सैफुल्लाह सिद्दीकी, सद्भावना टुडे

नई दिल्ली। आम आदमी पार्टी ने मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल की गिरफ्तारी के बाद उनकी सुरक्षा को लेकर गंभीर चिंता जाहिर की है। %आप% की वरिष्ठ नेता आतिशी ने शुक्रवार को मुख्यमंत्री की सुरक्षा को लेकर चिंता जताते हुए कहा कि देश में पहली बार एक सीटिंग मुख्यमंत्री को गिरफ्तारी किया गया है।

मुख्यमंत्री को जेड प्लस की सिक्योरिटी है। सवाल यह है कि अब उनकी सुरक्षा के लिए कौन ज़िम्मेदार है? वो ईडी के ऑफिस में है। वहां कौन जा रहा है? क्या लेकर जा रहा है? इसके लिए कौन ज़िम्मेदार होगा? आम आदमी पार्टी और पूरे देश की यह चिंता है कि क्या अरविंद केजरीवाल को ईडी की हिरासत में केंद्र सरकार पर्याप्त सुरक्षा दे रही है? क्योंकि केंद्र सरकार स्वयं मुख्यमंत्री के लिए जेड प्लस सुरक्षा की व्यवस्था करती है। ऐसे में केंद्र जबाव दे कि क्या ईडी की कस्टडी में अरविंद केजरीवाल को पर्याप्त सुरक्षा मिल रही है। उन्होंने कहा कि अरविंद केजरीवाल की यह गिरफ्तारी सिर्फ़ और सिर्फ़ भाजपा के डर को दिखाता है। भाजपा को यह लगता है कि देश में कोई एक नेता है जो उन्हें चुनौती दे सकता है तो उस नेता का नाम अरविंद केजरीवाल है। इसलिए भाजपा और प्रधानमंत्री मोदी जी हर संभव कोशिश कर रहे है कि वो आम आदमी पार्टी और अरविंद केजरीवाल को कुचल दे। इसलिए एक के बाद एक आप के सभी शीर्ष नेताओं को झूठे आरोपों में भाजपा की राजनैतिक हथियार बन चुकी ईडी द्वारा गिरफ़्तार किया जा रहा है। आतिशी ने भाजपा से कहा कि अरविंद केजरीवाल सिर्फ़ एक मुख्यमंत्री और एक नेता नहीं है, बल्कि अरविंद केजरीवाल एक विचार हैं, एक प्रेरणा है। अरविंद केजरीवाल वो व्यक्ति है जो अपनी आईआरएस की नौकरी छोड़ कर इस देश के लोकतंत्र और संविधान को बचाने के लिए सड़क पर उतर पड़े। उन्होंने कहा कि, आज अरविंद केजरीवाल को चुनाव से ठीक पहले गिरफ़्तार किया गया है। उन्हें चुनाव में प्रचार करने से रोकने के लिए गिरफ़्तार किया है। मैं भाजपा को बताना चाहती हूं कि एक केजरीवाल को गिरफ़्तार करेंगे तो हज़ारों केजरीवाल इस देश के संविधान और लोकतंत्र की बचाने के लिए सड़कों पर उतरेंगे। भाजपा ने लोकतंत्र को कुचलने के लिए एक के बाद एक विपक्ष के सभी नेताओं को टारगेट किया है। अगर ये विपक्षी नेता भाजपा में चले जाते है तो उनके खिलाफ केस बंद हो जाते है और वो भाजपा में नहीं जाते हैं तो जेल में बंद कर दिया जाता है।

आप विधायक, पार्षद केजरीवाल के आवास पर पहुंचे, परिवार को नजरबंद करने का आरोप लगाया

नई दिल्ली। प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) द्वारा दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल की गिरफ्तारी के एक दिन बाद शुक्रवार को आम आदमी पार्टी (आप) के विधायक और पार्षद केजरीवाल के परिवार से मिलने सिविल लाइंस स्थित उनके आवास पर पहुंचे। आप विधायक दुर्गेश पाठक ने कहा, हम यहां मुख्यमंत्री के परिवार से मिलने आए हैं। उन्हें किसी से मिलने नहीं दिया जा रहा है। उन्हें घर में नजरबंद कर दिया गया है। किसी को नहीं पता कि वे किस हालत में हैं।

केजरीवाल के आवास के बाहर मौजूद लोगों में जरनैल सिंह और राज कुमार आनंद समेत आप विधायक और दिल्ली की महापौर शैली ओबेरॉय भी शामिल थीं। आप नेताओं ने तानाशाही नहीं चलेगी और नजरबंदी खत्म करो के नारे लगाए। आप के राष्ट्रीय संयोजक केजरीवाल को ईडी ने बृहस्पतिवार रात को आबकारी नीति से जुड़े धन शोधन मामले में गिरफ्तार कर लिया। ईडी ने केजरीवाल को अदालत में पेश किया और 10 दिन की उनकी हिरासत का अनुरोध किया।

दिल्ली उच्च न्यायालय में केजरीवाल को मुख्यमंत्री पद से हटाने का अनुरोध करने वाली जनहित याचिका दायर

नई दिल्ली। दिल्ली उच्च न्यायालय में आबकारी नीति से जुड़े धन शोधन मामले में प्रवर्तन निदेशालय द्वारा आम आदमी पार्टी (आप) के नेता अरविंद केजरीवाल की गिरफ्तारी के बाद उन्हें मुख्यमंत्री पद से हटाने का अनुरोध करते हुए शुक्रवार को एक जनहित याचिका दायर की गयी।

अदालत के सूत्रों के अनुसार, याचिका में कुछ खामियां हैं और उन्हें दूर करने के बाद उसे सुनवाई के लिए सूचीबद्ध किया जाएगा। सुरजीत सिंह यादव ने अपनी याचिका में अनुरोध किया है कि केंद्र सरकार, दिल्ली सरकार और उपराज्यपाल के प्रधान सचिव से यह बताने के लिए कहा जाए कि किस अधिकार के तहत केजरीवाल मुख्यमंत्री के पद पर बने हुए हैं। याचिकाकर्ता ने केजरीवाल को मुख्यमंत्री पद से हटाने का भी अनुरोध किया है। याचिका में कहा गया है कि प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) ने कथित आबकारी नीति घोटाले से जुड़े धन शोधन मामले में 21 मार्च को केजरीवाल को गिरफ्तार कर लिया। इसमें केजरीवाल को दंडात्मक कार्रवाई से अंतरिम संरक्षण न देने के दिल्ली उच्च न्यायालय के फैसले का भी उल्लेख किया गया है। ईडी ने एक अदालत में केजरीवाल को पेश किया है और उनकी 10 दिन की हिरासत मांगी है। इस मामले में सुनवाई अभी जारी है।

एयरपोर्ट पुलिस ने कैब ड्राइवर को गिरफ्तार किया

नई दिल्ली,एजेंसी। आईजीआई एयरपोर्ट थाना पुलिस टीम ने एक महिला हवाई यात्री के महंगे सामान, गोल्ड ज्वेलरी, कैश, विदेशी करेंसी चोरी करने के एक मामले का खुलासा करते हुए 24 घंटे के अंदर आरोपित कैब ड्राइवर को गिरफ्तार कर लिया है। उसके पास से गोल्ड का ब्रेसलेट, डायमंड का पेंडेंट, 21000 कैश, विदेशी करेंसी, घड़ी भी बरामद किया है। गिरफ्तार किए गए आरोपों की पहचान राजेश श्रीवास के रूप में हुई है। यह उप्र का रहने वाला है। डीसीपी उषा रंगनानी ने बताया कि 20 मार्च को ई एफआईआर दर्ज कराई गई थी। पुणे की रहने वाली एक महिला ने पुलिस को बताया कि वह 20 मार्च की शाम वसंत कुंज होटल से टर्मिनल 3 पर पहुंची थी अपनी फ्लाइट लेने के लिए। उसी दौरान उनका पर्स चोरी हो गया, जिसमें पासपोर्ट, कैश, विदेशी करेंसी, गोल्ड डायमंड के पेंडेंट, ब्रेसलेट, घड़ी इत्यादि उसमें थे। इस मामले की सूचना मिलने के बाद पुलिस ने छानबीन की। टीम ने सीसीटीवी फुटेज की मदद से टर्मिनल-3 के अंदर से लेकर बाहर लगे कैमरे को चेक किया। जहां से पीड़ित महिला एयरपोर्ट पहुंची थी, वहां के लोकेशन को चेक किया गया और उसके बाद उस होटल के कैमरे को चेक किया गया जहां महिला रुकी थी और वहां से एयरपोर्ट आई थी। जिस कैब से वह एयरपोर्ट पहुंची थी उसके बारे में पता लगाया गया। सीसीटीवी से उस कैब के नंबर का पता लगाया। जब पुलिस उसके ओनर तक पहुंची तो उसने बताया कि वह कैब राजेश नाम के ड्राइवर को चलाने के लिए दिया है किराए पर। उसे फोन किया गया तो उसका नंबर स्विच ऑफ मिला। उसके बाद पुलिस ने टेक्निकल सर्विलांस की मदद से उसके लोकेशन के बारे में पता लगाया और उसे दबोच लिया गया। उसके पास से चोरी के समान इत्यादि बरामद कर लिए गए।

हत्या कर 14 साल से फरार युवक गिरफ्तार

नई दिल्ली। क्राइम ब्रांच ने जम्मू में हत्या कर 14 साल से फरार चल रहे शख्स को बुधवार को चंडीगढ़ से गिरफ्तार किया। आरोपी की पहचान 39 वर्षीय इंद्रप्रीत सिंह के तौर पर हुई है। इस मामले में सात आरोपियों में से चार को दोषी ठहराया जा चुका है। एडिशनल सीपी संजय भाटिया ने बताया कि सेंट्रल रेंज के एसआई संजय राणा को सूचना मिली कि इंद्रप्रीत सिंह के विषय में जानकारी मिली थी। इसके बाद इंस्पेक्टर सुनील कुमार की टीम ने जांच शुरू की। पुलिस ने सोशल मीडिया के जरिए जानकारी हासिल की और चंडीगढ़ से आरोपी को गिरफ्तार कर लिया। सांबा निवासी इंद्रप्रीत के पिता जम्मू और कश्मीर में जेल अधीक्षक थे। इंद्रप्रीत ने एमबीए की पढ़ाई की है। वर्ष 2010 में पड़ोसी मदन लाल से उनका जमीन का विवाद था। इंद्रप्रीत ने अपने भाई और साथियों के साथ मिलकर मदन लाल की हत्या कर दी, लेकिन इसे सड़क दुर्घटना का रूप दे दिया। मदन के परिजनों की शिकायत पर दोबारा जांच हुई तो हत्या की बात सामने आई। हत्या का मुकदमा दर्ज होते ही इंद्रप्रीत फरार हो गया। मामले में उसके भाई समेत चार लोगों को आजीवन कारावास की सजा सुनाई गई। इसबीच इंद्रप्रीत ने अपनी पत्नी को साथ बुला लिया और चोरी छिपे दिल्ली और चंडीगढ़ में प्रॉपर्टी का काम शुरू किया।

होली पर विशेष ट्रेनों में चार लाख से अधिक अतिरिक्त सीट

शबाना बेगम,सद्भावना टुडे

नई दिल्ली। होली के अवसर पर यात्रियों की भीड़ को ध्यान में रखते हुए रेलवे ने 4.90 लाख अतिरिक्त सीट की व्यवस्था की है। रेलवे की ओर से 21 से 31 मार्च के बीच 75 जोड़ी विशेष रेलगाड़ियां चलाई जा रही हैं, जो 354 फेरे लगाएंगी। इनमें से पूर्व की तरफ 243 और अन्य दिशाओं में 111 फेरे लगाए जाएंगे। यह जानकारी शुक्रवार को उत्तर रेलवे के महाप्रबंधक शोभन चौधुरी ने दी। शोभन चौधुरी ने बताया कि बीते वर्ष के मुकाबले इस बार होली पर यात्रियों की भीड़ ज्यादा रहने की संभावना है। इसे ध्यान में रखते हुए बीते वर्ष के मुकाबले 102 फीसदी ज्यादा फेरे लगाए जा रहे हैं। बीते वर्ष विशेष रेलगाड़ियों ने 175 फेरे लगाए थे। वहीं, इस वर्ष 354 फेरे लगाए जा रहे हैं। इनमें से 282 फेरे आरक्षित गाड़ियों और 72 फेरे अनारक्षित गाड़ियों के होंगे। विशेष रेलगाड़ियों के अलावा पहले से चल रही गाड़ियों में भी अतिरिक्त कोच लगाए गए हैं। इसके माध्यम से 66072 अतिरिक्त सीटें उपलब्ध हुई हैं।

दिल्ली क्षेत्र से विशेष रेलगाड़ियां 92 फेरे लगाएंगी

शोभन चौधुरी ने बताया कि इनके अलावा अतिरिक्त गाड़ियों को भी तैयार रखा जाएगा। भीड़ को देखते हुए आवश्यकता पड़ने पर इन गाड़ियों को चलाया जाएगा। बीते वर्ष उत्तर रेलवे से कुल 88 फेरे विशेष रेलगाड़ियों ने लगाए थे, जो इस वर्ष बढ़ाकर 140 किए गए हैं। इसी तरह अन्य रेलवे से बीते वर्ष 87 फेरे विशेष रेलगाड़ियों ने लगाए थे, जो इस बार बढ़ाकर 214 किए गए हैं। दिल्ली क्षेत्र से विशेष रेलगाड़ियों द्वारा 92 फेरे लगाए जाएंगे।

सीसीटीवी कैमरों से की जा रही निगरानी

नई दिल्ली और आनंद विहार टर्मिनल स्टेशन पर विशेष रेलगाड़ी से सफर करने वाले यात्रियों के लिए पंडाल लगाए गए हैं। गाड़ी के चलने तक वह यहां इंतजार कर सकेंगे। उन्होंने बताया कि विशेष रेलगाड़ी के प्लेटफॉर्म पर लगते ही इन यात्रियों को वहां ले जाया जाएगा। इस दौरान सुरक्षा के मद्देनजर अतिरिक्त पुलिसकर्मियों की तैनाती करने के साथ ही सीसीटीवी कैमरों के जरिये भी निगरानी की जा रही है।

देश में अघोषित आपातकाल जैसे हालात; केजरीवाल की गिरफ्तारी भाजपा की सबसे बड़ी राजनीतिक गलती : आप

नई दिल्ली। आम आदमी पार्टी (आप) के राष्ट्रीय महासचिव (संगठन) संदीप पाठक ने शुक्रवार को कहा कि देश में अघोषित आपातकाल जैसी स्थिति पैदा हो गई है और भाजपा विपक्षी दलों को खत्म करने की कोशिश कर रही है। आप के राष्ट्रीय संयोजक एवं दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल को आबकारी नीति से जुड़े धन शोधन मामले में प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) ने बृहस्पतिवार की रात गिरफ्तार कर लिया था। पाठक ने संवाददाता सम्मेलन को संबोधित करते हुए कहा कि केजरीवाल की गिरफ्तारी कपटपूर्ण है। उन्होंने कहा, हमें न्यायपालिका पर पूरा भरोसा है। देरी हो सकती है लेकिन अंतत न्याय मिलेगा और सच्चाई की जीत होगी।

दिल्ली विधानसभा में आप के मुख्य सचेतक दिलीप पांडे ने एक अन्य संवाददाता सम्मेलन में कहा कि केजरीवाल की गिरफ्तारी भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) की सबसे बड़ी राजनीतिक गलती साबित होगी और दिल्ली तथा देश की जनता लोकसभा चुनाव में इसका करारा जवाब देगी। पाठक ने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी और भाजपा पर निशाना साधते हुए कहा कि वे केजरीवाल और आप से डरे हुए हैं। उन्होंने आरोप लगाया, देश में अघोषित आपातकाल जैसी स्थिति पैदा हो गई है। भाजपा और प्रधानमंत्री मोदी विपक्षी दलों के नेताओं को जेल भेजकर या डरा-धमका कर उन्हें भाजपा में शामिल कराकर इन दलों को खत्म कर रहे हैं। भाजपा में शामिल होने वालों को क्लीन चिट दी जा रही है जबकि उनकी तानाशाही का विरोध करने वालों को गिरफ्तार किया जा रहा है। उन्होंने दावा किया कि केजरीवाल की गिरफ्तारी के खिलाफ प्रदर्शन के दौरान मंत्री सौरभ भारद्वाज, विधायकों और पार्षदों समेत आप के कई नेताओं को हिरासत में लिया गया।

एलपीजी सिलेंडर में रिसाव से आग लगी, पांच घायल

नई दिल्ली। प्रशांत विहार इलाके में शुक्रवार तड़के एलपीजी सिलेंडर में रिसाव से आग लग गई। बचने के लिए पहली मंजिल से पांच लोग कूद गए, जिससे वे घायल हो गए। हालांकि, सभी को उपचार के बाद छुट्टी दे दी गई। पुलिस एफआईआर दर्ज कर जांच कर रही है। रजापुर गांव में ब्रम्ह प्रकाश ने अपना मकान किराए पर दिया हुआ है। मकान के ग्राउंड फ्लोर पर अमर रहता है और स्थानीय बाजार में छोले-भटूरे की रेहड़ी लगाता है। दमकल अधिकारी ने बताया कि अमर शुक्रवार तड़के एलपीजी स्टोव पर छोले उबाल रहा था। इसी दौरान सिलेंडर में रिसाव होने से आग लग गई। अमर तो बाहर निकल गया, लेकिन आग पूरी इमारत में फैल गई और उसमें रहने वाले लोग फंस गए। जब धुआं फैला तो पहली मंजिल पर जमा पांच लोग जान बचाने के लिए कूद गए। इसकी वजह से उनके हाथ पैर में चोट आई। दमकल अधिकारी ने बताया कि करीब 4:30 बजे आग लगने की सूचना मिली थी। दमकल की चार गाड़ियों ने मौके पर पहुंचकर आधे घंटे में आग पर काबू पा लिया। पुलिस अधिकारी ने बताया कि घायलों की पहचान ओमप्रकाश, सुमन, सूरज, रवि और संजय घायल हो गए।

केजरीवाल की गिरफ्तारी के खिलाफ आप का प्रदर्शन

शहनवाज़ सैफ, सद्भावना टुडे संवाददाता

नई दिल्ली। दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल की गिरफ्तारी को लेकर शुक्रवार को आम आदमी पार्टी (आप) के सैकड़ों नेताओं और कार्यकर्ताओं ने भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के खिलाफ सड़कों पर विरोध प्रदर्शन किया और इस दौरान %अरविंद तुम संघर्ष करो, हम तुम्हारे साथ हैं% के नारे भी लगाए गए। पुलिस ने प्रदर्शन के दौरान दिल्ली की कैबिनेट मंत्री मंत्री आतिशी, सौरभ भारद्वाज और अन्य को हिरासत में लिया।

प्रवर्तन निदेशालय ने दिल्ली आबकारी नीति से जुड़े धन शोधन मामले में आप के राष्ट्रीय संयोजक अरविंद केजरीवाल को बृहस्पतिवार को गिरफ्तार कर लिया। पार्टी के नेताओं और कार्यकर्ताओं को भाजपा मुख्यालय की ओर मार्च करने से रोकने के लिए कई स्तरों पर अवरोधक लगाए गए और बड़ी संख्या में सुरक्षा कर्मियों को तैनात किया गया। मध्य दिल्ली में राउज एवेन्यू मार्ग पर आप मुख्यालय के बाहर बड़ी संख्या में कार्यकर्ताओं का जमावड़ा रहा। कई प्रदर्शनकारी सुबह करीब साढ़े बजे भाजपा कार्यालय की ओर कूच करने के लिए दीन दयाल उपाध्याय (डीडीयू) मार्ग पर इकट्ठा हुए, जहां पुलिस ने उन्हें बसों बैठा लिया। कानून एवं व्यवस्था बनाए रखने के लिए अर्धसैनिक बल के जवानों भी तैनात किए गए हैं।

पुलिस ने जब आप कार्यकर्ताओं को हिरासत में लेने की कोशिशों की तो कई सड़क पर भी लेट गए। महिला पुलिसकर्मियों को महिला प्रदर्शनकारियों को घसीटते हुए देखा गया। इनमें से कई प्रदर्शनकारी केजरीवाल की तस्वीर लिये हुए थे। पुलिस के अनुसार अब तक 50 से अधिक प्रदर्शनकारियों को हिरासत में लिया गया है और मध्य दिल्ली से दूर स्थित विभिन्न पुलिस थानों में ले जाया गया है। आप ने कहा कि देश में %%अघोषित आपातकाल जैसी स्थिति%% पैदा हो गई है और भाजपा नेताओं को जेल भेजकर या उन्हें डरा-धमका कर अपने साथ शामिल कर विपक्षी दलों को खत्म करने की कोशिश कर रही है। पार्टी ने दावा किया कि केजरीवाल की गिरफ्तारी भाजपा की सबसे बड़ी राजनीतिक गलती साबित होगी। जैसे ही दिल्ली की कैबिनेट मंत्री आतिशी, सौरभ भारद्वाज और अन्य ने सुबह 11 बजे के आसपास भाजपा मुख्यालय की ओर बढ़ने की कोशिश की, उन्हें पुलिस ने हिरासत में लेकर बस में बैठा लिया। पुलिस ने इस क्षेत्र में निषेधाज्ञा लागू होने का हवाला देते हुए प्रदर्शनकारियों को वहां से जाने के लिए कहा। हिरासत में लेने की कोशिश के दौरान आप कार्यकर्ताओं और पुलिस के बीच धक्का-मुक्की भी हुई। इसी तरह जब महिला पुलिसकर्मियों ने आतिशी को रोकने की कोशिश की तो वह उनसे भिड़ गईं। पार्टी कार्यकर्ता सड़क पर ही बैठ गए और नारे लगाने लगे। पुलिस और अर्धसैनिक बल के जवानों ने उन्हें हटाने का प्रयास किया और नहीं हटने पर उन्हें हिरासत में ले लिया। आतिशी ने सोशल मीडिया मंच %एक्स% पर पोस्ट कर कहा, ''मुझे आईटीओ पर शांतिपूर्वक विरोध प्रदर्शन करते समय दिल्ली पुलिस ने हिरासत में लिया है। पहले यह लोग दिल्ली के मुख्यमंत्री को झूठे मामले में गिरफ्तार करते हैं, फिर शांतिपूर्ण प्रदर्शन करने वालों को भी गिरफ्तार किया जा रहा है। यह लोकतंत्र की हत्या नहीं तो क्या है?

एक नजर

नेहरू कॉलेज में हुआ पेंटिंग प्रतियोगिता का आयोजन

फरीदाबाद। सेक्टर-16 के पंडित जवाहरलाल नेहरू राजकीय महाविद्यालय में प्राचार्य डॉ रुचिरा खुल्लर के निर्देशन में पेंटिंग प्रतियोगिता का आयोजन इंटेक् और इतिहास विभाग के संयुक्त तत्वाधान में किया गया। इस प्रतियोगिता में कॉलेज के छात्र-छात्राओं ने स्मारकों की पेंटिंग बनाई जिनमें से टॉप फाइव को ट्रॉफी और इनाम दिए गए। इस कार्यक्रम में मंच का संचालन डॉ हरवंश चौधरी ने किया और आनंद मेहता जो इंटच फरीदाबाद के कन्वीनर है ने इतिहास संस्कृति और विरासत के बारे में विस्तार से बताया। इसके अलावा कॉलेज के 50 छात्र छात्राओं को इंटेक् यूथ क्लब से भी जोड़ा गया ताकि भविष्य में सभी तरह की विरासत को बचाने के लिए छात्र-छात्राएं जागरूक रहे। इंटैक भारत की प्रमुख संस्था है जिसका उद्देश्य भारत की सभी तरह की विरासत को बचाना, स्मारकों का जीर्णोद्धार और उनका प्रबंधन, हेरिटेज वॉक और बसों के माध्यम से जन जागरूकता, स्कूलों और कॉलेज में हेरिटेज क्लबों की स्थापना, स्कूलों और कॉलेजों के शिक्षकों के लिए जागरूकता कार्यशाला का आयोजन और विरासत के विभिन्न स्थलों के टूर करवाना आदि। कार्यक्रम में कविता सैनी, शरद भसीन, संगीता, अनीता यादव, योगवती पारेख, भगवान दास, डॉ विशाल सिंह और मनोज कुमार ने विशेष रूप से उपस्थित रहकर कार्यक्रम को सफल बनाया।

धोखाधड़ी मामले में फरार आरोपित गिरफ्तार

फरीदाबाद। थाना शहर बल्लभगढ़ पुलिस ने धोखाधड़ी के एक मुकदमे में कोर्ट से फरार घोषित एक आरोपित को गुरुवार को गिरफ्तार किया है। पुलिस प्रवक्ता सूबे सिंह ने बताया कि गिरफ्तार आरोपित पंकज उत्तम नगर, दिल्ली का रहने वाला है। आरोपित ने वर्ष 2020 के मार्च माह में पंकज बूट हाउस से 2.30 लाख रुपये के जूते का ऑर्डर कर दिल्ली मंगवाए थे। इसके बाद जूतों का भुगतान न करके आरोपित ने अपना फोन बंद कर लिया। पीड़ित ने इस मामले की थाना शहर बल्लभगढ़ में एफआईआर दर्ज करवाई। इसके बाद पुलिस ने आरोपित को 4 जुलाई 2020 को गिरफ्तार किया था। बाद में कोर्ट आरोपित पंकज को 10 जुलाई 2020 को जमानत मिल गई थी। उसके बाद से पंकज कोर्ट से लगातार गैर हाजिर रहने पर उसे फरार घोषित कर दिया और पंकज के खिलाफ वारंट जारी कर दिया था। थाना शहर बल्लभगढ़ प्रभारी महेन्द्र सिंह की टीम ने गुरुवार को अपने गुप्त सूत्रों व तकनीकी माध्यम से एनआईटी के आकाश होटल से पंकज को गिरफ्तार किया है। गिरफ्तार करने के जेल भेजा गया है।

फरीदाबाद नगर निगम अब मुर्दों से भी वसूलेगा टैक्स, शवदाह गृह को भेजा नोटिस

फरीदाबाद। फरीदाबाद नगर निगम अब मुर्दों से भी टैक्स वसूलने की तैयारी मं है। इसको लेकर शवदाह गृह को साढ़े पांच लाख टैक्स जमा कराने का नोटिस भी भेज दिया गया। वहीं टैक्स जमा नहीं कराने पर सील करने की भी चेतावनी कर्मचारी ने दे डाली। जब शवदाह गृह के केयरटेकर ने उच्चाधिकारियों के सामने इस मामले को रखा तो जांच करने पर पता चला कि यह नोटिस प्रॉपर्टी आईडी में हुई गलती से वजह से जारी हो गया है। नगर निगम बल्लभगढ़ जोन की ओर से तिगांव रोड पर बने शवदाह गृह में कर्मचारी को नगर निगम की ओर से साढ़े पांच लाख रुपये का नोटिस भेज दिया। वहीं मौजूद कर्मचारी को टैक्स नहीं भरने पर शवदाह गृह सील करने की भी चेतावनी दी गई। कर्मचारी ने नोटिस की जानकारी केयरटेकर बालकृष्ण शर्मा को दी। साढ़े पांच लाख का नोटिस देखकर बालकृष्ण शर्मा भी पूरी तरह से हतप्रभ रह गए। वह नोटिस लेकर तुरंत नगर निगम कार्यालय पहुंचे। जहां पर उन्होंने क्षेत्रीय कर अधिकारी कार्यालय में अपनी शिकायत दी। कार्यालय में उपस्थित कर्मचारियों ने भी बालकृष्ण शर्मा से कहा कि उनको टैक्स जमा कराना पड़ेगा। इसके बाद केयरटेकर क्षेत्रीय कर अधिकारी विजय सिंह से मिले। इसके बाद उनकी समस्या का समाधान हुआ। क्षेत्रीय कर अधिकारी विजय सिंह ने कहा कि यह नोटिस प्रॉपर्टी आईडी की गलती की वजह से जारी हुआ है। कई प्रॉपर्टी आईडी आपस में अटैच हो गई, इसलिए कई जगह गलत नोटिस गए हैं। यह नोटिस भी प्रॉपर्टी आईडी में गलती होने की वजह से चला गया है। इसमें जल्द सुधार कर लिया जाएगा।

जिला नशा मुक्ति केंद्र का एडीसी आनंद शर्मा ने किया निरीक्षण

फरीदाबाद। जिला फरीदबाद के बीके सिविल अस्पताल में चल रहे नशा मुक्ति केंद्र का आज शुक्रवार दोपहर को एडीसी आनंद शर्मा ने निरीक्षण किया। एडीसी ने सीएमओ डॉ. विनय गुप्ता से नशा मुक्ति केंद्र में दाखिल मरीजों के बारे में जानकारी ली। नशा-मुक्ति केन्द्र की स्थापना, बिस्तरों की संख्या, स्टाफ की तैनाती, नशा छुड़वाने से संबंधित दवाइयों की भी जानकारी ली। उन्होंने मरीजों को डेली बेसिस पर दी जाने वाली दवाओं के रिकार्ड की भी जांच की। एडीसी आनंद शर्मा ने कहा कि नशा छोड़ना अच्छे जीवन की निशानी है। नशा मुक्ति के अभियान के लिए युवा आगे आएं। उन्होंने कहा कि स्कूलों, कालेजों, विश्वविद्यालयों और अन्य शैक्षणिक संस्थानों के विद्यार्थी नशे से दूर रहें। इसके लिए योजना बनानी चाहिए।इस अवसर पर सीएमओ डॉ विनय गुप्ता, आईएमए प्रेजिडेंट डॉ पुनिता हसीजा सहित अन्य कई अधिकारी मौजूद थे।

गाजियाबाद: घर जाने के लिए ट्रेनों और बसों में सफर करने वालों की भीड़ उमड़ी

गाजियाबाद। होली पर घर जाने वालों की भीड़ रेलवे स्टेशन और बस अड्डे पर उमड़ रही है। ट्रेनें फुल हैं और बसों में भी जगह नहीं है। ऐसे में यात्रियों जहां जगह मिल रही, वहीं सवार हो रहे हैं। ट्रेनों की आरक्षित बोगियां जनरल में तबील हो गई हैं। किसी भी बोगी में पैर रखने तक की जगह नहीं है। 72 सीट वाली बोगी में कई गुना यात्री सवार हो रहे।

उत्तर पूर्व की ओर जाने वाली ट्रेनों में सबसे ज्यादा मारामारी है। किसी भी ट्रेन में 200 से कम वेटिंग नहीं है। वहीं, जो ट्रेनें रवाना हो रही हैं, उनमें भी लंबी वेटिंग वाले यात्रियों की सीट कन्फर्म नहीं हो सकी। ऐसे में ये यात्री भी वेटिंग टिकट लेकर ट्रेन में सवार हो रहे हैं। शुक्रवार को उत्तर पूर्व की ओर जाने वाली सभी ट्रेनों में भीड़ खचाखच रही। दिल्ली से आने वाली ट्रेन में

पहले ही पैर रखने की जगह नहीं मिली। गाजियाबाद से जिन यात्रियों की सीट बुक थी, वह बड़ी मुश्किल से अपनी सीट तक पहुंच सके। सीट पर पहुंचने की बाद पता चला कि उनकी सीट के आसपास सामान तक रखने की जगह नहीं है। इसके अलावा जनरल बोगी में यात्री सवार हीं नहीं हो पा रहे थे। यात्रियों की भीड़ को देखते हुए स्टेशन पर आरपीएफ और जीआरपी के जवानों ने भी मोर्चा संभाला हुआ है।

जान जोखिम में डालकर चढ़ रहे

लोग जान जोखिम में डालकर चलती ट्रेन और बस में चढ़ रहे हैं। भीड़ के कारण कई यात्री चोटिल भी हो रहे हैं। ऐसे में यात्रियों को उद्घघोषणा के जरिये जागरूक किया जा रहा कि वह चलती ट्रेन में सवार न हों। ट्रेन के प्लेटफार्म पर पहुंचने से पहले लोग पटरियों की दूसरी ओर भी खड़े हो जाते हैं, ताकि ट्रेन के रुकते ही वह बोगी में चढ़ सकें। शुक्रवार को दिनभर स्टेशन पर यात्रियों की भारी भीड़ रही। रात के जाने वाली ट्रेन में भी मारमारी मची रही।

अवैध हथियार सप्लाई करने वाले चार आरोपी गिरफ्तार, कई हथियार बरामद

फरीदाबाद। अवैध हथियार रखने व सप्लाई करने वाले चार आरोपियों को क्राइम ब्रांच डीएलएफ की टीम ने गिरफ्तार किया है। शुक्रवार को इस बाबत पत्रकार में सहायक पुलिस आयुक्त अपराध अमन यादव ने बताया कि गिरफ्तार आरोपियों में राहुल, कपिल, मोहम्मद हैदर और हैदर अली का नाम शामिल है। आरोपी राहुल गांव मेवला महाराजपुर का रहने वाला है। आरोपी कपिल ग्रीन फिल्ड कॉलोनी का तथा आरोपी मोहम्मद हैदर सेहतपुर पल्ला का और आरोपी हैदर अली बदरपुर दिल्ली का रहने वाला है। अपराध शाखा टीम 19 मार्च को गश्त पर थी, उसी दौरान अपने गुप्त सूत्रों से आरोपियों के संबंध में सूचना प्राप्त हुई जिस पर कार्रवाई करते हुए ग्रीन फिल्ड कॉलोनी में 2 लडको को सेंट्रो गाडी सहित काबू किया है। आरोपियों की तलाशी लेने पर आरोपियों से 3 देसी पिस्टल 32 बोर, 1 देशी पिस्तौल 315 बोर व कुल 30 रोंद बरामद हुए है। आरोपियों के खिलाफ थाना सुरजकुण्ड में अवैध हथियार की धाराओं में मुकदमा दर्ज कर गिरफ्तार किया गया है। आरोपियों को मुकदमें में पूछताछ के लिए अदालत में पेश कर 2 दिन के पुलिस रिमांड पर लिया गया था। पुलिस रिमांड के दौरान आरोपियों से पता चला कि आरोपी अवैध हथियार को मोहम्मद हैदर पल्ला निवासी से खरीद कर लाए है। जिसको भी अपराध शाखा टीम ने गिरफ्तार कर लिया आरोपी मोहम्मद हैदर से पूछताछ में सामने आया की आरोपी ने 01 देशी पिस्तौल आरोपी हैदर अली को भी बेच रखी है। जिसके बाद अपराध शाखा टीम ने आरोपी हैदर अली को भी गिरफ्तार कर 1 देसी पिस्टल व 5 जिंदा रोंद बरामद हुए है।

गवर्नमेंट मॉडल स्कूल में जल बचाव को लेकर चलाया अभियान

अशोक कुमार, सद्भावना टुडे संवाददाता

फरीदाबाद। गवर्नमेंट मॉडल सीनियर सेकेंडरी स्कूल में सेव वाटर अभियान चलाते हुए वर्षा जल संग्रहण जागरूकता के लिए प्रेरित किया। विद्यालय की जेआरसी और एसजेएबी अधिकारी प्राचार्य रविंद्र कुमार मनचंदा ने कहा कि प्रत्येक वर्ष विश्व जल दिवस मनाने का उद्देश्य सभी को जल संरक्षण के लिए जागरूक करना और सभी तक स्वच्छ जल पहुंचाना है। वर्ष 2024 जल दिवस की थीम विश्व शांति के लिए जल का लाभ रखा गया है। जब हम जल बचाने पर सहयोग करते हैं तो हम एक सकारात्मक प्रभाव उत्पन्न करते हैं सद्भाव को बढ़ावा देना, समृद्धि और साझा चुनौतियों के प्रति लचीलापन आदि के द्वारा सतत विकास की ओर अग्रसर होना है। जल और सैनिटेशन के संकट को दूर करने के लिए तेज गति से बदलाव करना ही मुख्य लक्ष्य है। प्राचार्य मनचंदा ने कहा कि पृथ्वी के दो तिहाई भाग पर पानी है लेकिन इस में से मात्र तीन प्रतिशत पानी ही पीने योग्य है। विश्व में आज भी अत्यधिक मनुष्य पीने के पानी के लिए कठिनाई में हैं तथा बहुत दूरवर्ती क्षेत्रों से पीने योग्य जल लाने के लिए बाध्य हैं जिस प्रकार से पीने योग्य जल पृथ्वी से कम होता जा रहा है आने वाली पीढ़ी के लिए स्वच्छ और मीठा जल बचा पाना असम्भव होता जा रहा है। लोगों को जल का महत्व बताने और जल संरक्षण करने के लिए गंभीर प्रयास करने का समय आ गया है। प्राचार्य मनचंदा ने कहा कि संयुक्त राष्ट्र के अनुसार वर्ष 2030 तक जल की मांग आपूर्ति से अधिक हो जाएगी और 2050 तक जल की मांग विश्व स्तर पर 55त्न बढ़ जाएगी। घरेलू उपयोग में जल का प्रयोग अधिक होता है और व्यवसाय में जल की बर्बादी सबसे अधिक की जाती है। सभी जनों को पीने के लिए साफ और मीठा जल नहीं मिल पाता जिसके कारण कई जल जनित बीमारियां हो जाती हैं। इसलिए हम सभी का कर्तव्य है कि हम प्रतिदिन के कार्यों में परिवर्तन कर जल को बचाएं ताकि आने वाली पीढ़ी को स्वच्छ जल के लिए संकट न उठाना पड़े इसके लिए आज ही जल बचाएं और जल को व्यर्थ होने से रोकें। जल का बुद्धिमानी और मितव्ययता से उपयोग करके अधिक से अधिक जनों को ऐसे अभियान से जुड़ कर जल जागरूकता आंदोलन बनाएं और वर्षा जल की प्रत्येक बूंद का संचयन कर के संचित जल का उपयोग आवश्यकता पड़ने पर करें।

व्यापार के नाम पर साढ़े सात लाख रुपये हड़पे

शोएब आलम, रिपोर्टर, संद्भावना टुडे

गाजियाबाद। राजनगर एक्सटेंशन में रहने वाले व्यक्ति से व्यापार के नाम पर साढ़े सात लाख रुपये हड़पने का मामला सामने आया है। पीड़ित के साथ सोसाइटी के ही व्यक्ति ने फर्जीवाड़ा किया। तगादा करने पर आरोपी ने मां और बहन के साथ मिलकर पीड़ित को धमकाया। नंदग्राम पुलिस ने आरोपियों के खिलाफ केस दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। राजनगर एक्सटेंशन की वीवीआईपी एड्रेसेज सोसाइटी में रहने वाले चिराग गुप्ता का कहना है कि करीब तीन साल पहले उनकी जान-पहचान सोसाइटी में ही रहने वाले राहुल सिंह से हुई थी।

मेलजोल बढ़ने के बाद उसने अपना प्लेसमेंट सर्विसेज का काम बताया और कमीशन देने की बात कहते हुए उन्हें भी साथ जुड़ने को कहा। अगस्त 2022 में राहुल ने बहन की शादी बताते हुए कुछ पैसे उधार मांगे। उन्होंने इंसानियत के नाते अपने क्रेडिट कार्ड दे दिए। राहुल ने उनसे डेढ़ लाख रुपये की खरीदारी की। आरोप है कि राहुल सैलरी के नाम पर उनके खाते से 40-45 हजार रुपये ट्रांसफर करता था और कुछ दिन बाद ही जरूरत बताते हुए 20-25 हजार रुपये निकलवाकर ले लेता था। आरोप है कि इस तरह राहुल सिंह ने उनसे साढ़े सात लाख रुपये हड़प लिए। क्रेडिट कार्ड का पैसा जमा करने के लिए बैंक से फोन आने पर उन्होंने तगादा किया तो राहुल ने पैसे देने से साफ इनकार कर दिया। आरोप

है कि 29 फरवरी की रात आठ बजे राहुल अपनी बहन शालू सिंह और मां नीलम सिंह के साथ आया। सभी ने उनके साथ गाली-गलौच की और अंजाम भुगतने की धमकी दी। एसीपी नंदग्राम रवि कुमार सिंह का कहना है कि राहुल सिंह, नीलम सिंह, शालू सिंह, राहुल मलिक, प्रशांत मलिक और विक्रांत मलिक के खिलाफ केस दर्ज कर आगामी कार्रवाई की जा रही है।

राजनाथ सिंह ने किया बेटी राहदिखा को सम्मानित

शहजाद सैफ, सद्भावना टुडे संवाददाता

फरीदाबाद। द राइजिंग तमसो मां ज्योतिर्गमय एनजीओ के फाउंडर प्रेसिडेंट तरुण शर्मा की सुपुत्री राहदिखा को केंद्रीय रक्षा मंत्री राज सिंह ने दिल्ली स्थित निवास पर सम्मानित किया। यह सम्मान फरीदाबाद सेंट जोसफ स्कूल की 11 वर्ष की छात्रा राहदिखा को एक राष्ट्रीय संस्था राष्ट्रीय ईसाई महासंघ द्वारा चाइल्ड राइट्स डिफेंडर का एंबेसडर नियुक्त किए जाने पर दिया गया। राहदिखा को ये सम्मान उनके द्वारा किए गए पिछले 6-7 वर्षों से किए जा रहे सामाजिक कार्यो के लिए मिला है। इस अवसर पर संस्था की राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉक्टर अनीता बेंजामिन, रतन राष्ट्रीय राजनैतिक अध्यक्ष, अनिल ऐलिस एवं राहदिखा के पिता तरूण शर्मा व माता डॉ पारुल शर्मा भी उपस्थित थी। इस अवसर पर राहदिखा ने रक्षा मंत्री को कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती कविता भी सुनाई जिससे केंद्रीय मंत्री राज नाथ सिंह ने बच्ची को झांसी की रानी पुकार कर आशीर्वाद दिया। राहदिखा भी रक्षा मंत्री जी से उनके निवास पर मिल कर बेहद खुश हुई और उनको विश्वास दिलाया कि वो ऐसे ही जरूरतमन्द बच्चों के लिए कार्य करती जाएगी। उल्लेखनीय है कि तरुण शर्मा स्वयं द राइजिंग तमसो मां ज्योतिर्गमय के फाउंडर प्रेसिडेंट है। वर्ष 2007 से एनजीओ के

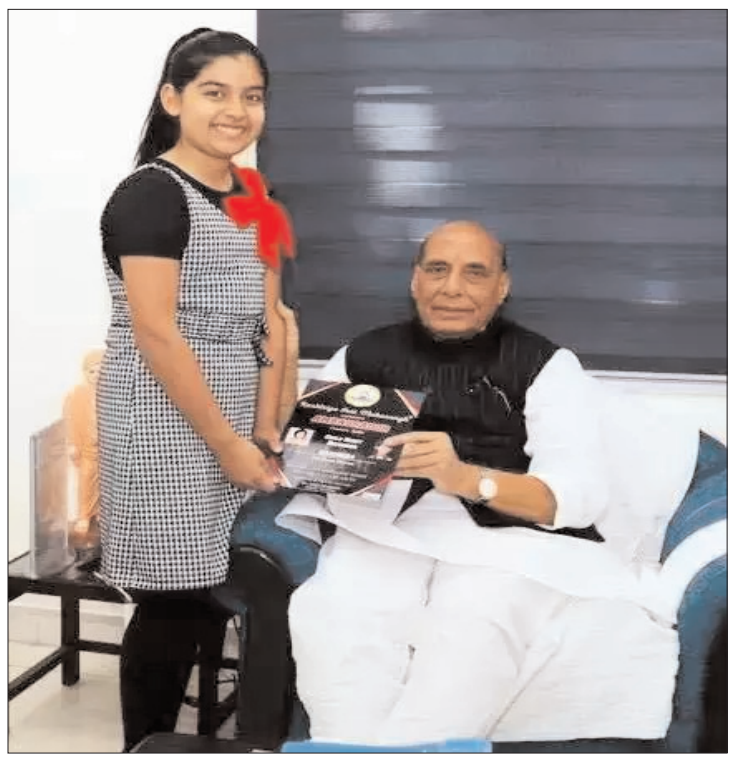

माध्यम से आत्महत्या रोकने के प्रयासों, चाइल्ड लेबर समाप्त करने एवम अन्य सामाजिक कार्यों में जुटे हैं। द राइजिंग तमसो मां ज्योतिर्गमय के फाउंडर सदस्यों पारुल शर्मा, रविंद्र कुमार मनचंदा, सोधिया जी सहित सभी सदस्यों ने राहदिखा को बधाइयां दी। जीवन में सदैव बेहतर करने के लिए प्रेरित किया।

नए मंत्रियों की नियुक्ति आदर्श आचार सहिंता का उल्लधंन- नीरज शर्मा

फरीदाबाद। एनआईटी विधायक नीरज शर्मा ने एक बार फिर भाजपा सरकार को घेरा। विधायक नीरज शर्मा का कहना था कि 16 मार्च 2024 से देश में आदर्श आचार सहिंता लागू है। लेकिन उसके बावजूद हरियाणा सरकार द्धारा 19 मार्च 2024 को मंत्री मडल का विस्तार किया और 8 मंत्रियों को राजभवन में शपथ दिलवाई। हरियाणा सरकार के गजट नोटिफिकेशन में स्पष्ट लिखा है कि माननीय राज्यपाल महोदय ने मुख्यमंत्री के परामर्श पर 8 मंत्रियों की नियुक्ति करवाई। विधायक नीरज शर्मा का कहना था कि आदर्श आचार सहिंता में नई नियुक्ति पर पूणता: रोक है और उसके बावजूद मंत्री पद पर नियुक्ति दिलवाना सरासर आदर्श सहिंता की उल्लघंना है। विधायक नीरज शर्मा का कहना था कि राष्ट्रीय हिन्दी एंव अंग्रेजी समाचार पत्रों में स्पष्ट लिखा है कि नए मंत्रियों की नियुक्ति जातिगत एंव इलाका समीकरण को देखते हुए नए मंत्रियों की नियुक्ति की है।

ऑनलाइन पोर्टल पर आई शिकायतों का अधिकारी डेलीबेसिज पर समीक्षा कर करें समाधान- सीटीएम

फरीदाबाद। सीटीएम अंकित कुमार ने कहा कि ऑनलाइन पोर्टल पर आई शिकायतों को सभी विभागों के अधिकारी डेलीबेसिज पर समीक्षा कर समाधान करें। सीटीएम ने कहा कि जिन विभागों की ज्यादा पब्लिक डीलिंग है। वे विभाग शिकायतों का निर्धारित समय पर निपटारा करें।

ऑनलाइन प्लेट फार्म प्रणाली पर सरल पोर्टल और सीपी ग्राम सहित अन्य प्राप्त हुई शिकायतों का गंभीरता के साथ निर्धारित समय पर निपटारा करना सुनिश्चित करें। सीटीएम अंकित कुमार आज शुक्रवार को लघु सचिवालय के बैठक कक्ष में सभी विभागों के अधिकारियों के साथ आन लाइन प्लेट फार्म प्रणाली सरल पोर्टल और सीपी ग्राम पोर्टल पर प्राप्त हुई शिकायतों के निपटान की समीक्षा कर बैठक की अध्यक्षता कर रहे थे। उन्होंने बैठक में उपस्थित अधिकारियों को विशेष दिशा निर्देश देते हुए सरल पोर्टल, सीपी ग्राम पोर्टल और एसएमजीटी के पेंडेंसी को तुरंत ऑनलाइन क्लियर करने के लिए भी कहा। वहीं सीएम विंडो और अन्य ऑनलाइन प्लेटफार्म प्रणाली के जरिये बेहतर क्रियान्वयन के लिए सुझाव भी सांझे अधिकारियों को कर्मचारियों के साथ किए। उन्होंने कहा कि आन लाइन प्लेट फार्म प्रणाली पर सीपी ग्राम और एसएमजीटी शिकायतों बारे नियमित रूप से समाधान किया जाए। उन्होंने कहा कि समय पर ऑनलाइन आई शिकायतों के निपटान न करने वाले विभागों के अधिकारी और प्रतिनिधि को जिम्मेदार ठहराया जाएगा। जिसमें उन्होंने आन लाइन प्लेट फार्म प्रणाली पर लम्बे समय से पड़ी शिकायतों के निराकरण के सम्बंध में दिशानिर्देश भी विभाग वार सम्बंधित अधिकारी को दिए। सीटीएम ने बैठक में क्रमवार सभी विभाग के अधिकारियों और प्रतिनिधियों को ऑनलाइन शिकायतों में सीपी ग्राम और एसएमजीटी आवेदन पर आई शिकायतों का विवरण देने के लिए कहा।

अवैध खनन करने वालों के खिलाफ करें सख्त कानूनी कार्रवाई

फरीदाबाद। जिलाधीश विक्रम सिंह ने जिला के तीनों उपमण्डलाधीशो को निर्देश देते हुए कहा कि अपने-अपने इलाकों में अवैध खनन और ओवरलोडिंग वाहनों पर सख्ती बरते। जो भी अवैध तरीके से रेत, रोड़ी, बजरी सहित तमाम बिल्डिंग मैटेरियल की तस्करी हो रही है। उस माल को काबू में लेकर नजदीकी थाने के पास में उतरवाए व वाहन और माल को जब्त कर लिया जाए। जिलाधीश विक्रम सिंह वीरवार को जिला स्तरीय टास्क फोर्स खनन की समीक्षा बैठक कर प्रशासनिक तथा पुलिस अधिकारियों को दिशा-निर्देश दे रहे थे। जिलाधीश ने सभी उपमंडलाधीश को मौके पर जाकर मुआयना करके अपनी रिपोर्ट पेश करने के आदेश दिये। जिलाधीश ने आदेश दिए है कि माइनिंग विभाग के द्वारा जब्त किए गए माल की नीलामी कराई जाए। पुलिस और प्रशासनिक अधिकारियों की टीमें निरंतर पेट्रोलिंग कर पुख्ता निगरानी करके अवैध खनन करने वालों के खिलाफ सख्त कानूनी कार्रवाई करें। जिला में अवैध खनन करने वालों के खिलाफ सम्बंधित क्षेत्र के पुलिस और प्रशासनिक अधिकारी सख्ती से पेश आकर सख्त कानूनी कार्यवाही अमल में लाना सुनिश्चित करें और इस कार्य में लगी टीमें निगरानी के लिए डेली बेसिस पर गश्त कर समीक्षा करके उसकी प्रगति रिपोर्ट भी ऑनलाइन और आफ लाइन प्लेटफार्म प्रणाली के जरिये मुख्यालय में प्रस्तुत करें। उन्होंने अधिकारियों को निर्देश देते हुए कहा कि वे अपने अपने इलाकों में अवैध खनन गतिविधियों को लेकर पूर्णत: सतर्कता बरते। जहां भी अवैध खनन करने वालों की शिकायतें और सूचनाएं मिल रही हैं। वहां पर त्वरित सख्त कानूनी कार्यवाही अमल में लाना सुनिश्चित करें। इसके साथ ही अवैध रूप से ओवरलोडिंग वाहनों को लेकर भी सख्ती से पेश आकर चालान करना सुनिश्चित करें। विक्रम सिंह ने जिला टास्क फोर्स के लिए खनन विभाग, आरटीए, वन व प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड सहित अन्य सभी विभागों के अधिकारियों से कहा कि पुलिस व प्रशासनिक अधिकारी आपसी बेहतर तालमेल के साथ सख्ती से कार्य करें। विभाग द्वारा यमुना क्षेत्र व बंद पड़े पहाड़ों का समय-समय पर मौके पर निरीक्षण जरूर करें।

छात्रा ने ब्लैकमेलिंग से तंग आकर की थी आत्महत्या

गाजियाबाद। रजापुर रेलवे फाटक पर छात्रा द्वारा ट्रेन के आगे कूदकर जान देने का मामले में नया मोड़ सामने आया है। पुलिस के मुताबिक गांव के ही प्रेमी की ब्लैकमेलिंग से तंग आकर छात्रा ने आत्महत्या की थी। आरोपी प्रेमी अश्लील वीडियो वायरल करने की धमकी देकर छात्रा पर दबाव डाल रहा था। गैरजाति से होने के कारण छात्रा मना कर रही थी। पुलिस का कहना है कि आरोपी को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया गया है।

वेव सिटी थानाक्षेत्र के गांव में वाले व्यक्ति के मुताबिक उनकी 19 वर्षीय बेटी नौ मार्च की सुबह साढ़े नौ बजे रजापुर स्थित कोचिंग सेंटर में पढ़ने गई थी। सुबह 10.07 बजे बेटी ने फोन करके कोचिंग सेंटर पहुंचने की बात बताई। उनकी बेटी रोजाना साढ़े 12 बजे तक घर पहुंच जाती थी, लेकिन इस बार नहीं आई। फोन किया तो बेटी का मोबाइल बंद

मिला। कोचिंग सेंटर जाने पर बताया कि बेटी दोपहर साढ़े 12 बजे घर चली गई थी। जानकारी करने पर पता चला कि रजापुर फाटक पर एक लड़की की ट्रेन की चपेट में आकर मौत हो गई है। मौके पर जाकर जांच-पड़ताल करने पर पता चला कि ट्रेन की चपेट में आकर मरने वाली लकड़ी कोई और नहीं, बल्कि उनकी बेटी थी। स्थानीय लोगों ने बताया कि लड़की बहुत देर से फोन पर बात कर रही थी। तभी एक ट्रेन आई और लड़की एकाएक उसके सामने कूद गई। एसीपी कविनगर अभिषेक श्रीवास्तव ने बताया कि मृतका बीए प्रथम वर्ष की छात्रा थी।

पिता की शिकायत पर अज्ञात के खिलाफ आत्महत्या के लिए मजबूर करने का केस दर्ज कर लिया था। छात्रा की सीडीआर निकाली तो नवंबर 2023 से घटना वाले दिन तक गांव के ही तुषार वाल्मीकि नाम के लड़के से उसकी 635 कॉल मिलीं। एसीपी ने बताया कि तुषार ने छात्रा की अश्लील वीडियो बना ली थी। वीडियो वायरल करने की धमकी देकर वह छात्रा पर शादी का दबाव डाल रहा था। इसी बात से तंग आकर छात्रा ने आत्महत्या कर ली। घटना के बाद तुषार ने अपना मोबाइल भी तोड़ दिया। तुषार को गिरफ्तार कर उसका टूटा हुआ मोबाइल बरामद कर लिया है।

दुनिया की बड़ी महामारी बनता अकेलापन

क्षमा शर्मा

छ दिन पहले एक खबर आई थी कि अमेरिका में चार करोड़ लोग अकेलेपन के शिकार हैं। वहां 2012 के मुकाबले 2015 तक अकेले लोगों की संख्या पंद्रह प्रतिशत तक बढ़ी। अमेरिका की लगभग चौंतीस करोड़ आबादी को देखते हुए यह एक बड़ी संख्या है। बताया जाता है कि 1960 में बिना परिवार के रहने वाले लोगों की संख्या 13 प्रतिशत थी जो अब बढ़कर 29 प्रतिशत हो गई है। अकेले रहने वाले चौंसठ प्रतिशत लोगों में अवसाद का खतरा बहुत होता है। अमेरिका में अकेले रहने वाले लोगों में से अधिकांश की उम्र पैंतालीस से चौंसठ वर्ष तक है। उसके बाद तीस वर्ष से लेकर चवालीस वर्ष तक के लोग हैं। भारत के बारे में भी कहा जाता है कि यहां पैंतालीस वर्ष के लगभग साढ़े बीस प्रतिशत लोग अकेलेपन के शिकार हैं। विश्व स्वास्थ्य संगठन का मानना है कि दुनिया भर में लगभग सवा अरब लोग अकेलेपन के शिकार हैं और अकेलापन महामारी का रूप लेता जा रहा है। विश्व में दस प्रतिशत किशोर और पच्चीस प्रतिशत बुजुर्ग अकेले रहते हैं। दुनिया के लिए यह एक गम्भीर खतरा है। यह लेखिका अकसर अपने आसपास के ऐसे लोगों से मिलती है जो अकेले रहते हैं। वे पार्कों में दिखाई देते हैं। अकसर आते-जातों से बातें करने की कोशिश करते हैं लेकिन बातें भी किस हद तक की जा सकती हैं। अनाथालय में रहने वाले बच्चों और किशोरों की स्थिति तो और भी दारुण है। उनके पास तो परिवार या अपना कहलाने वाले के नाम पर कोई नहीं है। तकनीक ने अकेलेपन को और बढ़ाया है। बच्चों से बातें करने की फुरसत माता-पिता को नहीं है और बच्चे इन दिनों माता-पिता से बात नहीं करना चाहते। वे चौबीसों घंटे मोबाइल में उलझे रहना चाहते हैं। इसके अलावा उन पर सोशल मीडिया इनफ्लुएंसर का इतना प्रभाव है कि वे उन जैसे क्यों नहीं बन सकते, वे हमेशा इस खयाल में रहते हैं। तकनीक ने जहां सुविधाएं सौंपी हैं वहां अलामतें भी कोई कम नहीं। अकेलापन इनमें सबसे बड़ी मुसीबत है।

समाज का पुराना ढांचा टूट गया है। गांवों को याद करें तो वहां अकसर बहुत से हम उम्र सवेरे-शाम चबूतरों पर बैठे नजर आते थे। कुछ अपनी कहते थे कुछ दूसरों की सुनते थे। लेकिन अब धीरे-धीरे गांवों में चबूतरा संस्कृति नष्ट हो गई है। लोग टीवी के कारण अपने घरों में बंद हो गए हैं। खेती-बाड़ी में जहां पहले बहुत से लोग काम करते थे , अब वहां भी ज्यादा लोगों की जरूरत मशीनों ने खत्म कर दी है। कम्युनिटी की जो भावना होती थी, वह कहीं खो गई है। शहरों में मिलनेङ्कजुलने के अवसर वैसे भी बहुत कम हैं। एकल परिवारों के कारण अकेलापन बढ़ता ही जाता है। बहुत से बुजुर्ग अकेले रहते हैं। बहुत से बच्चे भी माता-पिता के काम पर चले जाने के बाद घरों में अकेले होते हैं। हमारी सारी भावनाएं, जिम्मेदारियां सिर्फ पैसे के इर्द-गिर्द घूम रही हैं। सच है कि पैसे के बिना जीवन में कोई भी काम पूरा नहीं हो सकता, लेकिन यह भी कड़वी सच्चाई है कि पैसा हो भी तो भी कई बार अकेलापन काटे नहीं कटता। कई बार कुछ दान-पुण्य करने और अन्य सहायता करने के लिए एक वृद्धाश्रमों में जाना होता है। यह साधन सम्पन्न लोगों के लिए हैं और एक मंदिर से जुड़ा है। एक ही उम्र के लोग हैं। बातचीत भी करते हैं। एक साथ रहते हैं । लेकिन बातें करिए तो एक अजीब किस्म की निराशा दिखाई देती है। कइयों के पास अपने घर हैं, लेकिन वे वहां नहीं रहना चाहते क्योंकि सुरक्षा की गारंटी नहीं। बच्चे बाहर हैं और जीवनसाथी दुनिया में नहीं। घर में बच्चे हैं तो वे बेपरवाह हैं। इसलिए वहां कैसे रहें। कइयों के बच्चे विदेश में रहते हैं । वहां ये जाना नहीं चाहते। अपने परिवेश से बाहर दूसरी दुनिया में मन नहीं लगता। फिर वहां बच्चे दिनभर काम पर चले जाते हैं और दिनभर घर में अकेले ही रहना पड़ता है। कई बार बच्चों के साथ चले जाने पर तरह-तरह के भेदभाव और दुर्व्यवहार के शिकार भी होते हैं। इन्हें आठ-दस लाख की पूंजी खर्च करके यहां रहने को ठिकाना मिला है। लेकिन देखा जाए तो अपने देश में ऐसे कितने लोग होंगे जिनके पास इतनी बड़ी पूंजी है। हमारे यहां अकेलेपन को ध्यान में रखकर शायद ही कोई योजनाएं बनती हों। अकेलापन जैसे कोई समस्या ही नहीं है। फिर अकेलेपन से उपजा अवसाद और दूसरी बीमारियों के बारे में तो कौन सोचे। बुजुर्गों ने तो चलिए अपनी जिंदगी जी ली लेकिन बच्चों , किशोरों और स्त्रियों की समस्या का क्या हो। आज भी भारत में एक अकेली और साधनहीन स्त्री का रहना बड़ा मुश्किल है। दूसरी तरफ स्त्रियों को सपने दिखाने वाले विमर्शकार कहते हैं कि अकेली स्त्री सब तरह से सुखी होती है। वह आजाद होती है। आजादी की यह भी कैसी परिभाषा है कि हमें अपने अलावा कोई और नहीं चाहिए। देखा जाए तो यह बात सिवाय परिवार के कहीं और लागू नहीं की जाती । क्योंकि किसी दफ्तर में आप अकेले नहीं होते। औरों के साथ मिलकर ही काम करना पड़ता है।

इसी तरह बस , मेट्रो या रेलगाड़ी में सफर करते हुए भी आपको दूसरों के साथ ही दिन-रात काटनी होती है। जिस अमेरिका ने लोगों को यह सिखाया कि अकेलापन कितनी अच्छी चीज है, आज इस बात पर वहां त्राहि-त्राहि मची है। बुजुर्ग परेशान हैं। बच्चे-किशोर परेशान हैं। लेकिन उन विमर्शकारों को क्या कहा जाए जिन्होंने कारपोरेट के जाल में फंसकर अकेलेपन को सबसे अच्छी बात की तरह देखा। एक अकेला आदमी कम्पनियों के लिए सबसे अच्छा उपभोक्ता होता है। परिवार में मान लीजिए पांच लोग रहते हैं तो एक फ्रिज , एक टीवी, एक गैस, एक कार या स्कूटर, एक वॉशिंग मशीन , एक घर से ही काम चल जाता है। लेकिन यही पांच जब अकेले रहते हों तो सबके लिए अलग-अलग चीजें चाहिए। इसी में कम्पनियों और उद्योग का भारी मुनाफा छिपा है। इसीलिए अकेलेपन की एक चमकीली तसवीर तमाम प्रचार माध्यमों के जरिये दशकों से परोसी जा रही है। किसी ने इन बातों पर शोध नहीं किया है कि आखिर मनुष्य को अकेला करके आप उसका क्या भला कर रहे हैं। हां नारा जरूर लगा रहे हैं कि अपने लिए जिओ, एंजॉय करो, घूमो , फिरो क्योंकि यह जिंदगी एक ही बार मिलती है। जिंदगी भर बस दूसरों की जिम्मेदारियां उठाते रहोगे तो अपनी जिंदगी कब जिओगे। लेकिन जरा किसी अकेले रहने वाले से तो पूछें कि वह वास्तव में कितना खुश है। उसे जीवन की यह रंगीली तसवीर सिवाय काली के कुछ और नहीं दिख रही। आज पश्चिम में इसीलिए परिवार को वापस लाने के बारे में सोचा जा रहा है। क्योंकि वहां के समाज ने अकेले रहकर देख लिया है। पता चल गया है कि अकेले रहने के मुकाबले अपनों के बीच रहना कितना सुखद है। क्या हम भी कोई सीख ले सकते हैं।

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद का एक शोध चार साल पहले ही चेतावनी दे चुका है कि सन् 2030 तक हमारे धरती के तापमान में 0.5 से 1.2 डिग्री सेल्सियस तक की वृद्धि अवश्यंभावी है। जान लें कि तापमान में एक डिग्री बढ़ोतरी का अर्थ है कि खेत में 360 किलो फसल प्रति हेक्टेयर की कमी आ जाना। इस तरह जलवायु परिवर्तन के चलते खेती के लिहाज से 310 जिलों को संवेदनशील माना गया है। इनमें से 109 जिले बेहद संवेदनशील हैं जहां आने वाले एक दशक में ही उपज घटने, पशु धन से लेकर मुर्गी पालन व मछली उत्पाद तक कमी आने की संभावना है। सामने दिख रहा है कि संकट अकेले पानी का ही नहीं है, असल संकट है पानी के प्रबंधन का। अलग-अलग किस्म का पानी, अलग-अलग इस्तेमाल के लिए कैसे छांटा जाए, इस बारे में तंत्र विकसित करना और सबसे बड़ी बात इसके लिए जागरूकता फैलाना अनिवार्य है। खासकर ग्रामीण अंचल में यह बात समझाना जरूरी है कि भूगर्भ से उलीच कर निकाला जा रहा पानी अनंत नहीं है और यह एक बार समाप्त हुआ तो लौट कर आने वाला नहीं है। भारत में जिस साल कम बरसात होती है, उस साल भी इतनी कृपा बरसती है कि सारे देश की जरूरत पूरी हो सकती है, लेकिन हमारी असली समस्या बरसात की हर बूंद को रोक रखने के लिए हमारे पुरखों द्वारा बनाए तालाब-बावड़ी या नदियों की दुर्गति होना भी है। बारिश कुछ हिस्सा तो भाप बनकर उड़ जाता है और कुछ समुद्र में चला जाता है। हम यह भूल जाते हैं कि प्रकृति जीवनदायी संपदा यानी पानी हमें एक चक्र के रूप में प्रदान करती है और इस चक्र को गतिमान रखना हमारी जिम्मेदारी है।

बर्बादी न रोकी तो बेपानी हो जायेगा देश

पंकज चतुर्वेदी

दिल्ली एनसीआर के कई इलाकों को इस बात के लिए गर्व से प्रचारित किया जाता है कि वहां घरों में गंगा-वॉटर आता है। ऐसे इलाकों में फ्लैट के दाम इसी कारण अधिक होते हैं। जिस गंगा जल को घरों में एक बोतल में पवित्र निशानी के तौर पर पूजा-स्थान पर रखा जाता है, वह गंगा जल लाखों घरों में शौचालय से लेकर कपड़े धोने तक में इस्तेमाल होता है। 'हर घर जल' जैसी योजनाओं के बावजूद सरकारी दस्तावेज यह मानते हैं कि अब भारत के कोई 360 जिलों में पानी की मारामारी स्थाई डेरा डाल चुकी है। एक तरफ बढ़ती गर्मी और दूसरी तरफ बढ़ती प्यास और खेतों के लिए अधिक पानी की जरूरत, इसके साथ ही साल दर साल बरसात के दिनों में कमी आ रही है। जाहिर है कि पानी किसी कारखाने में बन नहीं सकता और हमारी जिम्मेदारी बन गई है कि पानी को किफायत से खर्च करें। मौका मिले इसे सहेज कर रखें।

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद का एक शोध चार साल पहले ही चेतावनी दे चुका है कि सन् 2030 तक हमारे धरती के तापमान में 0.5 से 1.2 डिग्री सेल्सियस तक की वृद्धि अवश्यंभावी है। जान लें कि तापमान में एक डिग्री बढ़ोतरी का अर्थ है कि खेत में 360 किलो फसल प्रति हेक्टेयर की कमी आ जाना। इस तरह जलवायु परिवर्तन के चलते खेती के लिहाज से 310 जिलों को संवेदनशील माना गया है। इनमें से 109 जिले बेहद संवेदनशील हैं जहां आने वाले एक दशक में ही उपज घटने, पशु धन से लेकर मुर्गी पालन व मछली उत्पाद तक कमी आने की संभावना है। सामने दिख रहा है कि संकट अकेले पानी का ही नहीं है, असल संकट है पानी के प्रबंधन का। अलग-अलग किस्म का पानी, अलग-अलग इस्तेमाल के लिए कैसे छांटा जाए, इस बारे में तंत्र विकसित करना और सबसे बड़ी बात इसके लिए जागरूकता फैलाना अनिवार्य है। खासकर ग्रामीण अंचल में यह बात समझाना जरूरी है कि भूगर्भ से उलीच कर निकाला जा रहा पानी अनंत नहीं है और यह एक बार समाप्त हुआ तो लौट कर आने वाला नहीं है। भारत में जिस साल कम बरसात होती है, उस साल भी इतनी कृपा बरसती है कि सारे देश की जरूरत पूरी हो सकती है, लेकिन हमारी असली समस्या बरसात की हर बूंद को रोक रखने के लिए हमारे पुरखों द्वारा बनाए तालाब-बावड़ी या नदियों की दुर्गति होना भी है। बारिश कुछ हिस्सा तो भाप बनकर उड़ जाता है और कुछ समुद्र में चला जाता है। हम यह भूल जाते हैं कि प्रकृति जीवनदायी संपदा यानी पानी हमें एक चक्र के रूप में प्रदान करती है और इस चक्र को गतिमान रखना हमारी जिम्मेदारी है। इस चक्र के थमने का अर्थ है हमारी जिंदगी का थम जाना। प्रकृति के खजाने से हम जितना पानी लेते हैं उसे वापस भी हमें ही लौटाना होता है। पानी के दुरुपयोग के बारे में एक नहीं, कई चौंकाने वाले तथ्य हैं जिसे जानकर लगेगा कि सचमुच अब हममें थोड़ा-सा भी पानी नहीं बचा है। कुछ तथ्य इस प्रकार हैं-मुंबई में रोज गाड़ियां धोने में ही 50 लाख लीटर पानी खर्च हो जाता है। दिल्ली, मुंबई और चेन्नई जैसे महानगरों में पाइपलाइनों के वॉल्व की खराबी के कारण 17 से 44 प्रतिशत पानी प्रतिदिन बेकार बह जाता है। ब्रह्मपुत्र नदी का प्रतिदिन 2.16 घन मीटर पानी बंगाल की खाड़ी में चला जाता है। भारत में हर वर्ष बाढ़ के कारण करीब हजारों मौतें व अरबों का नुकसान होता है। यह भी कड़वा सच है कि हमारे देश में महिलाओं को पीने के पानी के जुगाड़ के लिए हर रोज ही औसतन साढ़े पांच किलोमीटर पैदल चलना पड़ता है। पानीजन्य रोगों से विश्व में हर वर्ष 22 लाख लोगों की मौत हो जाती है। पूरी पृथ्वी पर एक अरब 40 घन किलोलीटर पानी है। इसमें से 97.5 प्रतिशत पानी समुद्र में है जोकि खारा है, शेष 1.5 प्रतिशत पानी बर्फ के रूप में ध्रुवीय क्षेत्रों में है।

बचा एक प्रतिशत पानी नदी, सरोवर, कुआं, झरना और झीलों में है जो पीने के लायक है। इस एक प्रतिशत पानी का 60वां हिस्सा खेती और उद्योगों में खपत होता है। बाकी का 40वां हिस्सा हम पीने, भोजन बनाने, नहाने, कपड़े धोने एवं साफ-सफाई में खर्च करते हैं। यदि ब्रश करते समय नल खुला रह गया है तो पांच मिनट में करीब 25 से 30 लीटर पानी बरबाद होता है। बॉथ टब में नहाते समय धनिक वर्ग 300 से 500 लीटर पानी गटर में बहा देते हैं। मध्यम वर्ग भी इस मामले में पीछे नहीं है जो नहाते समय 100 से 150 लीटर पानी बर्बाद कर देता है। हमारे समाज में पानी बर्बाद करने की राजसी प्रवृत्ति है, जिस पर अभी तक अंकुश लगाने की कोई कोशिश नहीं हुई है। यदि अभी पानी को सहेजने और किफायती इस्तेमाल पर काम नहीं किया गया तो वह दिन दूर नहीं जब सरकार की हर घर नल जैसी योजनाएं जल-स्रोत न होने के कारण रीती दिखेंगी। चप्पे-चप्पे पर झील-तालाबों के लिए मशहूर बंगलूरु का उदाहरण सामने है, जहां गर्मी शुरू होने से पहले ही पानी की राशनिंग हो रही है। जान लें, पानी की कमी, मांग में वृद्धि तो साल-दर-साल ऐसी ही रहेगी। यह जागने का वक्त है।

विचार

आखिर क्यों विभाजित नहीं होती भाजपा?...

राकेश अचल

भारत की राजनीति में कांग्रेस समेत अधिकाँश दल अक्सर विभाजित होते आये हैं लेकिन भाजपा में अभी तक स्पष्ट विभाजन कभी हुआ। भाजपा टूटी लेकिन ऐसी नहीं की उसकी टूटन से भाजपा का भत्ता ही बैठ जाए। भाजपा में इस समय पिछले 44 साल के इतिहास में सबसे ज्यादा असंतोष है लेकिन भाजपा विभाजित होने वाली नहीं है। भाजपा में अब तक गुजरात और मध्य प्रदेश में ही बगावत हुई थी लेकिन अब बगावत के सुर कर्नाटक से उठ रहे है। भाजपा ने विभाजन का दर्द कभी ढंग से महसूस ही नहीं किया जबकि कांग्रेस तो बीते सौ साल में एक बार नहीं बल्कि बार-बार विभाजित हुई, किन्तु कभी समाप्त नहीं हुई। आज भी कांग्रेस की देश के अनेक राज्यों में कांग्रेस की सरकारें हैं। तेलंगाना, हिमाचल और झारखंड अभी तक कांग्रेस का ध्वज उठाने वाले राज्य हैं। दो आम चुनाव जीतने के बाद भी भाजपा इस देश को कांग्रेस मुक्त नहीं कर पायी है। 2024 के आम चुनाव में क्या होगा, ये कहना कठिन है। आपको बाटा दूँ कि 1947 में देश के स्वतंत्र होने से लेकर से लेकर 2019 तक, 17 आम चुनावों में से, कांग्रेस ने 6 में पूर्ण बहुमत जीता है और 4 में सत्तारूढ़ गठबंधन का नेतृत्व किया है। इस तरह कांग्रेस कुल 49 वर्षों तक वह केंद्र सरकार का हिस्सा रही। कांग्रेस ने देश को एक -दो नहीं बल्कि पूरे सात प्रधानमंत्री दिए हैं। प्रथम प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू, लाल बहादुर शास्त्री, इंदिरा गांधी, राजीव गांधी, पी.वी. नरसिम्हा राव और डा मनमोहन सिंह कांग्रेस के अंतिम प्रधानमंत्री बने। कांग्रेस 2014 के आम चुनाव में एक बार सत्ताच्चुत हुई तो अब तक सत्तारूढ़ नहीं हो पायी। कांग्रेस ने आज़ादी से अब तक का सबसे ख़राब आम चुनावी प्रदर्शन 2014 में किया और 543 सदस्यीय लोक सभा में केवल 44 सीट जीती। 2019 के आम चुनाव में कांग्रेस 44 से आगे बढ़कर 52 पर आ पायी, अब 18 वे आम चुनाव में कांग्रेस की छलांग उसे कहाँ तक ले जा पाएगी ये भविष्य के गर्त में हैं। मै बात कर रहा था भाजपा में असंतोष की। भाजपा में पिछले 44 साल में 11 अध्यक्ष चुने गए, मौजूदा अध्यक्ष जेपी नड्डा फिलहाल एक्सटेंशन पर हैं। भाजपा को सत्ता के शीर्ष तक पहुँचाने के लिए भाजपा का रथ खींचने वालों में अटल बिहारी बाजपेयी, डॉ मुरली मनोहर जोशी, बंगारू लक्ष्मण, कुशाभाऊ ठाकरे और जेना कृष्णमूर्ति के अलावा वैंकया नायडू, राजनाथ सिंह, नितिन गडकरी और अमित शाह का नाम प्रमुख है। भाजपा में असंतोष लालकृष्ण आडवाणी के समय भी था और आज भी है। आडवाणी के समय में मध्य-प्रदेश में उमा भारती और गुजरात में केशूभाई के बाद शंकर सिंह बाघेला जैसों ने बगावत की, अलग पार्टियां बनाई, लेकिन वे कभी राष्ट्रीय पार्टियां नहीं बन पायीं और अंततः भाजपा से अलग हुई पार्टियां भाजपा में ही विलीन हो गयीं। पिछले एक दशक से सत्ता पर काबिज भाजपा की चाल, चरित्र और चेहरे में बहुत तब्दीली आयी है। आज भाजपा कारपोरेट तरीके से चल रही है। भाजपा में बगावत का मतलब बाग़ी साथी का मटियामेट करना होता है। जो पार्टी नेतृत्व के खिलाफ गया उसको मिट्टी में मिला दिया गया हो। यशवंत सिन्हा से लेकर तमाम लोग हैं जो मौजूदा नेतृत्व के खिलाफ मोर्चा खोलने में घबड़ा रहे हैं। मौजूदा नेतृत्व के आतंक के बावजूद हरियाणा में, राजस्थान में, आंधी प्रदेश में और अब कर्नाटक में बगावत के स्वर सुनाई दे रहे हैं। ताजा खबर ये है कि बेटे को टिकट नहीं मिलने से नाराज कर्नाटक के पूर्व उपमुख्यमंत्री के.एस. ईश्वरप्पा ने शिवमोग्गा से निर्दलीय चुनाव लड़ने की घोषणा की है। इस लोकसभा सीट से भाजपा ने बी एस येदुयुरप्पा के बेटे बी वाई राघवेंद्र को उम्मीदवार बनाया है। बुधवार को के.एस. ईश्वरप्पा ने येदियुरप्पा परिवार पर जमकर निशाना साधा। उन्होंने दावा किया कि शिवमोग्गा से वह चुनाव जीतेंगे, चुनाव नतीजों के बाद येदियुरप्पा के दूसरे बेटे बी.वाई. विजयेंद्र से प्रदेश भाजपा अध्यक्ष का पद छिन जाएगा। उन्होंने अपने बेटे कांतेश का टिकट कटने का ठीकरा भी येदियुरप्पा पर ही फोड़ दिया। इस बयान के बाद येदियुरप्पा का भी बयान आया। उन्होंने कहा कि विजयेंद्र को जिम्मेदारी केंद्रीय नेतृत्व ने दी और जनता उनके आरोपों का जवाब देगी। आम चुनाव कोई प्रक्रिया शुरू होने के बाद भाजपा में असंतोष को दबाने के लिए भाजपा का नेतृत्व क्या सबके साथ यशवंत सिन्हा की तरह ही व्यवहार करेगा या कोई दूसरा रास्ता खोजेगा ये कहना कठिन है। भाजपा का असंतोष कांग्रेस के लिए कितना फायदेमंद होगा कहना जल्दबाजी होगी । हाँ यदि भाजपा की ही तरह कांग्रेस भी अपने यहां भाजपा के असंतुष्टों के लिए शरणार्थी शिविर खोल ले तो शायद बात बन जाए। वरुण गांधी से लेकर पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेई के भांजे अनूप मिश्रा तक असंतुष्टों की कतार में हैं। नेतृत्व के मामले में दोनों दलों में जमीन - आसमान का अन्यत्र है। कांग्रेस का नेतृत्व जहाँ गांधी परिवार की छाया से मुक्त नहीं है वहीं भाजपा का नेतृत्व इस समय स्वयंभू हो गया है। उसके ऊपर राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ का नियंत्रण भी नहीं रह गया है।

एक नजर

बिहार के भोजपुर में बेकाबू ट्रक ने बाइक सवारों को रौंदा, चार की मौत, दो की हालत गंभीर

पटना (बिहार),एजेंसी। राज्य के भोजपुर जिले में बेकाबू ट्रक ने शुक्रवार को बाइक सवार छह लोगों को रौंद दिया, जिसमें चार की मौत हो गई जबकि दो की हालत गंभीर बनी हुई है। पुलिस के मुताबिक भोजपुर जिले के बिहिया-बिहटा स्टेट हाइवे पर दो बाइक पर छह लोग सवार होकर जा रहे थे। इसी दौरान बेकाबू ट्रक ने दोनों बाइकों को टक्कर मार दी और रौंदते हुए आगे बढ़ गया। बाइक सड़क पर कई मीटर तक घिसटती रही। दुर्घटना में मौके पर ही दो लोगों ने दम तोड़ दिया जबकि अन्य दो की मौत इलाज के दौरान हुई। मृतकों में पिरों थाना क्षेत्र के धनौली नौआ गांव निवासी बीर कुंवर राम (40), उनकी बेटी शिवानी कुमारी (06), तरारी थाना क्षेत्र के तिरोजतिरोजपुर गांव निवासी अंटू कुमार (17 साल) और अभिषेक कुमार (18) हैं। पीरो के डीएसपी राहुल सिंह के अनुसार पहले दो बाइक के बीच टक्कर होने के बाद पीछे से ट्रक द्वारा कुचले जाने की बात सामने आ रही है। घटनास्थल पर पीरो थाना के अलावा सिकरहटा और इमादपुर थाना की पुलिस पहुंचकर सड़क जाम कर रहे लोगों को समझाने बुझाने में लगी हुई है। हादसा पूर्वाह्न साढ़े ग्यारह बजे के आसपास की है। डीएसपी ने बताया कि पुलिस हादसे की जांच-पड़ताल कर रही है।

बेतिया में प्रतिबंधित मांस व आधा दर्जन मवेशी सहित तीन गिरफ्तार

बेतिया। बेतिया टाउन के कलीबाग गड़वान टोली में प्रतिबंधित मांस की बिक्री की सूचना पर कालीबाग थाने की पुलिस ने छापेमारी कर तीन लोगों को गिरफ्तार किया है। छपामारी के दौरान प्रतिबंधित मांस व आठ पशु भी जब्त किया गया है। शुक्रवार की सुबह इस प्रतिबंधित कारोबार में शामिल तीन कारोबारियों को भी पुलिस ने गिरफ्तार किया गया है। जानकारों ने बताया कि कालीबाग थाना के पुलिस के नेतृत्व में महिला थानाध्यक्ष सुधा कुमारी समेत अन्य पुलिस पदाधिकारी गाड़वान टोली में पहुंचे। पुलिस टीम को देखते ही अफरा-तफरी मच गयी। वहां के दो घरों में प्रतिबंधित मांस बेचे जाने की पुष्टी होने पर पुलिस की टीम ने उन घरों की तलाशी ली। तलाशी के दौरान वहां से आठ पशु तथा भारी मात्रा में प्रतिबंधित मांस व औजार सहित अन्य समान को पुलिस ने जप्त किया है।

नवादा में जहरीले फल खाने वाले 7 में से दो बच्चों की हालत गंभीर

नवादा। नवादा में जंगली फल खाने से बीमार 7 में से दो बच्चो की स्थिति गम्भीर बनी हुई है। चिकित्सकों ने शुक्रवार की शाम बीमार बच्चों के परिजनों को हायर सेंटर में ले जाकर इलाज कराने की सलाह दी है। दो बच्चे की हालत बिगड़ गयी है. सभी क़ो नवादा सदर अस्पताल में इलाज क़े लिए भर्ती कराया गया है। सभी का इलाज किया जा रहा है, बहरहाल बच्चों की हालत खराब बतायी जा रही है. बता दें कि यह घटना जिले के मुफसिल थाने के गोनवां गांव में हुई है। नवादा क़े शिवनगर गोनावां मोहल्ले में यह घटना हुई थी,जिसमें मुहल्ले क़े विकास कुमार,लक्षण कुमार 8 साल, रौशन कुमार 6 साल, प्रदीप कुमार, संदीप कुमार, आशिक कुमार 12 साल शामिल है। अस्पताल में परिजनों ने बताया कि बच्चे खेलने के दौरान ही फल खा लिए थे ।जहरीले फल रेंगनी के कांटे का फल जैसा दिख रहा था ।बता दें कि गोनवां गाँव क़े समीप सरकारी आईटीआई के पास नर्सरी में सभी बच्चे खेल रहा था, उसी दौरान जंगली फल पर नजर पड़ा और पका हुआ देख सभी ने खा लिया। जंगली फल खाने के थोड़ी देर बाद एक -एक कर सभी बच्चे उल्टी करने लगे और धीरे-धीरे सभी बेहोश होने लगे। सभी क़े परिजनों को इसकी जानकारी मिली तो जानकारी मिलते हीं सभी को सदर अस्पताल में भर्ती कराया गया। जहां दो बच्चों की हालत ज्यादा खराब बताई जा रही है. पांच बच्चों के हालत स्थिर है। फिलहाल डॉक्टरों के द्वारा सभी का इलाज किया जा रहा है। इलाज कर रहे चिकित्सकों ने बताया कि इस तरह के जहरीले फल खाने वालों की स्थिति किसी भी समय खराब हो सकती है। एक सप्ताह तक जीवन पर खतरा बने रहने की बात डॉक्टर ने कही है।

सरपंच प्रतिनिधि गांजा के साथ गिरफ्तार

अररिया। जिले के फुलकाहा थाना पुलिस ने शुक्रवार के अहले सुबह थाना क्षेत्र के अंचरा घूरना मुख्य मार्ग में भवानीपुर पुलिस बैरियर के समीप वाहन चेकिंग अभियान में 27 किलो गांजा के साथ पथराहा पंचायत के सरपंच प्रतिनिधि मो वाकिब एवं उसके एक सहयोगी को गिरफ्तार किया। सरपंच प्रतिनिधि के साथ बाइक पर पीछे बैठा पथराहा निवासी मो तोहिद को भी पुलिस ने गिरफ्तार किया।फुलकाहा थानाध्यक्ष अमित कुमार ने जानकारी देते बताया कि गांजे की तस्करी की लगातार सूचना मिल रही थी। नेपाल से तस्करी के माध्यम से भारतीय क्षेत्र में लाकर बाइक से अन्य जगहों में सप्लाई किया जाता है। जिसके आलोक में शुक्रवार को मोटरसाइकिल में गांजा लोड कर घूरना से अचरा के तरफ आने के क्रम में कार्रवाई की गई। पुलिस ने बताया कि सरपंच प्रतिनिधि पूर्व में मवेशी चोरी के आरोप में कई बार जेल जा चुका है और हाल ही में वे जेल से निकला था।बरामद गांजे की जांच के लिए अररिया की जिला कल्याण पदाधिकारी अजीत कुमार पहुंचकर गंजे की जांच कर उसे सील कर दिया है। फुलकाहा थानाध्यक्ष अमित कुमार ने बताया कि गिरफ्तार सरपंच प्रतिनिधि मो वाकिब और उनके सहयोगी को न्यायिक हिरासत में जेल भेज दिया गया है।

पूर्व सैनिकों के दो दिवसीय आउटरीच कैंप में 400 आवेदन का हुआ निपटारा

सहरसा,एजेंसी। कोसी प्रमंडल के पूर्व सैनिकों वीर नारियों एवं शहीद परिवार की सुधि लेने का निर्णय लिया। कई वर्षों के संघर्ष के उपरांत पूर्व सैनिक सेवा परिषद कोसी प्रमंडल के संगठन प्रभारी गोपाल मिश्र के पत्राचार पर प्रधान नियंत्रक, रक्षा लेखा कार्यालय प्रयागराज प्रमुख श्री शाम देव, आईडीएस महोदय ने मांग स्वीकार कर पांच सदस्यों का दल आउटरीच कैंप कोऑर्डिनेटर मनोज कुमार सिंह के नेतृत्व में सहरसा भेजा। इसमें मुख्य अतिथि प्रदेश अध्यक्ष पूर्व सैनिक सेवा परिषद बिहार कर्नल एमपी सिंह थे।तथा सेना स्टेशन हैडक्वाटरटर कटिहार के दो अधिकारियों ने भाग लिया।कार्यक्रम के पहले दिन शहीद सम्मान कर लगभग 147 पूर्व सैनिकों वीर नारियों एवं शहीद परिवारों के पेंशन से संबंधित समस्या का निदान किया गया।

इस कार्य में रक्षा लेखा कार्यालय प्रयागराज से अभिजीत कुमार, जितेंद्र कुमार शर्मा, सत्येंद्र कुमार चक्रवर्ती तथा ऋषिकेष तिवारी सभी एएओ रैंक के अधिकारी पूरी लगन से कार्य संपादन कर रहे हैं। इसमें सुबह 10ः00 से पूर्व सैनिकों वीर नारियों एवं शहीद परिवारों के पेंशन से संबंधित समस्या का निदान किया गया। आज बड़ी संख्या में पूर्व सैनिक कोसी सीमांचल मिथिलांचल सहित पूरे बिहार से यहां पहुंचकर इस ऐतिहासिक आयोजन से लाभान्वित हो रहे हैं। कई वीर नारियों एवं पूर्व सैनिकों का पेंशन लाइफ सर्टिफिकेट सहित अन्य कारणों से बंद पड़ा था। सही जानकारी तथा कम कंप्यूटर जानकारी के कारण पैसों के अभाव में इलाज नहीं करवा पा रहे थे। इस जटिल समस्या का निदान प्रयागराज टीम बहुत ही कुशलता से कर यहां के पेंशनरों का दिल जीत रहे हैं। इस तरह का कैंप पहली बार हो रहा है। मगर सरकार व विभागों को दूर दराज के इलाकों को प्राथमिकता देकर कैंप लगाने की जरूरत है।छोटे शहरों में अच्छे होटल व हवाई अड्डा नहीं होने के कारण यहां कोई आना नहीं चाहता है। इसके लिए कोसी प्रमंडल का पूर्व सैनिक सेवा परिषद परिवार प्रधान नियंत्रक, रक्षा लेखा श्याम देव साहब व उनकी टीम को हृदय से धन्यवाद करते हुए आभार प्रकट करता है। प्रदेश अध्यक्ष कर्नल एमपी सिंह ने फोन पर प्रधान नियंत्रक महोदय को धन्यवाद कर आभार जताया और कोसी मुख्यालय सहरसा में कोई भी मूलभूत सुविधाओं के नहीं होने से अवगत कराया। प्रधान नियंत्रक महोदय ने दुख व्यक्त करते हुए अगले 6 महीने में एक स्पर्श कार्यालय सहरसा में खुलवाने का आश्वासन दिया जिससे यहां के डिफेंस पेंशनरों का तुरंत कल्याण संभव हो सकेगा। इस कैंप में लगभग 400 डिफेंस पेंशनरों का समाधान यही होने तथा शेष बचे हुए पेंशनरों का आवेदन पत्र लेकर टीम प्रयागराज जाएगी और इसका निष्पादन वहीं से किया जाएगा। इस दो दिवसीय कैंप का आयोजन यहां के डिफेंस पेंशनर परिवार जनों ने बहुत सराहना की और ऐसे कैंप इस क्षेत्र में अधिक लगवाने के साथ-साथ ईसीएचएस पॉलीक्लीनिक, कैंटीन एवं जिला सैनिक कल्याण कार्यालय कोसी मुख्यालय सहरसा में होने पर जोड़ देने को कहा गया।

दुष्कर्मी रिश्तेदार रेलवे कर्मचारी को 14 साल की सश्रम कारावास, 50 हजार जुर्माने की सजा

अररिया। अपर जिला एवं सत्र न्यायाधीश प्रथम मनोज कुमार तिवारी के कोर्ट ने दुष्कर्म के मामले में रिश्तेदार रेलवे कर्मचारी को 14 साल की सश्रम कारावास की सजा सुनाई है। अपने फैसले के कोर्ट ने दोषी को 50 हजार रुपये जुर्माने की सजा भी सुनाई है। जुर्माने की रकम की अदायगी नहीं करने पर दोषी दुष्कर्मी को तीन माह की अतिरिक्त सजा भुगतने के अलावा जुर्माने की रकम दोषी को पीड़िता के पक्ष में करने का आदेश अपने निर्णय में दिया। न्यायालय ने सजा सत्र वाद संख्या 200/2023 में यह फैसला सुनाया।जो अररिया महिला थाना प्राथमिकी कांड संख्या -71/2021 से संबंधित है। सजा पाए जाने वाले दोषी पीड़िता के रिश्तेदार हैं और रेलवे के कर्मचारी हैं।दोषी दुष्कर्मी रेलवे ग्रुप डी के पद पर कुसियारगांव में पदस्थापित हैं। सजा पाए जाने वाले दोषी कटिहार के मैथिल टोला शिव मंदिर निवासी सुग्रीव साह के 39 वर्षीय पुत्र अभय रंजन उर्फ कुमार अभय रंजन है।

दोषी अभय रंजन ने पंद्रह सितम्बर 2021 को अपनी पत्नी की बीमारी का बहाना बनाकर पीड़िता के माता पिता से घर के कामकाज में सहयोग करने का भरोसा दिलाकर लाया था।पीड़िता के माता पिता ने दोषी रिश्तेदार के यहां पीड़िता को उसके छोटे भाई के साथ भेज दिया। कुसियारगांव में रेलवे के सरकारी क्वार्टर में दोषी ने दोनों भाई बहन को रखा। पत्नी की गैरमौजूदगी में पत्नी के पूर्णिया से शाम तक आने का झांसा देकर पीड़िता और उसके भाई को रोक रखा। फिर 16 सितम्बर 2021 को चाय में मादक पदार्थ देकर छोटे भाई को दूसरे कमरे में भेज दिया गया और दोषी अभय ने बेहोशी की हालत में पीड़िता के साथ दुष्कर्म की घटना को अंजाम दिया। इतना ही नहीं पीड़िता के साथ दुष्कर्म का वीडियो बनाकर ब्लैकमेल कर उसके साथ यौन शोषण करता रहा।

पीड़िता के घर जाने की जिद पर प्राइवेट गाड़ी से पूर्णिया छोड़ दिया गया।जहां से पीड़िता किसी तरह घर पहुँची और अपने साथ हुई आपबीती परिजनों को सुनाई। पीड़िता अपने गृह जिला कटिहार में प्राथमिकी दर्ज करवाने के लिए पुलिस अधीक्षक, कटिहार और स्थानीय थाना क्षेत्र में गई तो क्षेत्राधिकार को लेकर अररिया में ही केस दर्ज करवाने के लिए कहा गया। तब पीड़िता ने महिला थाने में प्राथमिकी दर्ज कराई।इसके बाद भी दोषी के द्वारा पीड़िता को उसका वीडियो वायरल करने और रेलवे के यूनियन का प्रतिनिधि होने का धौस दिखाकर मामले को रफा दफा करने का दबाव बनाया गया।

सजा की बिंदु पर सुनवाई करते हुए वरीय अधिवक्ता कृष्ण मोहन सिंह ने दोषी के छोटे छोटे बच्चों और असहाय पत्नी का हवाला देते हुए कम से कम सजा सुनाई जाने की गुहार लगाई। जबकि अपर लोक अभियोजक राजानंद पासवान ने रेलवे क्वार्टर में पीड़िता की इच्छा के विरुद्ध नशीली दवा खिला कर घिनौनी कृत्य को अंजाम देने वाले दोषी के लिए अधिकतम सजा की मांग रखा। दोनों ही पक्षों की दलीलें सुनने के बाद न्यायालय ने दोषी की सजा मुक्कर की।

स्वीप कोषांग ने मतदाता जागरूकता रैली निकालकर मतदाताओ को किया जागरूक

सहरसा,एजेंसी। बिहार दिवस के अवसर पर जिला निर्वाचन पदाधिकारी सह जिलाधिकारी के निर्देश पर स्वीप कोषांग के सौजन्य से समाहरणालय परिसर से रैली निकालकर मतदाता जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। उक्त अवसर पर अपर समाहर्ता ज्योति कुमार सदर एसडीओ प्रदीप कुमार झा,नोडल पदाधिकारी स्वीप कोषांग सह निदेशक डीआरडीए शैलदासन द्वारा हरी झंडी दिखाकर रैली को रवाना किया गया। स्कूली बच्चियों द्वारा आयोजित यह साइकिल रैली समाहरणालय से निकलकर, डीआईजी आफिस,विश्वशसरैया चौक, केन्द्रीय विद्यालय, अम्बेदकर चौक होते हुए निर्धारित स्थल पर समापन किया गया। इस दौरान मतदाताओं को लोकसभा आम निर्वाचन-2024 के दौरान मताधिकार के उपयोग हेतु प्रेरित किया गया। वही स्वीप कोषांग ने उक्त अवसर पर कहा कि लोकतंत्र में मताधिकार सर्वाधिक महत्वपूर्ण होता है, जो व्यक्ति को मनपसंद जन प्रतिनिधि चुनने का अवसर प्रदान करता है। अत: प्रत्येक मतदाता को निश्चित रूप से उत्साह पूर्वक मतदान प्रक्रिया में भाग लेना चाहिए। उन्होने कार्यक्रम में उपस्थित विद्यालय के छात्रों को संबोधित करते हुए कहा कि वे मतदाता जागरूकता अभियान के सक्रिय साझादार बनें एवं अपने माता-पिता के साथ-साथ पड़ोसियों को भी मताधिकार के उपयोग हेतु प्रेरित करें। वही जिला प्रशासन ने भी मतदान प्रक्रिया में अधिकाधिक सहभागिता की अपील की है। मतदाता जागरूकता अभियान में बड़ी संख्या में दर्शक उपस्थित थे।ज्ञात हो कि आज बिहार स्थापना दिवस पर संध्या में दीप प्रज्ज्वलित किया जायेगा।

बिहार दिवस पर मतदाता जागरुकता को लेकर जिला प्रशासन और मीडिया के क्रिकेट मैच का आयोजन

पूर्वी चंपारण। बिहार दिवस के अवसर पर मतदाता जागरूकता अभियान के तहत मोतिहारी गांधी मैदान में जिला प्रशासन और मीडिया एकादश के बीच क्रिकेट मैच का आयोजन किया गया।मैच से पूर्व जिला निर्वाचन पदाधिकारी-सह-जिलाधिकारी सौरव जोरवाल ने उपस्थित लोगों को मतदान प्रक्रिया में हिस्सा लेने, अपना-अपना मतदान करने संबंधी मतदाता जागरूकता शपथ दिलाई गई। क्रिकेट मैच 12 ओवर का रखा गया था। मैच में टॉस मीडिया टीम के कप्तान सचिन पांडेय ने जीतकर पहले बल्लेबाजी करने का निर्णय लिया। मीडिया की टीम की ओर से शुरुआत बहुत अच्छी रही। टीम के ओपनर बल्लेबाज अभिषेक कुमार ने 102 रनों की ताबड़तोड़ पारी खेली जिसमें 11 छक्के और 06 चौके लगाए। मीडिया की टीम निर्धारित 12 ओवर में दो विकेट खोकर कुल 146 रन बनाई।

जवाब में उतरी जिला प्रशासन की टीम की शुरुआत भी उसी अंदाज में हुई। टीम ने छह ओवर में 90 रनों से ज्यादा स्कोर बना लिया प्रशासन की टीम ने अंतिम दो ओवर शेष रहते 147 रन बनाकर मैच जीत लिया। जिला प्रशासन की टीम की ओर से उप विकास आयुक्त ने शानदार बल्लेबाजी करते हुए दो छक्के और तीन चौके लगाकर 24 रन बनाए। प्रशासन की टीम के ओपनर वसीम ने 42 और जितेंद्र ने 52 रनों का योगदान किया। मैन ऑफ द मैच मीडिया टीम के सेंचुरी बनाने वाले बल्लेबाज अभिषेक को दिया गया। मैच में कमेंट्री ज्ञानेश्वर गौतम ने किया।मौके पर जिलाधिकारी ने कहा कि बिहार दिवस के अवसर पर इस मैच के आयोजन का उद्देश्य लोगों को मताधिकार के प्रयोग के लिए जागरूक करना था।

अबोध बच्ची की टुकड़ों में काटकर हत्या मामले में एक को आजीवन कारावास

पूर्वी चंपारण,एजेंसी। सप्तम अपर जिला एवं सत्र न्यायाधीश सह पॉक्सो के विशेष न्यायाधीश अवधेश कुमार ने एक अबोध बच्ची की कई टुकड़ों में काट कर हत्या करने मामले में दोषी पाते हुए नामजद अभियुक्त को आजीवन कारावास व 15 हजार रुपए अर्थ दंड की सजा सुनाया है।

अर्थ दंड नहीं देने पर एक वर्ष की अतिरिक्त सजा काटनी होगी। सजा पीपरा थाना के बेदीबन मधुबन निवासी सियाराम सहनी को हुई। मामले में स्थानीय निवासी बंगाली सहनी ने पीपरा थाना कांड संख्या - 346/2020 दर्ज कराते हुए सियाराम सहनी को नामजद किया था। जिसमें कहा था कि 15 नवंबर 2020 की संध्या 6 बजे वे अपने घर के बगल में अपनी पांच वर्षीय पुत्री मुस्कान के साथ घुर ताप रहा था। उसी दौरान सियाराम सहनी आया और उससे साइकिल मांगी। सूचक ने साइकिल देने से मना कर दिया तथा बोला कि पहले भी तुम्हें साईकिल देने से मना किया था फिर भी तुम साईकिल मांगने आ गए। वह इतना कह कह अपनी पुत्री को घुर के पास ही छोड़कर दूध दुहने चला गया। घुर के पास ही सियाराम सहनी उसकी पुत्री को खेलाने लगा। जब वह दूध दुहकर आया तो उसकी पुत्री नहीं थी। देर रात तक खोजबीन के दौरान अभियुक्त से पूछा कि तुम ही घुर के पास उसकी पुत्री को खेला रहा था। परंतु उसने कहा कि वह उसकी पुत्री को वहीं छोड़कर चला आया है। सूचक की एक नौ वर्षीय पुत्री रानिका कुमारी ने बताया कि उसकी बहन को सियाराम सहनी ले जा रहा था। उसे भी चलने को कहा लेकिन वह नहीं गई। दुसरे दिन लखना नदी के किनारे हाथ, पैर, सिर कटे आठ टुकड़ों में मुस्कान का शव बरामद हुआ। वाद संख्या - 35/2021 विचारण के दौरान अपर लोक अभियोजक कुमार शिवशंकर सिंह ने दस गवाहों को न्यायालय में प्रस्तुत कर अभियोजन पक्ष रखा। न्यायाधीश ने धारा 302,201 भादवि में दोषी पाते हुए अभियुक्त को उक्त सजा सुनाए है।

नीतीश सरकार में हुए कामों को गिनवाकर राजनीति चमकाने की कोशिश में तेजस्वी-जदयू

पटना,एजेंसी। जदयू के प्रदेश अध्यक्ष उमेश सिंह कुशवाहा ने शुक्रवार को यहां कहा कि पूर्व उप मुख्यमंत्री तेजस्वी प्रसाद यादव नीतीश सरकार में हुए विकास कार्यों को गिनवाकर राजनीति चमकाने की पुरजोर कोशिश में हैं। तेजस्वी प्रसाद यादव 17 महीनों का श्रेय लेने से पहले अक्सर यह भूल जाते हैं कि सरकार का हर निर्णय कैबिनेट की बैठक में मुख्यमंत्री की सहमति से ही लिया जाता है।

उमेश सिंह कुशवाहा ने कहा कि बेहिसाब झूठ बोलने से तथ्य नहीं बदल सकते हैं। बिहार की परिपक्व जनता राजद के सफेद झूठ और दुष्प्रचार के मायाजाल में कभी नहीं फंसेगी। विगत 18 वर्षों के दौरान प्रदेश में हुए सकारात्मक परिवर्तन मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के अथक प्रयासों की परिणति है। उन्होंने पूछा कि आखिर किन कारणों से तेजस्वी माता-पिता के 15 सालों के शासन की चर्चा करने से कतराते हैं? उमेश सिंह कुशवाहा ने कहा कि तेजस्वी प्रसाद यादव के द्वारा राजद सरकार के कामों की चर्चा नहीं करना इस बात की पुष्टि करता है कि उन 15 सालों में बिहार के हित में कोई भी काम नहीं हुए। तत्कालीन सरकार द्वारा अपनी तिजोरी

को भरने के लिए सिर्फ और सिर्फ जनता की गाढ़ी कमाई को लूटा गया। सत्ता और शासन का दुरुपयोग कैसे किया जाता है उसका नमूना राजद की सरकार ने 15 सालों के दौरान पेश किया था। उन्होंने कहा कि 17 महीनों की चर्चा करने के बजाए तेजस्वी जनता के बीच जाकर 15 सालों के शासनकाल की चर्चा करने की हिम्मत दिखाएं।

एक नजर

भारत की सहायता से नेपाल में 400 साल पुराने बौद्ध गुम्बा का पुनर्निर्माण शुरू

काठमांडू,एजेंसी। सिन्धुपालचोक जिले में नेपाल-चीन सीमा पर स्थित 400 वर्ष पुराने जीर्ण-शीर्ण बौद्ध गुम्बा के पुर्ननिर्माण के लिए भारत सरकार ने 10 करोड़ रुपये मुहैया कराए हैं। साल 2015 में आए भूकम्प में यह ध्वस्त हो गया था। गुरुवार को काठमांडू स्थित भारतीय दूतावास के अधिकारी की उपस्थिति में इसका शिलान्यास किया गया। इस पर स्थानीय लोगों ने खुशी जताई है। भोटेकोशी गांव पालिका के अध्यक्ष पासांग नोर्बु शेरपा गांव के तरफ से भारत सरकार और भारतीय दूतावास के प्रति आभार व्यक्त किया है। उन्होंने कहा कि इसके दो साल के भीतर बन जाने की उम्मीद है। इस गुम्बा के प्रमुख बौद्ध धर्मावलम्बियों के अगुवा दोर्जे लामा का कहना है कि 2013 में स्थानीय लोगों से एकत्र दो करोड़ चंदा से इसकी मरम्मत कराई गई थी। 2015 के विनाशकारी भूकम्प में यह ध्वस्त हो गया था। शिलान्यास कार्यक्रम भोटेकोशी गांव पालिका के लिस्ती में हुआ है। वार्ड अध्यक्ष राजू लामा का कहना है कि गांव में 90 प्रतिशत लोग बौद्ध धर्म के अनुयायी हैं। शिलान्यास समारोह में भारतीय दूतावास के पुनर्निर्माण इकाई के द्वितीय सचिव प्रशांत कुमार सोना प्रमुख रूप से मौजूद रहे। उन्होंने कहा कि भूकम्प का केन्द्र रहे गोरखा जिले के बारपाक में भारत सरकार ने 50 हजार घर बनाकर स्थानीय लोगों को दिए हैं।

इंडोनेशिया में 6.0 तीव्रता का आया भूकंप

जकार्ता,एजेंसी। इंडोनेशिया के पूर्वी जावा प्रांत में शुक्रवार को 6.0 तीव्रता का भूकंप आया। देश के जियोफिजिक्स एजेंसी ने ये बात कही है। समाचार एजेंसी सिन्हुआ की रिपोर्ट के अनुसार, जकार्ता समय के अनुसार सुबह 11.22 बजे समुद्र के नीचे भूकंप आया। इसका केंद्र तुबन रीजेंसी से 132 किमी उत्तर पूर्व में और 10 किमी की गहराई में स्थित था। एजेंसी ने सुनामी की कोई चेतावनी जारी नहीं की है। भूकंप के झटकों से समुद्र में बड़ी लहरें नहीं उठेंगी। इंडोनेशिया एक द्वीपसमूह देश है जो ज्वालामुखी और भूकंप की एक टेक्टॉनिक बेल्ट, पैसेफिक रिंग ऑफ फायर में स्थित है। यहां भूकंप का खतरा हमेशा बना रहता है।

गाजा में फिलीस्तीनियों की मौत का आंकड़ा पहुंचा 32 हजार

गाजा। गाजा में इजराइल के हमले में मरने वालों की संख्या बढ़कर 31,988 हो चुकी है। हमास द्वारा संचालित स्वास्थ्य मंत्रालय ने ये जानकारी दी है। मंत्रालय ने गुरुवार को बयान जारी कर कहा कि इजराइली सैनिकों ने 24 घंटे में 64 फिलिस्तीनियों को मौत के घाट उतार दिया है। इस दौरान 92 लोग जख्मी हुए हैं। जब से इजराइल और हमास के बीच युद्ध शुरू हुआ, तब से मरने वालों का आंकड़ा 31,988 तक पहुंच चुका है और 74,2023 लोग घायल हुए हैं। इजराइली सेना की कार्रवाई में अल शाइफा अस्पताल में अब तक चार दिनों में 600 फिलिस्तीनियों को पकड़ा जा चुका है और 140 नागरिकों को मौत के घाट उतार दिया गया है। बयान में कहा गया है, कई तरह के हथियार और दस्तावेज इस दौरान बरामद किए गए हैं।

नेपाल में मीडिया पर अंकुश लगाने के अपने निर्देश पर दो घंटे भी नहीं टिक पाई प्रचण्ड सरकार

काठमांडू। प्रचण्ड सरकार नेपाल में मीडिया पर अंकुश लगाने के अपने निर्देश पर दो घंटे भी नहीं टिक पाई। गृह मंत्रालय ने गुरुवार दोपहर देश के सभी 77 जिलों के जिलाधिकारी को मीडिया, पत्रकारों और सोशल मीडिया पर विशेष निगरानी के लिए एक अलग डेस्क स्थापित करने का 15 पन्नों का निर्देश जारी किया था। इसमें कहा गया था कि किसी भी अखबार, रेडियो, टीवी चैनल, सोशल मीडिया के विभिन्न प्लेटफॉर्म पर यदि नियम विरुद्ध कुछ भी प्रकाशित या प्रसारित होता है कि तत्काल गिरफ्तारी कर मुकदमा चलाया जाए।गृह मंत्रालय के इस निर्देश की कॉपी मीडिया में लीक होते ही आलोचना शुरू हो गई। मीडिया ने प्रधानमंत्री प्रचण्ड और गृहमंत्री रवि लामिछाने की जमकर आलोचना की। नेपाल पत्रकार महासंघ सहित अनेक संस्थाओं ने इस कदम का विरोध किया गया। इसे अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के अधिकार पर हमला बताया। देशव्यापी विरोध होने के बाद गृह मंत्रालय ने अपने निर्दे को वापस ले लिया।

अमेरिका में राम मंदिर रथयात्रा 25 मार्च से, शिकागो से आगाज, हनुमान जयंती पर होगा समापन

वाशिंगटन। विश्व हिंदू परिषद ऑफ अमेरिका (वीएचपीए) के नेतृत्व में शिकागो से 25 मार्च को राम मंदिर रथयात्रा शुरू होगी। यह यात्रा 60 दिन में 8,000 से भी अधिक मील की दूरी तय करते हुए 48 राज्यों के 851 मंदिरों तक जाएगी। वीएचपीए के महासचिव अमिताभ मित्तल ने बताया कि टोयोटा सिएना वैन के ऊपर बने रथ में भगवान राम, देवी सीता, लक्ष्मण और हनुमानजी की मूर्तियां होंगी। उनके साथ अयोध्या के राम मंदिर से विशेष प्रसाद और प्राण प्रतिष्ठा पूजित अक्षत का कलश ले जाया जाएगा। उन्होंने बताया कि कनाडा में रथ यात्रा निकाली जाएगी। इसका आयोजन विश्व हिंदू परिषद ऑफ कनाडा ने किया है। हिंदू मंदिर सशक्तिकरण परिषद (एचएमईसी) की तेजल शाह का कहना है कि इसका प्रमुख उद्देश्य लोगों को हिंदू धर्म के बारे में जागरूक और शिक्षित करते हुए सशक्त बनाना है। विश्व हिंदू परिषद ऑफ अमेरिका के महासचिव मित्तल ने बताया कि यात्रा का समापन 23 अप्रैल को हनुमान जयंती के अवसर पर होगा।

अमेरिका ने निकारागुआ के अटॉर्नी जनरल पर लगाया प्रतिबंध

वाशिंगटन,एजेंसी। अमेरिका ने निकारागुआ के अटॉर्नी जनरल वेंडी कैरोलिना मोरालेस उर्बिना पर प्रतिबंध लगाया है। अमेरिकी ट्रेजरी विभाग के विदेशी संपत्ति नियंत्रण कार्यालय (ओएफएसी) ने गुरुवार को एक बयान में यह जानकारी दी। बयान के अनुसार, ट्रेजरी विभाग के विदेशी संपत्ति नियंत्रण कार्यालय (ओएफएसी) ने निकारागुआ के अटॉर्नी जनरल वेंडी कैरोलिना मोरालेस उरबिना को ओर्टेगा-मुरीलो शासन के उत्पीड़न में शामिल होने के लिए प्रतिबंध लगाया है।

अमेरिकी अधिकारियों ने कहा कि मोरालेस उर्बिना पूर्व में स्वतंत्र मीडिया आउटलेट, अंतर्राष्ट्रीय संगठनों और राजनीतिक कैदियों की वास्तविक संपत्तियां जब्त करने के लिए जिम्मेदार है। बयान के अनुसार, मोरालेस अर्बिना ने स्पष्ट रूप से संघ की स्वतंत्रता को दबाने के लिए कानून के अंतर्गत हजारों गैर-सरकारी संगठनों की संपत्ति जब्त कर ली। उन्होंने निकारागुआ से निर्वासित किए गए 222 राजनीतिक कैदियों को सभी संपत्तियों को बेदखल कर दिया। अमेरिकी ट्रेजरी ने कहा कि निकारागुआ के अटॉर्नी जनरल एक प्रमुख व्यक्ति थे जो निकारागुआ के विपक्षी सदस्यों को आतंकवादी के रूप में नामित करने की रणनीति तैयार कर रहे थे। बयान के अनुसार, उन्होंने वित्तीय संसाधनों को अवरुद्ध करने के लिए एक मौजूदा आतंकवाद विरोधी कानून

का उपयोग किया। ट्रेजरी के अंडर सेक्रेटरी ब्रायन नेल्सन ने कहा, निकारागुआ के अटॉर्नी जनरल, ओर्टेगा-मुरिलो शासन [निकारागुआ के राष्ट्रपति डैनियल ओर्टेगा और उपराष्ट्रपति रोसारियो मुरिलो] के साथ मिलकर, बिना किसी कानूनी आधार के सरकार के राजनीतिक विरोधियों की संपत्ति जब्त करके असंतोष को दबाने के लिए एक समन्वित अभियान चलाकर अपने कार्यालय का दुरुपयोग किया। बयान में कहा गया कि 2018 में निकारागुआ में सरकार विरोधी प्रदर्शन हुए थे लेकिन अधिकारियों ने प्रदर्शनों को दबा दिया और राजनीतिक कार्यकर्ताओं को जेल में बंद कर दिया।

न्यूजीलैंड का दवा, टीका विकसित करने के लिए अंतर्राष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन पर अनुसंधान

वेलिंगटन,एजेंसी। न्यूजीलैंड के वैज्ञानिकों ने अधिक प्रभावी दवाएं और टीके विकसित करने के लिए अंतर्राष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन पर प्रोटीन अनुसंधान शुरू किया है। कैंटरबरी विश्वविद्यालय की सारा केसन्स ने कक्षा में स्वायत्त रूप से संचालित होने के लिए हार्डवेयर विकसित किया, जिससे वैज्ञानिकों को माइक्रोग्रैविटी में प्रोटीन के क्रिस्टलीकरण का अध्ययन करने और अन्य अनुप्रयोगों के बीच ज्यादा प्रभावी दवाओं और टीकों को विकसित करने के लिए अपनी अंतर्दृष्टि का उपयोग करने की सुविधा प्राप्त हुई है। केसन्स का शोध शुक्रवार को अमेरिका के केप कैनावेरल स्थित कैनेडी अंतरिक्ष केंद्र से एक रॉकेट पर शुरू किया गया।

इसके साथ न्यूजीलैंड के कैंटरबरी, ओटागो, विक्टोरिया और वाइकाटो विश्वविद्यालयों के प्रोटीन प्रयोग भी शामिल थे। विज्ञान, नवाचार और प्रौद्योगिकी एवं अंतरिक्ष मंत्री जूडिथ कोलिन्स ने कहा कि केसन्स का शोध इस बात का एक प्रेरणादायक उदाहरण है कि अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी पृथ्वी पर नवाचार को कैसे गति प्रदान कर सकती है। मंत्री ने कहा, %न्यूजीलैंड सरकार अंतरिक्ष क्षेत्र को विकसित करने, नवाचार को बढ़ावा देने और न्यूजीलैंड अनुसंधान समुदाय और अंतरराष्ट्रीय अंतरिक्ष एजेंसियों और वाणिज्यिक सहयोगियों के बीच साझेदारी का समर्थन करने के लिए प्रतिबद्ध है। इस महीने

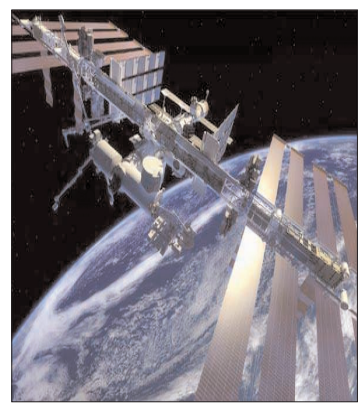

की शुरुआत में न्यूजीलैंड ने मीथेन-सैट के सफल प्रक्षेपण का स्वागत किया और इसे अपने अंतरिक्ष क्षेत्र के विकास और जलवायु परिवर्तन के खिलाफ वैश्विक लड़ाई में एक मील का पत्थर बताया। एक आधिकारिक बयान के अनुसार, मीथेन-सैट एक अत्याधुनिक उपग्रह है जिसे सटीकता के साथ मीथेन उत्सर्जन का पता लगाने और जलवायु परिवर्तन से निपटने के वैश्विक प्रयासों में योगदान देने के लिए डिज़ाइन किया गया है। अमेरिका स्थित गैर-लाभकारी पर्यावरण रक्षा कोष के साथ संयुक्त अभियान में, न्यूजीलैंड की भूमिका में उपग्रह मिशन संचालन नियंत्रण केंद्र की मेजबानी करना, वायुमंडलीय विज्ञान कार्यक्रम का नेतृत्व करना, कृषि से वैश्विक उत्सर्जन का अध्ययन करना आदि शामिल है।

मैक्रों ने कहा यूक्रेन का बहुत जल्द पतन हो सकता है: रिपोर्ट

पेरिस। फ्रांस के राष्ट्रपति इमैनुएल मैक्रों ने एलिसी पैलेस में फ्रांसीसी राजनेताओं के साथ एक बैठक में कहा कि यूक्रेन का पतन बहुत जल्द हो सकता है। यह जानकारी पोलिटिको ने एक बैठक प्रतिभागी के हवाले से दी। मैक्रों ने यह बयान यूरोपीय संसद के आगामी चुनावों की चर्चाओं के संदर्भ में दिया। फरवरी के अंत में यूक्रेन पर पेरिस की मेजबानी वाले सम्मेलन के बाद, फ्रांसीसी राष्ट्रपति मैक्रों ने कहा कि पश्चिमी नेताओं ने यूक्रेन में सेना भेजने की संभावना पर चर्चा की थी, हालांकि इस पर कोई सहमति नहीं बनी लेकिन कुछ भी खारिज नहीं किया जा सकता। 10 मार्च को, पोलिश विदेश मंत्री राडोस्लाव सिकोरस्की ने कहा कि नाटो सैनिक

पहले से ही यूक्रेन में मौजूद थे, लेकिन उनकी संख्या और मूल देशों का कोई विवरण नहीं दिया।

जाने माने शेफ विकास खन्ना न्यूयॉर्क में भारतीय रेस्तरां खोलेंगे

न्यूयॉर्क,एजेंसी। मशहूर शेफ विकास खन्ना भारत की समृद्ध पाक संस्कृति को पेश करने और पीढ़ियों का पालन-पोषण करने वाली माताओं के सम्मान में न्यूयॉर्क के मैनहट्टन में एक भारतीय रेस्तरां खोलेंगे। बंग्लो नाम के इस रेस्तरां के उद्घाटन से पहले भारतीय शेफ खन्ना ने एक समाचार एजेंसी से कहा, रेस्तरां का मतलब केवल भोजन होता है, लेकिन न्यूयॉर्क में इनका मतलब केवल भोजन से ही नहीं, बल्कि विरासत से भी है क्योंकि यहां कई संस्कृतियों का संयोजन है।

खन्ना ने कहा कि भारत की संस्कृति और व्यंजनों का इस देश में भी जश्न मनाया जाना चाहिए और बंग्लो प्रवासी भारतीयों के साथ-साथ भारतीय-अमेरिकी बच्चों की अगली पीढ़ी को जोड़ने वाला ऐसा घर होगा, जो उन्हें भारत की सांस्कृतिक जड़ों और विरासत के करीब लाएगा। उन्होंने कहा, मेरे लिए बंग्लो की सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि यह एक ऐसा मंच और माध्यम होगा जहां प्रवासी बच्चे भारतीय संस्कृति, हमारे भोजन, हमारे उत्सवों से जुड़ सकते हैं। इस रेस्तरां के जरिए खन्ना अपनी दिवंगत बहन राधिका के जीवन और विरासत को भी श्रद्धांजलि देंगे। राधिका इस 23

तारीख को 50 वर्ष की हो जातीं। उनकी याद में रेस्तरां के उद्घाटन के दिन 23 मार्च को ही चुना गया है। उन्होंने कहा कि इस रेस्तरां की वास्तुकला नानी और दादी के उस घर जैसी दिखती है जो भावनाओं से जुड़ा होता है, जहां किसी को पढ़ाई नहीं करनी होती और वहां केवल अच्छा भोजन, जश्न और प्यार होता है। उन्होंने कहा, इसलिए मैं उस संस्कृति का निर्माण करना चाहता था। यह उस संस्कृति का प्रतिनिधित्व करने का एक अद्भुत तरीका है, जिसे भुला दिया गया है।

वेनेजुएला ने राष्ट्रपति पद के उम्मीदवारों के लिए नामांकन शुरू

कराकस। वेनेजुएला की राष्ट्रीय चुनाव परिषद (सीएनई) ने गुरुवार को जुलाई में राष्ट्रपति पद के लिए होने वाले चुनावों में उम्मीदवारों के लिए नामांकन की प्रक्रिया शुरू की। सीएनई के अध्यक्ष एल्विस अमोरोसो ने कहा, मैं आप सभी को बधाई देता हूं जिन्होंने इस चुनावी प्रक्रिया में शामिल होकर वेनेजुएला के बोलिवेरियन गणराज्य के संविधान और हमारे देश के कानूनों के अनुसार इस आह्वान को स्वीकार किया है।

विपक्षी उम्मीदवारों, साथ ही राष्ट्रपति निकोलस मादुरो के पुन-चुनाव का समर्थन करने वाले वामपंथी दलों ने सीएनई निदेशक मंडल के

सामन अपना नामांकन प्रस्तुत किया। फॉर सोशल डेमोक्रेसी पार्टी, जिसे पोडेमोस भी कहा जाता है, के प्रतिनिधि डिडाल्को बोलिवर ने कहा, आज हम राष्ट्रपति निकोलस मादुरो को नए जनादेश के लिए नामांकित कर रहे हैं।

इससे पहले, विपक्षी विधायक लुइस एडुआर्डो मार्टिनेज ने सीएनई की वेबसाइट पर डेमोक्रेटिक एक्शन पार्टी के लिए अपनी उम्मीदवारी दर्ज की थी। उम्मीदवारों का रजिस्ट्रेशन 25 मार्च तक चलेगा; इसके बाद चुनावी निकाय पांच दिनों के भीतर यह तय करेगा कि किसकी उम्मीदवारी को स्वीकार किया जाए या अस्वीकार किया जाए।

यूएन ने सतत विकास के लिए सुरक्षित एआई प्रणाली के प्रस्ताव को अपनाया

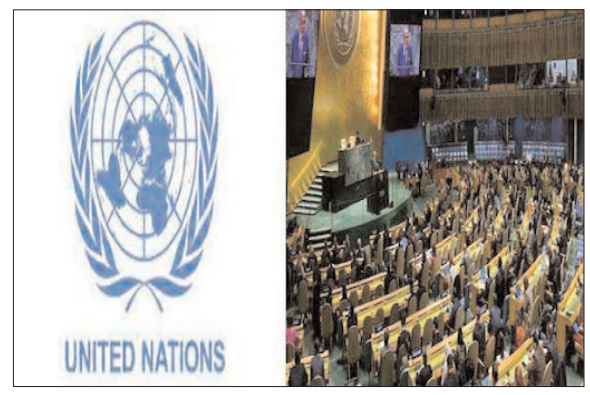

संयुक्त राष्ट्र,एजेंसी। संयुक्त राष्ट्र महासभा ने गुरुवार को सतत विकास के लिए सुरक्षित, संरक्षित और भरोसेमंद कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) प्रणालियों को बढ़ावा देने के लिए एक प्रस्ताव को अपनाया। यह प्रस्ताव सुरक्षित, सुदृढ़ और भरोसेमंद एआई प्रणाली के मानक को बढ़ावा देने, डिजिटल रूपांतरण और उनके लाभों तक समान पहुंच की आवश्यकता पर बल देता है जिससे सतत विकास को प्राप्त किया जा सके और विशेष रूप से विकासशील देशों के लिए अन्य साझा वैश्विक चुनौतियों का समाधान किया जा सके।यह प्रस्ताव संयुक्त राष्ट्र के सदस्य देशों को प्रोत्साहित करता है और सभी क्षेत्रों और देशों के बहु-हितधारकों को सुरक्षित, संरक्षित और भरोसेमंद एआई प्रणाली से संबंधित नियामक और शासन दृष्टिकोण और अवसंरचना को विकसित करने और समर्थन करने के लिए आमंत्रित करता है। प्रस्ताव इस बात पर बल देता है कि एआई प्रणाली पूरे जीवन चक्र में मानवाधिकारों और मौलिक स्वतंत्रता का सम्मान, संरक्षण और प्रचार किया जाना चाहिए। यह एआई शासन के क्षेत्र में विकास पर चर्चा जारी रखने के महत्व को स्वीकार करता है जिससे अंतर्राष्ट्रीय दृष्टिकोण एआई प्रणाली के विकास एवं उपयोग के साथ तालमेल निरंतर बनाए रखें।

भारत सरकार से सही दिशा में कदम उठाने का अनुरोध करे कांग्रेस- अमेरिकी सांसद

वाशिंगटन। अमेरिका के एक प्रभावशाली सांसद ने बृहस्पतिवार को कहा कि अमेरिकी संसद को भारत सरकार से आतंकवाद रोधी कानूनों समेत उन नीतियों तथा कानूनों पर पुनर्विचार करने का अनुरोध करना चाहिए जो प्रमुख मानवाधिकार संधियों की अभिपुष्टि के चलते प्राप्त उसके दायित्वों से भिन्न हैं। कांग्रेस सदस्य जेम्स मैकगवर्न ने भारत में मानवाधिकारों पर संसद में सुनवाई के दौरान कहा कि भारत में अगले पांच साल के लिए देश की राजनीतिक दिशा तय करने के वास्ते 19 अप्रैल को आम चुनाव शुरू हो जाएंगे। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी तीसरा कार्यकाल हासिल की कोशिश में हैं।

उन्होंने कहा, मैं उन लोगों में से हूं जो सोचते हैं कि मित्रों को एक-दूसरे को कड़वी सच्चाई बतानी चाहिए। भारत एक मित्र है और अमेरिका के लिए यह वास्तव में महत्वपूर्ण है कि भारत समृद्ध हो। फिर भी एक वास्तविक खतरा है कि अगर मानवाधिकार हनन पर ध्यान नहीं दिया गया तो विविध समाजों में निहित तनाव खतरनाक संघर्ष में बदल सकता है और भारत के उज्ज्वल

भविष्य को कमजोर कर सकता है। मैकगवर्न ने कहा, मणिपुर राज्य में जातीय हिंदू और ईसाई समुदायों के बीच हाल की साम्प्रदायिक हिंसा महज एक उदाहरण है। कांग्रेस को भारत सरकार से सही दिशा में कदम उठाने और आतंकवाद रोधी कानूनों समेत उन नीतियों तथा कानूनों पर पुनर्विचार करने का अनुरोध करना चाहिए जो प्रमुख मानवाधिकार संधियों की अभिपुष्टि के चलते प्राप्त उसके दायित्वों से भिन्न हैं। अमेरिकन बार एसोसिएशन सेंटर फॉर ह्यूमन राइट्स के कानूनी सलाहकार वारिस हुसैन ने बताया कि कांग्रेस को इन चिंताओं के बारे में अमेरिकी राष्ट्रपति को सीधे प्रधानमंत्री मोदी से बात करने के लिए उन पर और अधिक मजबूती से दबाव बनाने की जरूरत है। उन्होंने कहा, प्रधानमंत्री मोदी ही हैं जिनके पास अपनी सरकार, पार्टी को उनकी जहरीली बयानबाजी तथा उनके अपमानजनक कानूनों और नीतियों के बारे में निर्देश देने की शक्ति है।

गाजा पर यूएनएससी के दूसरे प्रस्ताव पर हो सकता है मतदान

संयुक्त राष्ट्र,एजेंसी। संयुक्त राष्ट्र में फ्रांसीसी राजदूत निकोलस डी रिवियेर ने कहा कि संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद द्वारा गाजा में युद्धविराम की मांग करने वाले एक मसौदा प्रस्ताव पर शुक्रवार को एक और मतदान हो सकता है अगर अमेरिकी मसौदा को नहीं अपनाया जाता है। फिलहाल, संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में दो मसौदा प्रस्ताव हैं-एक अमेरिकी मसौदा और एक सुरक्षा परिषद के दस गैर-स्थायी सदस्यों का मसौदा। सुरक्षा परिषद के गैर-स्थायी सदस्यों के मसौदे में रमजान के महीने में तत्काल युद्धविराम की मांग की गई है, जिससे स्थायी युद्धविराम हो सकता है।

इस बीच, अमेरिकी मसौदे में युद्धविराम की सीधी मांग नहीं की गई है। इसमें कहा गया है कि सुरक्षा परिषद तत्काल एवं स्थायी संघर्षविराम की तत्काल आवश्यकता महसूस करती है और शेष बंधकों की रिहाई के साथ युद्धविराम की प्राप्ति के लिए चल रहे अंतरराष्ट्रीय राजनयिक प्रयासों का स्पष्ट रूप से समर्थन करती है। डी रिविएर ने संवाददाताओं से कहा कि हम संभवत: अमेरिकी मसौदे पर शुक्रवार सुबह मतदान करेंगे।

अमेरिका के 16 राज्यों ने एलएनजी निर्यात पर प्रतिबंध को लेकर बिडेन प्रशासन के खिलाफ मुकदमा दायर किया

वाशिंगटन। टेक्सास सहित 16 अमेरिकी राज्यों ने बिडेन प्रशासन के खिलाफ मुकदमा दायर कर कहा है कि तरलीकृत प्राकृतिक गैस के निर्यात पर प्रतिबंध प्राकृतिक गैस अधिनियम और ऊर्जा विभाग की नीति के खिलाफ है। टेक्सास के अटॉर्नी जनरल केन पैक्सटन ने एक बयान में यह जानकारी दी। पैक्सटन ने गुरुवार को कहा कि टेक्सास ने लुइसियाना और 14 अन्य राज्यों के साथ मिलकर असंवैधानिक एलएनजी निर्यात प्रतिबंध को निरस्त करने के लिए मुकदमा दायर किया है, जो निर्यात के पक्ष में प्राकृतिक गैस अधिनियम की धारणा, ऊर्जा विभाग की दशकों पूरानी नीति और निर्यात पर राज्य एवं निजी निर्भरता को नजरअंदाज करता है। जिन राज्यों ने मुकदमा दायर किया है उनमें टेक्सास के अलावा लुइसियाना, मिसिसिपी, अलबामा, अलास्का, आर्कासस, फ्लोरिडा, जॉर्जिया, कंसास, मोंटाना, नेब्रास्का, ओक्लाहोमा, साउथ कैरोलिना, यूटा, वेस्ट वर्जीनिया और व्योमिंग शामिल हैं।

एक नजर

आईपीएल के दो मैच गुवाहाटी में खेलेगा राजस्थान रॉयल्स

गुवाहाटी,एजेंसी। असम के खेल प्रेमियों के लिए खुशखबरी है। अगले मई माह में गुवाहाटी के बरसापारा क्रिकेट स्टेडियम में आईपीएल के दो मैच खेले जाएंगे। राजस्थान रॉयल्स के चेयरमैन (असम निवासी) रंजीत बरठाकुर ने आज इसकी घोषणा की। गौरतलब है कि कल से देश में 17वां आईपीएल शुरू होगा। इस बीच बोर्ड के सचिव जय शाह ने कहा है कि 17वें आईपीएल के सभी मैच भारत में ही होंगे। दूसरी ओर, आज रंजीत बरठाकुर ने भी पुष्टि की है कि राजस्थान रॉयल्स गुवाहाटी में दो-दो मैच खेलेगा। हालांकि, 5 और 16 मई को गुवाहाटी में मैच होना था लेकिन 7 मई को मतदान का दिन होने के कारण 5 मई के मैच को बदल दिया गया है। उन्होंने कहा कि कार्यक्रम जारी नहीं हुआ है फिर भी गुवाहाटी में होने वाले दोनों मैच मई में होंगे। असम के क्रिकेट प्रेमी चुनाव को लेकर चिंतित हैं कि इस बार गुवाहाटी में आईपीएल मैच होगा या नहीं। राजस्थान रॉयल्स असम की प्रिय टीम है। उन्होंने कहा कि हम किसी भी कारण से असम और पूर्वोत्तर के क्रिकेट प्रेमियों को आईपीएल मैचों के रोमांच से वंचित नहीं करेंगे। पिछली बार की तरह इस बार भी राजस्थान रॉयल्स एसीए के बरसापारा स्टेडियम में दो मैच खेलेगा। उल्लेखनीय है कि असम और पूर्वोत्तर को सबसे पहले आईपीएल के साथ जोड़ा गया, जो पिछले साल विश्व क्रिकेट की सबसे पेशेवर लीग थी। राजस्थान रॉयल्स ने बरसापारा स्टेडियम में पंजाब किंग्स और दिल्ली कैपिटल्स के खिलाफ दो घरेलू मैच खेले। बरठाकुर ने कहा हम पैसे कमाने के लिए असम में आईपीएल मैचों की मेजबानी नहीं करेंगे। हमें पिछले साल दो मैचों की मेजबानी के लिए आए खर्च से भी कम पैसा मिला। फिर भी एक असमिया के रूप में, मैंने हर साल गुवाहाटी में मैचों की मेजबानी करने का फैसला किया है। आईपीएल दो देशों का खेल नहीं है। गुवाहाटी में तीन टीमें खेलेंगी। हर टीम में विश्व क्रिकेट के सितारे हैं। पूरी दुनिया गुवाहाटी में आईपीएल का लुत्फ उठाएगी। बाद में इसका सभी मोर्चों पर अच्छा असर पड़ेगा। गौरतलब है कि इस बार राजस्थान रॉयल्स अपने अभियान की शुरुआत 24 मार्च को जयपुर में लखनऊ सुपर जायंट्स के खिलाफ मैच खेलकर करेगा।

अफगानिस्तान के साथ भारत के गोल रहित ड्रा से 'निराश' नहीं हैं स्टिमैक

आभा (सऊदी अरब)। भारतीय सीनियर पुरुष फुटबॉल टीम के कोच इगोर स्टिमैक 2026 फीफा विश्व कप के लिए एशियाई क्वालीफायर के ग्रुप ए मैच में डैमैक स्टेडियम में मेजबान अफगानिस्तान के साथ गोल रहित ड्रॉ खेलने के बाद निराश नहीं हैं। इस परिणाम के साथ, भारत ग्रुप ए में तीन मैचों में चार अंकों के साथ दूसरे स्थान पर पहुंच गया, उसके बाद कुवैत है, जिसके इतने ही मैचों में तीन अंक हैं। भारत के लिए, इसका मतलब अस्थायी रूप से ग्रुप ए में कुवैत से तीन अंक आगे दूसरा स्थान हासिल करना होगा, जो इससे पहले रात में कतर के खिलाफ 0-3 से हार गया था। अफगानिस्तान के लिए तीन अंक उन्हें कुवैत और भारत के बराबर ला देंगे, जिससे समूह में दूसरे स्थान की दौड़ तीन-तरफ़ा लड़ाई बन जाएगी। स्टिमैक ने मैच के बाद प्रेस कॉन्फ्रेंस में कहा, मैच दिलचस्प था। मैं अंत में परिणाम से निराश नहीं हूं क्योंकि हमने तीन, चार बहुत अच्छे मौके बनाए। हम स्कोर नहीं कर सके, जो स्पष्ट है और यह समस्या कई वर्षों से हमारा पीछा कर रही है। हालाँकि, 56 वर्षीय खिलाड़ी ने फ़ाइनल थर्ड में तेज प्रदर्शन करने में टीम की असमर्थता पर अफसोस जताया। उन्होंने कहा, हमने सभी उपलब्ध खिलाड़ियों को आजमाया, जो हमारे पास अग्रिम पंक्ति में थे, लेकिन यह आज काम नहीं आया। कुछ चीजों में हमें स्पष्ट रूप से सुधार करने की जरूरत है क्योंकि आक्रामक योजना में आज हमने सरल चीजों को जटिल बना दिया है, और मैं उसके बारे में खुश नहीं हूं। मैच के बाद, स्टिमैक ने स्वीकार किया कि कमज़ोर ड्रा के बावजूद, एक सकारात्मक बात थी-मैदान पर भारतीय रक्षकों का संतुलित प्रदर्शन। उन्होंने पुष्टि की, डिफेंडरों ने अच्छा प्रदर्शन किया और कुछ भी नहीं दिया, लेकिन हमें पास देने में बेहतर होना चाहिए, मौके बनाने में बेहतर होना चाहिए और जब क्रॉस आ रहे हों तो बॉक्स से हमला करने में बिल्कुल बेहतर होना चाहिए। आगे देखते हुए, भारत 26 मार्च को घरेलू मैदान पर अफगानिस्तान से भिड़ेगा, जिसमें स्टिमैक और टीम अपनी कमियों को दूर करने और आगामी मैचों में एक मजबूत प्रदर्शन देने के लिए दृढ़ है।

पूरी दुनिया चाहती है धोनी आखिरी दो नहीं, पांच ओवर खेलें- रैना

नई दिल्ली,एजेंसी। आईपीएल 2024 के ओपनिंग मैच के साथ-साथ एक बार फिर एमएस धोनी क्रिकेट के मैदान पर वापसी करने को तैयार हैं। आरसीबी और सीएसके के बीच इस ब्लॉकबस्टर मैच से पहले भारत के पूर्व बल्लेबाज सुरेश रैना ने एमएस धोनी से एक खास अपील की। आरसीबी के खिलाफ टूर्नामेंट के ओपनिंग मैच से पहले, गुरुवार को धोनी ने चेन्नई सुपर किंग्स की कप्तानी ऋतुराज गायकवाड़ को सौंप दी। जियो सिनेमा पर बोलते हुए, रैना ने आईपीएल 2024 में धोनी से अपनी उम्मीदें व्यक्त करते हुए कहा कि यह धोनी के लिए एक बड़ा आईपीएल होगा क्योंकि वह टीम की कप्तानी नहीं करेंगे, लेकिन उम्मीद करेंगे कि सीएसके इस सीजन में भी अपनी चैंपियनशिप मानसिकता को बरकरार रखे। रैना ने कहा, सबसे अच्छी बात यह है कि वह फिट दिख रहे हैं। वह अच्छी फॉर्म में नजर आ रहे हैं लेकिन, मैं उन्हें ऊपरी क्रम में बल्लेबाजी करते हुए देखना चाहता हूं। पूरी दुनिया उन्हें पांच ओवर तक बल्लेबाजी करते देखना चाहती है, न कि सिर्फ आखिरी दो ओवर। जब वह क्रीज पर आएंगे तो उन्हें जमने में कुछ समय लगेगा और उसके बाद आप उनके हेलीकॉप्टर शॉट का लुत्फ उठाएंगे। वह एक ऑपरेशन से गुजरे हैं, वह कप्तानी नहीं करेंगे, इसलिए यह उनके लिए एक बड़ा आईपीएल होगा। वह उम्मीद कर रहे होंगे कि सीएसके उनकी विरासत को आगे भी बनाए रखे। ऐसा तब होगा जब ऋतुराज, शिवम दुबे और डेरिल मिचेल अपनी जिम्मेदारी बखूबी निभाएंगे। यह पूछे जाने पर कि क्या आरसीबी चेपॉक में सीएसके को हरा सकती है, जहां येलो आर्मी ने खेले गए 64 मैचों में से 45 में जीत हासिल की। रैना ने कहा, मुझे लगता है कि आरसीबी के पास सीएसके को हराने वाली टीम है। इसके अलावा, जो भी टीम सीएसके के खिलाफ खेलेगी वह कहेगी कि ऋतुराज अब है कप्तान, धोनी नहीं, इसलिए भी यह विरोधी टीम का मनोबल बढ़ा सकता है। आरसीबी के लिए विराट कोहली दो महीने के ब्रेक के बाद प्रतिस्पर्धी क्रिकेट में वापसी करेंगे।

चेन्नई सुपर किंग्स ने रॉयल चैंलेंजर्स बेंगलुरु को छह विकेट से हराया

चेन्नई,एजेंसी। रचिन रविंद्र की 37 रन, शिवम दुबे की नाबाद 34 रन और रवींद्र जडेजा के नाबाद 25 रनों की आतिशी पारियों की बदौलत चेन्नई सुपर किंग्स (सीएसके) ने इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) के शुरुआती मुकाबले में शुक्रवार को रॉयल चैंलेंजर्स बेंगलुरु (आरसीबी) को आठ गेंदे शेष रहते छह विकेट से हरा दिया है।

174 रनों के लक्ष्य का पीछा करने उतरी चेन्नई सुपर किंग्स ने पहले विकेट के लिय 38 रन जोड़े। चौथे ओवर में यश दयाल ने कप्तान ऋतुराज गायकवाड़ 15 रन पर आउट कर सीएसके को पहला झटका दिया। सातवें ओवर में रचिन रविंद्र को कर्ण शर्मा ने आर पाटीदार के हाथों कैच आउट करा दिया। उन्होंने 15 गेंदों में तीन चौकों और तीन छक्कों की मदद से 37 रन जोड़े। अजिंक्य रहाणे 11वें ओवर में आउट होने वाले तीसरे बल्लेबाज थे। उन्होंने 19 गेंदों में दो छक्कों की मदद से 27रनों की पारी खेली। डैरिल मिचेल ने 18 गेंदों में दो छक्कों की मदद से 22 रन बनाये। इसके बाद शिवम दुबे और रवींद्र जडेजा ने पारी को संभाला और पांच रनों से अधिक की साझेदारी करते हुए अपनी टीम 18.4 ओवर में चार विकेट पर 176 रन बनाकर टीम को छह विकेट से जीत दिला दी। शिवम दुबे ने 28 गेंदों में चार चौकों और एक छक्के की मदद से नाबाद 34 रनों की पारी खेली। वहीं रवींद्र जडेजा ने 17 गेदों में एक छक्के की मदद से नाबाद 25 रन बनाये। रॉयल चैंलेजर्स बेंगलुरु की ओर से कैमरून ग्रीन ने दो विकेट लिये। यश दयाल और कर्ण शर्मा ने एक-एक बल्लेबाज को आउट किया। इससे पहले युवा बल्लेबाज अनुज रावत 48 रन और दिनेश कार्तिक के नाबाद 38 रनों की शानदार पारियों के दम पर रॉयल चैंलेंजर्स बेंगलुरु (आरसीबी) ने चेन्नई सुपर किंग्स को जीत के लिये 174 रनों का

लक्ष्य दिया है। आज यहां एम ए चिदंबरम स्टेडियम में इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) 2024 के पहले मुकाबले में चेन्नई सुपर किंग्स के खिलाफ टॉस जीतकर पहले बल्लेबाजी करने का फैसला किया। बल्लेबाजी करने उतरी आरसीबी के लिए सलामी बल्लेबाज विराट कोहली और कप्तान फाफ डुप्लेसी ने अच्छी शुरुआत करते हुए पहले विकेट लिये 41 रन जोड़े। पांचवें ओवर में मुस्तफिजुर ने दो विकेट झटकते हुए आरसीबी को बैकफुट पर ला दिया। डुप्लेसी 23 गेंदों में आठ चौकों की मदद से 35 रन बनाकर आउट हुये। वहीं रजत पाटीदार बिना खाता खोले ही पवेलियन लौट गये। इसके बाद चाहर ने ग्लेन मैक्सवेल को शून्य पर निपटाकर आरसीबी को तीसरा झटका दिया। विराट कोहली ने कैमरून ग्रीन के साथ पारी को संभालने का प्रयास किया। इसी दौरान विराट ने टी-20 में अपने 12 हजार रन भी पूरे किये। विराट को भी मुस्तफिजुर ने रविंद्र के हाथों कैच आउट कराया। उन्होंने 20 गेंदों में एक छक्के की मदद से 21 रन बनाये। इसके बाद मुस्तफिजुर ने कैमरून ग्रीन को 18 रन पर बोल्ड कर पवेलियन भेज दिया। अनुज रावत ने 25 गेंदों में चार चौके और तीन छक्के की मदद से नाबाद 48 बनाये। वह मैच की आखिरी गेंद पर रनआउट हुये। वही दिनेश कार्तिक ने 26 गेंदों में दो चौके और दो छक्कों की मदद से नाबाद 38 रनों की पारी खेली। दोनों बल्लेबाजों के बीच छठे विकेट लिये 95 रनों की साझेदारी करते हुए टीम को 173 के सम्मानजक स्कोर तक पहुंचा। चेन्नई के लिए मुस्तफिजुर रहमान के 29 रन देकर चार विकेट लिये। दीपक चाहर को एक विकेट मिला।

दिल्ली और पंजाब के मुकाबले में नजरें पंत पर

चंडीगढ,एजेंसी। पिछले सत्र के खराब प्रदर्शन को भुलाकर दिल्ली कैपिटल्स और पंजाब किंग्स इंडियन प्रीमियर लीग के नये सत्र में शनिवार को जब आमने सामने होंगे तो सभी की नजरें महीनों बाद मैदान पर लौट रहे दिल्ली के कप्तान ऋषभ पंत पर टिकी होंगी। दिसंबर 2022 में भयावह कार दुर्घटना में बाल बाल बचे पंत ने क्रिकेट के लिये अपने जुनून के दम पर समय से पहले रिकवरी कर ली है। उन्हें बतौर बल्लेबाज विकेटकीपर खेलने की अनुमति मिल गई है और वह कप्तानी का दारोमदार भी संभालेंगे। उन्होंने डेविड वॉर्नर से कमान संभाली है जिनकी कप्तानी में दिल्ली पिछले साल 10 टीमों में नौवे स्थान पर रही थी। दिल्ली के कोच रिकी पोंटिंग ने मैच से पूर्व कहा, ''पंत ने इस बार आईपीएल से पहले जितना बल्लेबाजी अभ्यास किया है, उतना शायद कभी नहीं किया होगा। वह अपने शरीर को फिर पहले सी लय में देखना चाहता है। पंत ने 15 महीने कड़ी मेहनत, जुझारूपन और हिम्मत के साथ रिकवरी को दिये हैं। उनके लौटने से दिल्ली टीम में एक नई उमंग का संचार हुआ है। अभी यह तय नहीं है कि वह पहले ही मैच से विकेटकीपिंग करेंगे या नहीं। अगर नहीं करते हैं तो वेस्टइंडीज के शाइ होप या दक्षिण अफ्रीका के ट्रिस्टन स्टब्स यह जिम्मेदारी संभाल सकते हैं। दिल्ली के पास अच्छे तेज गेंदबाज और आक्रामक बल्लेबाज हैं। टेस्ट क्रिकेट को अलविदा कह चुके वॉर्नर अच्छा प्रदर्शन करके टी20 विश्व कप के लिये आस्ट्रेलियाई टीम में जगह बनाना चाहेंगे। पृथ्वी साव, मिचेल मार्श, पंत और स्टब्स जैसे आक्रामक बल्लेबाज दिल्ली के पास है जबकि गेंदबाजी की अगुवाई एनरिच नॉर्किया, ईशांत शर्मा, मुकेश कुमार करेंगे। स्पिन का जिम्मा कुलदीप यादव और अक्षर पटेल संभालेंगे। पंजाब की टीम भी दिल्ली की तरह अभी तक खिताब नहीं जीत सकी है। वह एक ही बार फाइनल में पहुंची है जब 2014 में उसे कोलकाता नाइट राइडर्स ने हराया था। इसके बाद 2019 से 2022 तक टीम लगातार चार सत्र में छठे स्थान पर रही और 2023 में आठवें स्थान पर खिसक गई। शिखर धवन के रूप में पंजाब के पास ऐसा कप्तान है जो राष्ट्रीय टीम से बाहर रहने के बाद अपनी उपयोगिता साबित करने को बेताब है। हरफनमौला सिकंदर रजा, सैम कुरेन, लियाम लिविंगस्टोन और ऋषि धवन का फॉर्म अहम होगा। गेंदबाजी में कैगिसो रबाडा, अर्शदीप सिंह, हर्षल पटेल और नाथन एलिस जिम्मा संभालेंगे।

टीमें: दिल्ली कैपिटल्स: ऋषभ पंत (कप्तान), डेविड वॉर्नर, पृथ्वी साव, स्वस्तिक चिकारा, यश ढुल, एनरिच नॉर्किया, ईशांत शर्मा, झाय रिचर्डसन, खलील अहमद, कुलदीप यादव, मुकेश कुमार, प्रवीण दुबे, रसिक डार, विकी ओस्तवाल, अक्षर पटेल, जैक फ्रेजर गुर्क, ललित यादव, मिचेल मार्श, सुमित कुमार, अभिषेक पोरेल, कुमार कुशाग्र, रिकी भुई, शाइ होप, ट्रिस्टन स्टब्स।

पंजाब किंग्स: शिखर धवन (कप्तान), जितेश शर्मा, जॉनी बेयरस्टो, प्रभसिमरन सिंह, लियाम लिविंगस्टोन, हरप्रीत भाटिया, रिली रोसोयू, शशांक सिंह, क्रिस वोक्स, विश्वनाथ प्रताप सिंह, आशुतोष शर्मा, तनय त्यागराजन, अथर्व तायडे, ऋषि धवन, सैम कुरेन, सिकंदर रजा, शिवम सिंह, प्रिंस चौधरी, हरप्रीत बरार, अर्शदीप सिंह, कैगिसो रबाडा, नाथन एलिस, राहुत चहार, विद्वत कावेरप्पा, हर्षल पटेल।

मैच का समय : दोपहर 3.30 से।

अर्जेंटीना का बॉस बने रहने के फैसले में मेसी की अहम भूमिका- स्कालोनी

वाशिंगटन। लियोनेल स्कालोनी ने लियोनेल मेसी सहित वरिष्ठ खिलाड़ियों के साथ बातचीत की और एक साल बाद अर्जेंटीना की राष्ट्रीय टीम के मैनेजर बने रहने के लिए उनके उत्साह को फिर से जगाया, जिसे उन्होंने मुश्किल बताया। नवंबर में, स्कालोनी ने खुलासा किया था कि वह रियो डी जेनेरो के माराकाना स्टेडियम में फीफा विश्व कप क्वालीफायर में ब्राजील पर एल्बीसेलेस्टे की 1-0 की जीत के बाद अपनी नौकरी छोड़ने पर विचार कर रहे हैं। लेकिन शुक्रवार को फिलाडेल्फिया में अल साल्वाडोर के खिलाफ अर्जेंटीना के दोस्ताना मैच से पहले बोलते हुए, 45 वर्षीय ने अपने भविष्य के बारे में किसी भी संदेह को दूर कर दिया। स्कालोनी ने एक संवाददाता सम्मेलन में कहा, मैंने लियो [मेसी] और अन्य खिलाड़ियों से बात की। मेसी टीम के कप्तान हैं।

मैंने अन्य खिलाड़ियों से भी बात की, एंजेल डि मारिया, लुटारो [मार्टिनेज], (निकोलस) ओटामेंडी, रोड्रिगो डी पॉल के साथ। वे ऐसे लोग हैं जिन पर मैं बहुत भरोसा करता हूं, जिनसे मैं बहुत प्यार करता हूं। वे पहले दिन से ही हमारे साथ हैं। मुझे उनसे बात करने और अपने विचार साझा करने की जरूरत थी। स्कालोनी, जिन्होंने नवंबर में सुझाव दिया था कि उनके पास जारी रखने के लिए ऊर्जा की कमी है, ने जोर देकर कहा कि उन्होंने छोड़ने के बारे में कभी गंभीरता से नहीं सोचा था। लेकिन उन्होंने कहा कि कतर में 2022 विश्व कप में अर्जेंटीना को गौरव दिलाने के बाद उन्होंने अप्रत्याशित दबाव महसूस किया था, जिससे फुटबॉल के अंतिम पुरस्कार

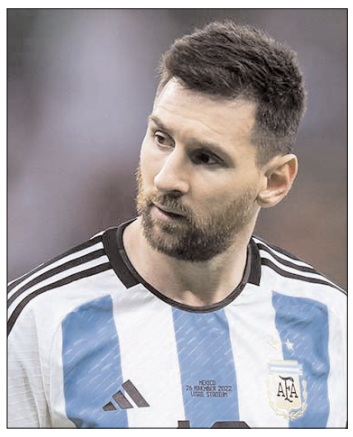

के लिए दक्षिण अमेरिकी देश का 36 साल का इंतजार खत्म हो गया। उन्होंने समझाया, यह एक कठिन वर्ष के बाद चिंतन का क्षण था। यह कहना पागलपन है कि विश्व कप जीतने के बाद यह एक कठिन वर्ष था, लेकिन यह एक कठिन वर्ष था। हम उन लोगों से मिले जिनसे हमने सोचा था कि हमें बात करनी चाहिए, हमने अपनी चिंताओं पर चर्चा की और सबसे महत्वपूर्ण बात यह जानना है कि हम सभी जारी रखने के लिए मजबूत थे। आप कभी नहीं जानते कि भविष्य में क्या होगा लेकिन अभी के लिए मैं जारी रख रहा हूं। अल साल्वाडोर के साथ अर्जेंटीना की भिड़ंत के बाद अगले मंगलवार को लॉस एंजेलिस में कोस्टा रिका के खिलाफ एक और दोस्ताना मैच खेला जाएगा। इंटर मियामी के लिए खेलते समय 36 वर्षीय खिलाड़ी को हैमस्ट्रिंग चोट लगने के बाद एल्बीसेलेस्टे मैचों में कप्तान मेसी के बिना रहेंगे।

आईपीएल-17: केकेआर और सनराइजर्स के मूकाबले में श्रेयस की वापसी पर फोकस

कोलकाता,एजेंसी। कोलकाता नाइट राइडर्स और सनराइजर्स हैदराबाद के बीच शनिवार को होने वाले मुकाबले में आईपीएल के दो सबसे महंगे खिलाड़ियों आस्ट्रेलियाई तेज गेंदबाजों मिचेल स्टार्क और पैट कमिंस के अलावा चोट के कारण लंबे समय बाद वापसी कर रहे श्रेयस अय्यर के प्रदर्शन पर भी फोकस रहेगा। कमर की चोट के कारण पिछले साल पूरे सत्र से बाहर रहे श्रेयस केकेआर की कमान संभालेंगे। उन्होंने हाल ही में रणजी ट्रॉफी में मुंबई के लिये 95 रन बनाये लेकिन फिटनेस को देखते हुए यह तय नहीं है कि वह सारे मैच खेल सकेंगे या नहीं। केकेआर के सबसे कामयाब कप्तान गौतम गंभीर अब मेंटोर के रूप में दूसरी पारी में लौटे हें। घरेलू सर्किट पर चतुर रणनीतिकार मुख्य कोच चंद्रकांत पंडित के साथ उनकी साझेदारी दिलचस्प होगी। टीम के मालिक शाहरूख खान ने गंभीर से कहा है, ''यह तुम्हारी टीम है। बनाओ या बिगाड़ो। गंभीर की कप्तानी में केकेआर ने 2011 से 2017 के बाद दो आईपीएल खिताब जीते, पांच प्लेआफ खेले और एक बार अब बंद हो चुकी चैम्पियंस लीग में उपविजेता रही। केकेआर ने स्टार्क को 24 करोड़ 75 लाख रूपये में खरीदा है और बायें हाथ के इस तेज गेंदबाज पर अच्छे प्रदर्शन का काफी दबाव होगा। पावरप्ले और डैथ ओवरों में उनके स्पैल निर्णायक साबित हो सकते हैं। केकेआर के पास स्टार्क और आंद्रे रसेल जैसे दो अनुभवी तेज गेंदबाज है और उनकी जगह लेने के लिये उनके जैसा कोई विकल्प नहीं है लिहाजा कार्यभार प्रबंधन में सावधानी बरतनी होगी।

केकेआर के पास बल्लेबाजी में अय्यर के अलावा रिंकू सिंह, रसेल, रहमानुल्लाह गुरबाज, फिल साल्ट और वेंकटेश अय्यर हैं। स्पिन गेंदबाजी में सुनील नारायण, वरूण चक्रवर्ती और सुयश शर्मा पर जिम्मेदारी होगी। सनराइजर्स की कमान आस्ट्रेलियाई टीम के कप्तान कमिंस के हाथ में होगी जिन्हें 20 करोड़ 50 लाख रूपये में खरीदा गया है। वह आईपीएल के दूसरे सबसे महंगे खिलाड़ी हैं और पिछले तीन सत्र में आखिरी स्थान पर रही सनराइजर्स की तकदीर बदलने की जिम्मेदारी उन पर होगी। सनराइजर्स के पास ट्रेविस हेड और हेनरिच क्लासेन जैसे बल्लेबाज हैं जबकि गेंदबाजी में कमिंस और भारत के डैथ ओवरों के विशेषज्ञ भुवनेश्वर कुमार होंगे। स्पिन में वानिंदु हसरंगा और वॉशिंगटन सुंदर जिम्मा संभालेंगे। यह देखना होगा कि हसरंगा पहला मैच खेल सकेंगे या नहीं चूंकि बांग्लादेश के खिलाफ टेस्ट के लिये आईसीसी ने उन पर प्रतिबंध लगाया है।

टीमें: कोलकाता नाइट राइडर्स: श्रेयस अय्यर (कप्तान), नीतिश राणा, मनीष पांडे, रमनदीप सिंह, रिंकू सिंह, शाकिब अल हसन, अनुकूल रॉय, वेंकटेश अय्यर, शेरफाने रदरफोर्ड, अंगकृष रघुवंशी, आंद्रे रसेल, सुनील नारायण, केएस भरत, फिल साल्ट, रहमानुल्लाह गुरबाज, वैभव अरोड़ा, चेतन सकारिया, दुष्मंता चामीरा, वरूण चक्रवर्ती, मिचेल स्टार्क, मुजीब उर रहमान, हर्षित राणा, सुयश शर्मा।

सनराइजर्स हैदराबाद: पैट कमिंस (कप्तान), अब्दुल समाद, अभिषेक शर्मा, एडेन मार्कराम, ट्रेविस हेड, वानिंदु हसरंगा, मार्को यानसेन, राहुल त्रिपाठी, वॉशिंगटन सुंदर, ग्लेन फिलिप्स, सनवीर सिंह, हेनरिच क्लासेन, भुवनेश्वर कुमार, मयंक अग्रवाल, टी नटराजन, अनमोलप्रीत सिंह, मयंक मार्कण्डेय, उपेंद्र सिंह यादव, उमरान मलिक, नीतिश कुमार रेड्डी, फजलहक फारूकी, शाहबाज अहमद, जयदेव उनादकट, आकाश सिह, जे सुब्रहमण्यन।

समय : शाम 7.30 से।

आईपीएल में दिव्यांग दर्शकों के लिए साइन लैंग्वेज में होगी कमेंट्री

मुंबई,एजेंसी। आईपीएल 2024 में बधिर, कम सुनने वाले और दृष्टिबाधित प्रशंसकों के लिए साइन लैंग्वेज में कमेंट्री होगी। आईपीएल 2024 के आधिकारिक ब्रॉडकास्टर स्टार स्पोर्ट्स ने इंडिया साइनिंग हैंड्स (आईएसएच न्यूज) के सहयोग से और बीसीसीआई के समर्थन से लीग में भारतीय सांकेतिक भाषा फ़ीड की शुरुआत की घोषणा की। यह फ़ीड उन विशेषज्ञों के परामर्श से भारतीय सांकेतिक भाषा का उपयोग करके गेंद-दर-गेंद अपडेट प्रदान करेगी, जिन्हें इंडिया साइनिंग हैंड्स की मदद से शुरू किया जा रहा है। जो बात इसे और भी खास बनाती है, वह है दृष्टिबाधित प्रशंसकों के साथ जुड़ने की इसकी क्षमता, जिसमें कमेंटेटर नियमित मौखिक स्कोर अपडेट के साथ खेल के हर पल का वर्णन करते हैं। भारतीय बधिर क्रिकेट टीम के कप्तान वीरेंद्र सिंह आईपीएल का पहले जैसा अनुभव लेने के लिए तैयार हैं और दोस्तों और परिवार के साथ इसका पूरा आनंद लेना चाहते हैं। उन्होंने कहा, मैं बचपन से क्रिकेट देखता हूं। मुझे बहुत दिलचस्पी है, मेरी बधिर टीम को बहुत दिलचस्पी है। मेरे बधिर दोस्त, परिवार के सदस्य सभी क्रिकेट देखते हैं और क्रिकेट भी खेलते हैं। मुझे वास्तव में उम्मीद है कि हम आईपीएल का भरपूर आनंद लेंगे। डिज़्नी स्टार के खेल प्रमुख, संजोग गुप्ता ने कहा, स्टार स्पोर्ट्स ने हमेशा क्रिकेट तक पहुंच बढ़ाने और इसे प्रशंसकों के नए समूहों तक ले जाने में विश्वास किया है। क्षेत्रीय कवरेज में हमारा अग्रणी प्रयास एक बड़े पैमाने पर पहुंच गया है और आधुनिक क्रिकेट प्रसारण को परिभाषित किया है। अब इस पहल के साथ, हम उन प्रशंसकों को संबोधित करना चाहते हैं, जो क्रिकेट के संपूर्ण अनुभव से वंचित हैं। सुनने में अक्षम प्रशंसकों के लिए टाटा आईपीएल 2024 में भारतीय सांकेतिक भाषा और दृष्टिबाधित प्रशंसकों के लिए वर्णनात्मक कमेंटरी की शुरुआत के साथ कमेंट्री की भाषा ने समावेशिता में एक नई छलांग लगाई है।

साथियान ने ऐतिहासिक डब्ल्यूटीटी फीडर खिताब जीता

बेरूत,एजेंसी। साथियान ज्ञानसेकरन डब्ल्यूटीटी फीडर सीरीज इवेंट में पुरुष एकल ट्रॉफी जीतने वाले पहले भारतीय पैडलर बन गए हैं। उन्होंने हमवतन मानव विकास ठक्कर को 3-1 (6-11, 11-7, 11-7, , 11-4) से हराया। भारतीय टेबल टेनिस खिलाड़ी साथियान ने सेमीफाइनल मुकाबले में चीनी ताइपे के चुआंग चिह-युआन को 3-1 (11-8, 11-13, 11-8, 11-9) से हराकर फाइनल में अपनी जगह बनाई थी। वहीं, मानव ठक्कर ने भी सेमीफाइनल में पूर्व विश्व चैंपियनशिप के कांस्य पदक विजेता एएन जेह्युन को सीधे गेम में 3-0 (11-9, 11-8, 12-10) से हराया था।

यह पहली मौका था, जब दो भारतीय खिलाड़ियों ने डब्ल्यूटीटी फीडर इवेंट में पुरुष एकल फाइनल के लिए प्रतिस्पर्धा की। डब्ल्यूटीटी इवेंट में ज्ञानसेकरन की ये पहली पुरुष एकल सफलता और आईटीटीएफ चेक इंटरनेशनल ओपन 2021 के बाद किसी अंतर्राष्ट्रीय रैंकिंग इवेंट में उनका पहला एकल खिताब है। मानव के लिए ये दिन काफी चुनौतीपूर्ण रहा। वह तीनों फाइनल - पुरुष एकल, पुरुष युगल और मिश्रित युगल में शामिल थे। पुरुष युगल फाइनल में, मानव ठक्कर और मानुष शाह की जोड़ी को विश्व नंबर 29 जॉर्ज कैंपोस और क्यूबा के एंडी परेरा के खिलाफ 3-1 (5-11, 11-7, 13-11, 14-12) से हार

मिली। मिश्रित युगल फाइनल में, दीया चितले और मानुष शाह ने मानव ठक्कर और अर्चना कामथ को 3-1 (11-6, 10-12, 11-6, 11-6) से हराकर ख़िताब हासिल किया। मानव ठक्कर को पुरुष एकल, पुरुष युगल और मिश्रित युगल सहित तीनों फाइनल मैच में हार मिली।

एक नजर

लापरवाही बरतने के आरोप में आबकारी निरीक्षक निलंबित

अल्मोड़ा/नैनीताल,एजेंसी। लोकसभा चुनाव के दौरान अपने कर्तव्य में लापरवाही बरतने और ड्यूटी से नदारद रहने के आरोप में उत्तराखंड के अल्मोड़ा स्थित भिकियासैंण के आबकारी निरीक्षक बलजीत सिंह को निलंबित कर दिया गया है। उसके खिलाफ अल्मोड़ा कोतवाली में मामला दर्ज किया गया है। निलंबित निरीक्षक श्री सिंह पर आरोप है कि आदर्श आचार संहिता के दौरान वह लगातार अपने कार्य क्षेत्र में अनुपस्थित रहे और अपने कर्तव्य और दायित्वों का उचित ढंग से पालन नहीं किया। जिला निर्वाचन अधिकारी की ओर से उत्तराखंड के आबकारी आयुक्त से आरोपी के निलंबन की संस्तुति की गयी। आरोपी को कर्मचारी आचरण नियमावली, 2022 के तहत दोषी पाते हुए तत्काल प्रभाव से निलंबित कर दिया गया है। आरोपी के खिलाफ अल्मोड़ा कोतवाली में भारतीय दंड प्रक्रिया संहिता की धारा और लोक प्रतिनिधित्व अधिनियम,1951 की सुसंगत धाराओं में अभियोग पंजीकृत किया गया है। आरोपी कर्मचारी आचरण नियमावली, 2022 के तहत दोषी पाया गया है। आरोपी के खिलाफ आनुशासनिक कार्यवाही अमल में लायी जा रही है। कुमांऊ में आदर्श आचार संहिता के दौरान कर्तव्य में लापरवाही बरतने के आरोप में किसी अधिकारी के निलंबन का यह पहला मामला है।

ममता बनर्जी ने केजरीवाल की गिरफ्तारी की निंदा की

कोलकाता,एजेंसी। पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने शुक्रवार को दिल्ली के मुख्यमंत्री एवं आम आदमी पार्टी(आप) के संयोजक अरविंद केजरीवाल की गिरफ्तारी की कड़ी निंदा की। सुश्री बनर्जी ने 'एक्स' पर कहा, मैं लोगों द्वारा चुने गए दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल की गिरफ्तारी की कड़ी निंदा करती हूं। मैं अपना अटूट समर्थन और एकजुटता बढ़ाने के लिए श्री केजरीवाल की पत्नी सुनीता केजरीवाल से व्यक्तिगत रूप से संपर्क किया है। उन्होंने कहा कि यह अपमानजनक है कि निर्वाचित विपक्षी मुख्यमंत्रियों को जानबूझकर निशाना बनाया जा रहा है और गिरफ्तार किया जा रहा है, जबकि केन्द्रीय जांच ब्यूरो (सीबीआई) और प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) जांच के तहत आरोपी व्यक्तियों को अपने कदाचार को जारी रखने की अनुमति दी जा रही है। यह लोकतंत्र पर एक ज़बरदस्त हमला है। मुख्यमंत्री ने कहा, आज, हमारा इंडिया समूह चुनाव आयोग से मिलकर विशेष रूप से चुनाव आर्दश संहिता की अवधि के दौरान विपक्षी नेताओं को जानबूझकर निशाना बनाने और गिरफ्तार करने पर अपनी कड़ी आपत्ति व्यक्त करेगा। गौरतलब है कि श्री केजरीवाल को आबकारी नीति मामले में प्रवर्तन निदेशालय ने गुरुवार रात गिरफ्तार कर लिया।

कर्नाटक उच्च न्यायालय ने सांसद करंदलाजे के खिलाफ आगे जांच पर लगायी रोक

बेंगलुरु,एजेंसी। कर्नाटक उच्च न्यायालय ने सांसद शोभा करंदलाजे के खिलाफ दर्ज एक आपराधिक मामले में आगे की जांच पर शुक्रवार को रोक लगा दी। यह फैसला बेंगलुरु में एक विरोध-प्रदर्शन के दौरान सुश्री करंदलाजे द्वारा दिए गए एक बयान के बाद चुनाव आयोग के उड़न दस्ते की ओर से मामला शुरू किये जाने के बाद आया है, जिसमें रामेश्वरम कैफे विस्फोट के एक संदिग्ध को तमिलनाडु से जोड़ा गया था। सुश्री करंदलाजे ने बाद में अपना बयान वापस ले लिया था लेकिन इसके कारण काफी विवाद हुआ था और लोकप्रतिनिधित्व अधिनियम की विभिन्न धाराओं के तहत उनके खिलाफ प्राथमिकी भी दर्ज की गयी थी। न्यायमूर्ति कृष्णा एस दीक्षित की एकल पीठ ने उत्तरदाताओं को नोटिस जारी किया और कॉटनपेट थाने में दर्ज प्राथमिकी पर आगे की जांच रोक दी। अदालत ने सामाजिक मानदंडों के पतन को रोकने के लिए सार्वजनिक बातचीत में सभ्यता बनाए रखने के महत्व पर जोर देते हुए सुश्री करंदलाजे को अपने भाषण में सावधानी बरतने की सलाह दी।

भूटान के टेंड्रेलथांग, थिम्पू में आयोजित एक भव्य समारोह में लोगों ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का गर्मजोशी से स्वागत किया।

पोनमुडी तमिलनाडु मंत्रिमंडल में दोबारा शामिल, ली मंत्री पद की शपथ

चेन्नई,एजेंसी। तमिलनाडु में द्रविड़ मुनेत्र कषगम (द्रमुक) के वरिष्ठ नेता और पूर्व मंत्री के.पोनमुडी के शुक्रवार को मंत्री के रूप में शपथ लेने के साथ ही राज्य मंत्रिमंडल में उनके दोबारा शामिल होने का मार्ग प्रशस्त हो गया है। उच्चतम न्यायालय द्वारा राज्यपाल आर.एन.रवि के आचरण पर 'गंभीर चिंता' व्यक्त किये जाने के एक दिन बाद यहां राजभवन में आयोजित एक सादा समारोह में पूर्व मंत्री को शपथ दिलाई गयी। पहले राज्यपाल ने श्री पोनमुडी को फिर से मंत्रिमंडल में शामिल करने से इनकार कर दिया था। श्री रवि ने श्री पोनमुडी को पद एवं गोपनीयता की शपथ दिलाई । इसके बाद उन्हें उच्च शिक्षा विभाग का वही पद आवंटित किया गया जो पिछले साल दिसंबर में उन्हें अयोग्य घोषित किये जाने के समय था। मद्रास उच्च न्यायालय ने उन्हें आय से अधिक संपत्ति के मामले में दोषी ठहराया और तीन साल की जेल की सजा सुनाई थी। बाद में उच्चतम न्यायालय ने उनकी दोषसिद्धि और सजा पर रोक लगा दी, जिससे राज्य मंत्रिमंडल में उनकी वापसी का मार्ग प्रशस्त हो गया। शपथ ग्रहण समारोह में मुख्यमंत्री व द्रमुक प्रमुख एम.के.स्टालिन और उनके कैबिनेट सहयोगी भी उपस्थित थे। इस बीच राज्यपाल ने मुख्यमंत्री की सिफारिशों पर दो मंत्रियों के पोर्टफोलियो में कुछ मामूली बदलाव किए। वहीं, श्री पोनमुडी को तकनीकी शिक्षा, इलेक्ट्रॉनिक्स, विज्ञान और प्रौद्योगिकी सहित उच्च शिक्षा के विभाग आवंटित किए। आरपीए अधिनियम के तहत श्री पोनमुडी को अयोग्य घोषित किए जाने के बाद उनके विभागों को पिछड़ा वर्ग मंत्री आर.एस. राजकन्नप्पन को आवंटित किया गया था। जिन्हें अब पिछड़ा वर्ग कल्याण, सर्वाधिक पिछड़ा वर्ग कल्याण और विमुक्त समुदाय कल्याण, खादी और ग्रामोद्योग बोर्ड का मंत्री बनाया गया है। खादी और ग्रामोद्योग बोर्ड को श्री राजकन्नप्पन को अतिरिक्त पोर्टफोलियो के रूप में दिया गया है जो मंत्री आर.गांधी के पास था, जिन्हें अब हथकरघा और कपड़ा, बोधन तथा ग्रामधन मंत्री के रूप में नामित किया गया है।

अलगाववादियों के परिजन खुद को अलगाववाद से अलग कर रहे: भाजपा

श्रीनगर,एजेंसी। भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) ने अलगाववादी नेताओं के परिजनों द्वारा खुद को अलगाववादी विचारधारा से अलग करने के लिए जारी किए गए सार्वजनिक नोटिस को उन लोगों के लिए आंखें खोलने वाला कहा है जो सवाल करते हैं कि जम्मू-कश्मीर में अनुच्छेद 370 हटाए जाने के बाद क्या बदलाव आया है।

जेल में बंद अलगाववादी नेता शब्बीर अहमद शाह की बेटी समा शब्बीर और हुर्रियत के संरक्षक सैयद अली शाह की पोती रुवा शाह ने पिछले कुछ दिनों में कश्मीर के स्थानीय अखबारों में सार्वजनिक नोटिस जारी कर खुद को अलगाववादी विचारधारा से अलग रखने की बात की है। यह पहली बार है जब किसी अलगाववादी नेता के परिवार के किसी सदस्य ने इस तरह का नोटिस जारी किया है। भाजपा के वरिष्ठ नेता अल्ताफ ठाकुर ने लोगों का स्वागत करते हुए कहा कि वास्तव में जम्मू-कश्मीर ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के गतिशील नेतृत्व में बड़े पैमाने पर बदलाव देखा है। श्री ठाकुर ने कहा कि यह खुली स्वीकारोक्ति उन लोगों से संबंधित है जो अलगाववादी एजेंडे और विचारधारा के लिए जाने जाते रहे हैं और जो सवाल करते हैं कि अनुच्छेद 370 के हटने के बाद जम्मू-कश्मीर में क्या बदलाव आया है। उन्होने कहा कि यह पाकिस्तानी एजेंडा की वकालत करने वालों के लिए एक तमाचा है। श्री ठाकुर ने कहा कि यह प्रधानमंत्री मोदी की गारंटी और जम्मू-कश्मीर को एक बार फिर शांति स्थल के रूप समें स्थापित करने के उनके प्रयासों के कारण संभव हुआ है। उन्होंने कहा कि जो लोग अब भी पाकिस्तान का एजेंडा स्थापित करने की कोशिश कर रहे हैं, उन्हें यह समझ लेना चाहिए कि उनकी छलपूर्ण राजनीति को कोई स्वीकार करने वाला नहीं है।

भाजपा ने अयोध्या में श्रीराम मंदिर बनाकर एवं जम्मू-कश्मीर से धारा 370 हटाकर मिटाया कलंक: यादव

मंडला,एजेंसी। मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री डॉ मोहन यादव ने आज कहा कि अयोध्या में मंदिर बनवाकर भगवान श्रीराम की प्राण-प्रतिष्ठा कराकर प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने अयोध्या के कलंक को मिटाने का कार्य किया है। इसी तरह जम्मू-कश्मीर में लगी धारा 370 को हटाकर प्रधानमंत्री ने एक और कलंक को मिटाने का कार्य किया है। डॉ यादव ने यह बात यहां भाजपा कार्यालय में लोकसभा प्रबंध समिति की बैठक को संबोधित करते हुए कही। बैठक को भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष विष्णुदत्त शर्मा और केंद्रीय मंत्री एवं पार्टी प्रत्याशी फग्गन सिंह कुलस्ते ने भी संबोधित किया। मुख्यमंत्री ने कहा कि जनसंघ के जमाने से लेकर अब तक भाजपा ने हमेशा सनातन, संस्कृति, भारतीय लोकतंत्र, सामाजिक समरसता और राष्ट्रवाद को लेकर समाज के हर वर्ग को जोड़ने का काम किया है। पवित्र भाव से हमारे रोम-रोम में भारत को परम वैभव के शिखर पर ले जाने का संकल्प है। भाजपा ईश्वर को साक्षी मानकर भारत के भाग्य को बदलने के लिए काम कर रही है। हमारी तपस्या से भगवान का मन भी द्रवित हुआ है इसलिए देश को वैश्विक नेता के रूप में श्री नरेन्द्र मोदी जैसा नेता मिला है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि भाजपा में कार्यकर्ता ही सर्वोपरि होता है। हम सब कार्यकर्ता ही हैं। कार्यकर्ता हर बूथ पर पार्टी प्रत्याशी बनकर चुनाव में कार्य करें। पार्टी के शीर्ष नेतृत्व व देवतुल्य कार्यकर्ताओं की मेहनत से प्रदेश की सभी 29 लोकसभा सीटों पर ऐतिहासिक बहुमत से चुनाव जीतेंगे। डॉ यादव ने कहा कि मानवता के आधार पर हम देश में सभी को सामर्थ्यवान बनाने का प्रयास करेंगे। मुख्यमंत्री ने कार्यकर्ताओं का आह्वान करते हुए कहा कि हम अपनी ताकत को पहचानकर संकल्प लें और मंडला से पार्टी प्रत्याशी फग्गन सिंह कुलस्ते को पुन: मण्डला लोकसभा से ऐतिहासिक मतों से विजयी बनाएं। मुख्यमंत्री ने कहा कि जिस तरह देश की सेना अपने शौर्य के साथ देश की सेवा में जुटी है, ठीक उसी तरह सेना को शौर्य को याद करते हुए भाजपा का कार्यकर्ता पूरी ताकत और समर्पण के साथ प्रधानमंत्री श्री मोदी को तीसरी बार देश का प्रधानमंत्री बनाने में अपना अमूल्य योगदान प्रदान करें। लोकसभा प्रबंध समिति की बैठक को संबोधित करते हुए प्रदेश अध्यक्ष श्री शर्मा ने कहा कि भाजपा ने प्रधानमंत्री श्री मोदी नेतृत्व में आठवीं बार श्री कुलस्ते पर विश्वास व्यक्त किया है। जिनके ऊपर प्रधानमंत्री का विश्वास हो उनके उपर हमारा विश्वास और जनता का आर्शीवाद होना चाहिए। प्रत्येक बूथ पर 370 वोट बढ़ाकर हम डॉ श्यामा प्रसाद मुखर्जी के बलिदान के प्रति श्रद्धा का भाव प्रकट करें। संगठन का तंत्र हमारी ताकत है, इसलिए भाजपा कार्यकर्ता मंडला लोकसभा क्षेत्र के सभी 2614 बूथ पर विजय का संकल्प लेकर चुनाव कार्य में जुटें। कार्यकर्ता मंडला में हर बूथ को जीतकर पार्टी और प्रत्याशी के विजय को ऐतिहासिक बनाने के लिए कार्य करें। उन्होंने कहा कि हमें हर बूथ पर विजय हासिल करनी है। कार्यकर्ताओं के ऊपर केंद्रीय नेतृत्व का अद्भुत विश्वास और भरोसा है, इसलिए कार्यकर्ताओं की मेहनत और काम के बल पर हम मध्यप्रदेश की 29 सीटों पर चुनाव जीतेंगे। प्रदेश अध्यक्ष श्री शर्मा ने कहा कि गरीब कल्याण और विकास हमारी ताकत है। हमने देश के हर वर्ग के कल्याण और विकास के लिए कार्य किया है। मंडला प्रवास के दौरान गाजीपुर ग्राम में मुख्यमंत्री डॉ यादव एवं प्रदेश अध्यक्ष श्री शर्मा प्रधानमंत्री आवास योजना के हितग्राही श्री धनेश्वर के गृहप्रवेश कार्यक्रम में शामिल हुए। मुख्यमंत्री व प्रदेश अध्यक्ष ने हितग्राही श्री धनेश्वर के निवास पहुंचकर नूतन गृहप्रवेश की बधाई दी व उनके परिजनों के साथ भोजन किया। इस अवसर पर केंद्रीय मंत्री एवं मंडला लोकसभा से भाजपा प्रत्याशी श्री कुलस्ते, प्रदेश सरकार में मंत्री श्रीमती उइके सहित जिला पदाधिकारी साथ रहे।

कांग्रेस, सपा और बसपा के पदाधिकारियों और कार्यकर्ताओं ने भाजपा की सदस्यता ग्रहण की

भोपाल,एजेंसी। मध्यप्रदेश भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के यहां स्थित प्रदेश भाजपा कार्यालय में आयोजित कार्यक्रम में आज कांग्रेस, समाजवादी पार्टी (सपा) और बहुजन समाज पार्टी (बसपा) के अनेक नेताओं ने भाजपा की सदस्यता ग्रहण की। मुख्यमंत्री डॉ मोहन यादव, पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष व सांसद विष्णुदत्त शर्मा, लोकसभा चुनाव प्रदेश प्रभारी डॉ महेन्द्र सिंह, न्यू ज्वॉइनिंग टोली के प्रदेश संयोजक डॉ नरोत्तम मिश्रा, प्रदेश शासन के मंत्री तुलसी सिलावट एवं सतना सांसद गणेश सिंह ने उन्हें पार्टी में शामिल किया।

प्रदेश भाजपा कार्यालय में सतना से कांग्रेस के प्रदेश महामंत्री एवं जिला पंचायत सदस्य देवदत्त सोनी, रीवा से कांग्रेस के पूर्व सांसद देवराज सिंह, नागौद से पूर्व कांग्रेस विधायक यादवेंद्र सिंह, सिरमौर के पूर्व महापौर रेणु शाह, मनगवां से कांग्रेस की पूर्व विधानसभा प्रत्याशी एवं पूर्व जिला पंचायत अध्यक्ष बबीता साकेत, सतना से पूर्व नगर निगम अध्यक्ष सुधीर सिंह तोमर, सतना की पूर्व महापौर एवं नगर निगम अध्यक्ष पुष्कर सिंह, धर्मेंद्र सिंह देउरा, सतना के जिला पंचायत सदस्य संजय सिंह, सिरमौर से बीएसपी विधानसभा प्रत्याशी बी डी पाण्डेय, चित्रकूट से बीएसपी के पूर्व विधानसभा प्रत्याशी रावेन्द्र सिंह पटवारी, अनूपपुर से बीएसपी के पूर्व जिला अध्यक्ष रोहित साहू भाजपा में शामिल हो गए। इसके अलावा जबलपुर के पाटन से पूर्व बीएसपी विधानसभा प्रत्याशी राममनोहर तिवारी, सेवा निवृत्त आईजी राजेश पटारिया, दमोह से मध्यप्रदेश कांग्रेस के प्रदेश महामंत्री हाकमसिंह लोधी, दमोह से मध्यप्रदेश कांग्रेस कमेटी के प्रदेश सचिव विनय दुबे, सांवेर के इंदौर जिले के कार्यवाहक जिला अध्यक्ष बलराम पटेल, जनपद सदस्य संतोष चौधरी, पूर्व कांग्रेस प्रदेश महासचिव विकास यादव विक्की, कांग्रेस आईटी सेल मीडिया प्रभारी पीयूष दुबे, टीआई सागर सक्सेना, सेवा निवृत्त संचालक सुरक्षा विधानसभा अरविंद कुमार रघुवंशी, शहडोल जनपद सदस्य सुरेखा सक्सेना, कांग्रेस मोर्चा की जिला महामंत्री रेणुका शुक्ला ने भाजपा की सदस्यता ग्रहण की। इसी प्रकार भिंड जिले के कांग्रेस जिला महामंत्री आशीर्वाद शर्मा सहित सतना, रीवा, सांवेर, शहडोल, अनुपपूर एवं जबलपुर के 1500 से अधिक कांग्रेस पदाधिकारियों, जनप्रतिनिधियों एवं कार्यकर्ताओं ने भाजपा की विचारधारा और प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के विकास कार्यों से प्रभावित होकर पार्टी की सदस्यता ग्रहण की। मुख्यमंत्री एवं प्रदेश अध्यक्ष ने अंगवस्त्र पहनाकर उनका स्वागत किया। इस मौके पर मुख्यमंत्री डॉ यादव ने भाजपा की सदस्यता ग्रहण करने वाले नेताओं का स्वागत करते हुए कहा कि प्रतिदिन प्रधानमंत्री श्री मोदी के नेतृत्व में भाजपा का परिवार निरंतर बढ़ रहा है। जिस तेजी से भारतीय जनता पार्टी का परिवार बढ रहा है उससे ऐसा लगने लगा है कि कांग्रेस सहित अन्य दलों के पास कुछ नहीं बचेगा। आज पार्टी की सदस्यता ग्रहण करने वाले नेतागणों को पार्टी अधिकार देती है कि वह अपने-अपने क्षेत्र में जाकर बूथ स्तर के लोगों को पार्टी की सदस्यता दिलवाएं। डॉ यादव ने कहा कि भारतीय जनता पार्टी में छोटे से कार्यकर्ता को भी बड़ी जिम्मेदारी मिलती है। मुझे पहले मंत्री फिर मुख्यमंत्री बनाकर पार्टी ने बड़ा मौका दिया है। उन्होंने कहा कि हो सकता है आगामी दिनों में आपको भी पार्टी में बड़ा मौका मिल जाए। मुख्यमंत्री ने कहा कि आयोध्या में भगवान श्री राम का मंदिर बन गया अब सब साथ मिलकर भारत को भव्य बनाएंगे। पार्टी की विचारधारा और प्रधानमंत्री श्री मोदी की नीतियों से प्रभावित होकर आप पार्टी में शामिल हुए। हम सब मिलकर प्रधानमंत्री श्री मोदी के नेतृत्व में काम करेंगे। पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष श्री शर्मा ने कांग्रेस या अन्य दलों से पार्टी की सदस्यता ग्रहण करने वाले पदाधिकारी या कार्यकर्ताओं का पार्टी में स्वागत किया। उन्होंने कहा कि वे आप सभी को विश्वास दिलाते हैं कि आप भाजपा के अभिन्न अंग बन गए हैं। भाजपा सिर्फ एक दल नहीं है, बल्कि ये एक परिवार है और इस परिवार के सदस्य बनने पर आप सभी को बधाई देते हैं। आप लोगों को पार्टी में पूरा मान-सम्मान मिलेगा। सदस्यता ग्रहण के अवसर पर प्रदेश महामंत्री व विधायक भगवानदास सबनानी, इंदौर संभाग प्रभारी राघवेन्द्र गौतम, प्रदेश कार्यालय मंत्री डॉ. राघवेन्द्र शर्मा, प्रदेश मीडिया प्रभारी आशीष अग्रवाल उपस्थित रहे।

ओडिशा में बीजद को झटका, छह बार के लोकसभा सदस्य महताब ने दिया इस्तीफा

भुवनेश्वर,एजेंसी। ओडिशा में सत्तारूढ़ बीजू जनता दल (बीजद) को बड़ा झटका देते हुए कटक से छह बार के लोकसभा सदस्य भर्तृहरि महताब ने शुक्रवार को पार्टी की प्राथमिक सदस्यता से अपना इस्तीफा दे दिया। श्री महताब ने पार्टी अध्यक्ष नवीन पटनायक को भेजे अपने त्यागपत्र में कहा है कि भारी मन से मैं पार्टी की प्राथमिक सदस्यता से इस्तीफा दे रहा हूं, जिसमें मैं इसकी स्थापना के बाद से करीब से जुड़ा हुआ था। अपना इस्तीफा देने के बाद कटक में पत्रकारों को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा कि किसी के धैर्य की भी एक सीमा होती है। उन्हें लगा कि उन्होंने सीमा लांघ दी है और अब उनके लिए पार्टी से जुड़े रहना संभव नहीं है। गौरतलब है किसंसद की बहसों में सराहनीय प्रदर्शन के लिए श्री महताब को 2017 से लगातार चार वर्षों तक %संसद रत्न% पुरस्कार से सम्मानित किया गया है।

श्री महताब ने कहा कि पार्टी छोड़ने का उनका फैसला बहुत कठिन था, लेकिन अब उन्हें बहुत आराम महसूस हो रहा है। कटक लोकसभा सांसद बहुत दुखी थे क्योंकि गुरुवार को एमपी/एमएलए के लिए गठित विशेष अदालत ने तेरह साल पहले 2011 में पुलिस अधिकारियों पर हमले के मामले में उनके खिलाफ कथित हमले के संबंध में आरोप तय किए थे। श्री महताब ने कहा कि सरकार ने 13 साल बाद अपने ही सांसद के खिलाफ आरोप तय किए हैं। सांसद के खिलाफ भारतीय दंड संहिता (आईपीसी) की धारा- 341, 323, 294, 353 और 506 के तहत आरोप तय किए गए हैं। उन्होंने कहा कि बीजद का गठन सामूहिक जिम्मेदारी पर हुआ था,जिसे अब भुला दिया गया अतीत है और यह पार्टी के आंतरिक लोकतंत्र के लिए अच्छा संकेत नहीं है। उन्होंने आरोप लगाया कि बीजद भ्रष्टाचार के खिलाफ लड़ाई के अपने मूल सिद्धांत और विचारधारा से भटक गया है। श्री महताब भी बीजद पार्टी के कामकाज के तरीके से बहुत खुश नहीं थे और उन्होंने पार्टी सुप्रीमो नवीन पटनायक से राज्य के लोगों के हित में पार्टी के कामकाज में सुधार करने का अनुरोध किया था, लेकिन कोई फायदा नहीं हुआ। जब बीजद सांसद से किसी अन्य राजनीतिक दल में शामिल होने की उनकी योजना के बारे में पूछा गया तो उन्होंने यह कहते हुए टाल दिया कि उन्होंने अभी इस बारे में नहीं सोचा है।

मुद्रक, प्रकाशक, स्वामी, सैफुल्लाह सिद्दिकी द्वारा आरडी प्रिंटिंग एंड पब्लिशर्स प्राइवेट लिमिटेड, ए-24, सेक्टर-08, नोएडा (यूपी), से छपवा कर एन-81, बटला हाउस, जामिया नगर पुलिस स्टेशन, जामिया नगर, नई दिल्ली-110025 से प्रकाशित किया। सर्वाधिकार सुरक्षित, किसी भी विवाद की स्थिति में न्यायिक क्षेत्र दिल्ली होगा। (संपादक- सैफुल्लाह सिद्दिकी)